॥ श्रीहरि ॥

॥ गोवर्धनो जयति ॥

‘‘शुक’’
मृदंग विलास

लेखक –

पं. श्री तोताराम शर्मा

80, ब्रज विलास, बाँकेबिहारी कालौनी, रमणरेती रोड

श्रीधाम वृन्दावन, जिला मथुरा (उ.प्र.)

प्रकाशक -

ब्रज विलास प्रकाशन
80, ब्रज विलास, बाँकेबिहारी कालौनी, रमणरेती रोड
श्रीधाम वृन्दावन, जिला मथुरा (उ.प्र.)
मो. 9319794417, 9897226464

प्राप्ति स्थल :

न्यू ईरा मॉडर्न पब्लिक स्कूल
ब्रज संगीत परिषद्
80, ब्रज विलास, बाँकेबिहारी कालौनी, रमणरेती रोड
श्रीधाम वृन्दावन, जिला मथुरा (उ.प्र.)

दिल्ली -

पं. राधेश्याम शर्मा, पं. हरिमोहन शर्मा
मो. 9818402229

वृन्दावन -

पं. हरेकृष्ण शर्मा, पं. भगवान दास शर्मा
मो. 9897226464

प्रथम संस्करण -
नव संवत्सर 2076
(सर्वाधिकार सुरक्षित)

मुद्रक -
चौधरी प्रिंटिंग प्रेस, वृन्दावन
मो. 9837787802

॥ श्रीकृष्णाय नमः॥

भूमिका

हम भारतवासियों को यह महान गौरव है कि हमारी भारत भूमि पर अनेकों महान ऋषि-मुनियों का जन्म हुआ। उन्हीं महापुरुषों की परम्परागत चली आ रही विद्याओं और अनेक शास्त्र-ग्रन्थों से भारत के मानवीय जीवन को समय-समय पर बोध कराने के लिये ज्ञान रूपी चेतन शक्ति प्राप्त होती रही।

जगत्पिता श्रीब्रह्माजी द्वारा जो वेद वाणी प्रगट हुई वह वेद वाणी ऐसी अद्भुत अलौकिक परोक्ष वाणी है जिसके अनेकों भावार्थ निकलना स्वाभाविक है, इसी वेद वाणी को हमारे ऋषि-मुनियों ने अध्ययन करके अनेक पुराण और शास्त्रों की रचना की। जैसे कि सांख्य शास्त्र के आचार्य श्री कपिलदेव जी, योगशास्त्र के आचार्य श्री पतंजलि मुनि, वैशेषिक शास्त्र के आचार्य श्री कणाद ऋषि, न्याय शास्त्र के आचार्य महर्षि गौतम मुनि, पूर्व मीमांसा के आचार्य जैमिनी ऋषि और उत्तर मीमांसा के आचार्य भगवान वेद व्यास, इन्होंने ही अठारह पुराण और महाभारत आदि विशाल ग्रन्थ की रचना की।

इन्हीं श्री व्यास भगवान ने देखा कि लोगों की आयु, शक्ति, बुद्धि कम होने लगी तब चारों वेदों को और सरल करने के लिये चार संहिता बनाई जोकि अपने चार शिष्यो को पढ़ाई जिसमें सामवेद संगीतमय है उसकी शिक्षा जैमिनी ऋषि को दी, जैमिनी ऋषि ने उसके विभाग करके अपने शिष्यों को पढ़ाया, इसी प्रकार शिष्य परम्परा से कालान्तर में चारों वेदों की अनेक शाखाओं की रचना हुई।

सामवेद का उपवेद गान्धर्व वेद है, संगीत शास्त्र का विविध रूप विस्तार इसी के आधार पर समय-समय पर ऋषि मुनि विद्वानों द्वारा विकसित हुआ, इन्हीं महानुभावों का संगीत विषयक ज्ञान आज हमें अनेक ग्रन्थों द्वारा देखने और सुनने को मिल रहा है। कुछ ग्रन्थ और ग्रन्थकारों के नाम हैं।

अहोबल कृत	–	संगीत पारिजात
हृदय नारायण देव कृत	–	हृदय कौतुक और हृदय प्रकाश
सौमनाथ का	–	राग विवोध
दामोदर का	–	संगीत दर्पण
लोचन कृत	–	राग तरंगणि
सारंग देव कृत	–	संगीत रत्नाकर
कल्लीनाथ	–	संगीत रत्नाकर टीका
नारद कृत	–	संगीत मकरंद
भरत का	–	नाटय शास्त्र
मतंग कृत	–	ब्रह्मदेशी संगीत

19वीं शताब्दी के दो महान संगीतज्ञ पं. विष्णुनारायण भारतखण्डे और विष्णु दिगम्बर पलुष्कर ने तो अपने अकथ प्रयास से ग्रन्थ रचनाकार संगीत को सुगम रीत से जन साधारण तक पहुँचाया। संगीत में स्वर और लय की प्रधानता के साथ संस्कृत एवं भाषा साहित्य का अत्याधिक प्रयोग है। संगीत और साहित्य से उदासीन मानव को पशुवत् संज्ञा देते हुये 'संगीत महोदधो' ग्रन्थकार कहते है।

संगीत साहित्य रसान भिज्ञ
ख्यातः पशुः पुच्छ विषाण हीनः।
चरित्य सो किं तृण मत्त नोवा
परं पशूना मुप वास हेतुः॥

(संगीत महोदधो)

❐

॥ श्रीहरि॥
॥ गोवर्धनो जयति॥

शुक मृदंग विलास

मेरी विनय

प्रत्येक कार्य की उपलब्धि के लिये कारन बनता है। मैं तो अपनी सोच समझ के अनुसार यही मानता हूँ कि इस लघु पुस्तक 'शुक मृदंग विलास' के लेखन कार्य में श्रीहरि प्रेरणा ही कारण है। उस जगतपिता परमेश्वर की लीला सृष्टि रचना में जो भी कार्य देखने सुनने में आ रहा है, उन्हीं की प्रेरणा शक्ति का कार्य है। मनुष्य तो केवल निमित्त मात्र होता है।

बोले विहसि महेश तब ज्ञानी मूढ़ न कोय।
जो जस रघुपति करहि जब सो तस तिहि छिन होय॥ (रा.बा.)

करी गोपाल की सब होय।
जो अपनौ पुरुषारथ मानत अति झूठहौ है सोय॥ (सूरदास)

सौभाग्य से मुझे मृदंग वादन की शिक्षा जो भी गुरुजनौ से प्राप्त हुई उसको अपनी बुद्धि से जैसा जितना समझने की शक्ति रही, उसी के अनुसार बोल परनें आदि की रचना करने का प्रयास इस पुस्तक में किया है। भगवान की लीला सृष्टि में जो भी विद्या का सृजन विस्तार हुआ है कालान्तर में प्रकृति के गुणों से प्रेरित होकर मनुष्य ही उस विद्या के विस्तार का हेतु माना जाता है। अल्प बुद्धि ज्ञान के संयोग से रचित परन आदि रचनाओं में जो भी गलती हो उसके लिये मैं क्षमा चाहता हूँ। मैंने तो अपनी सोच समझ के अनुसार अच्छा ही जाना है। श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है –

निज कवित्त किहि लाग न नीका।
सरस होय अथवा अति फीका॥

यह बात स्वाभाविक है कि अपनी कृति सभी को अच्छी लगती है, ऐसा जानकर मैं करबद्ध विनय करता हूँ।

❐

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
श्रीगुरु कृपा	7
संगीत शास्त्र	10
संगीत रचना काल	14
मृदंग वाद्य के नाम, रूप का कथन	17
मृदंग का अध्यात्म स्वरूप	20
मृदंग वाद्य में प्रकृति गुणों की अवधारणा	22
मृदंग वाद्य की रचना	24
ताल प्रकर्ण	28

मृदंग वादन में 'घराना' प्रवर्तक परिचय -

कुदऊँ सिंह घराना	31
नानापानसे घराना	37
नाथद्वारा घराना	40
सतघरा घराना, मथुरा	46

मृदंग व पखाबज वादन-बोल परन

चौताल	55
धमार	83
झपताल	97

॥ श्रीहरि ॥

॥ श्रीगिर्राजधरण जयति ॥

श्रीगुरु कृपा

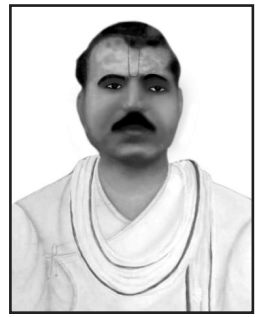

मैं तो अपनी अल्प बुद्धि से यही समझता हूँ कि जिस किसी व्यक्ति विशेष से शास्त्रज्ञान तथा सद्गुणों का बोध हो वह गुरु ही माना जाता है। श्री दत्तात्रेय ने चौबीस गुरुओं का आश्रय लेकर और उनके गुणों को ग्रहण कर मुक्त भाव से स्वच्छन्द भ्रमण करते रहे।

भगवान ने भागवत् के दशम् स्कन्ध के 80 अध्याय में तीन गुरु बताये हैं। इस शरीर का कारण जन्म दाता पिता ही प्रथम गुरु है। पिता के संरक्षण एवं देख रेख में पुत्र को विद्या और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

दूसरा गुरु उपनयन संस्कार करके सत्कर्मों की शिक्षा देने वाला गुरु है, तीसरा गुरु ज्ञानोपदेश करके परमात्मा की प्राप्ति कराने वाला होता है। अब हमें पिता गुरु के सम्बन्ध में कुछ संस्मरण देना आवश्यक है। मेरे पिता गुरु श्री लक्ष्मन स्वामी मथुरा जनपद में अपने समय के जाने माने संगीतज्ञ थे, आप गायन, वादन दोनों कला में कुशल थे। गायन से सारंगी वादन विशेष लोकप्रिय था। आपके सारंगी वादन में मधुरता मिठास का ऐसा मिश्रण था जिसकी प्रशंसा अच्छे संगीत कलाकार करते। आपके गायन में ध्रुवपद अंग की प्रधानता थी। बृज की संगीत विधा हवेली संगीत और समाज संगीत दोनों विधाओं से आपका सम्बन्ध था। आपने रासलीला के मंचन से विशेष ख्याति प्राप्त की। बृज के संत भक्तों की पदावली और अन्य कवियों का भाषा साहित्य भी बहुत याद एवं कंठस्थ था किन्तु संगीत की विद्वत् समाज में आपकी सारंगी वादन की विशेष प्रशंसा और आदर था।

आपके साथ रासलीला मंच पर मृदंग वादन की संगत करने के लिये कई मृदंग वादकों के नाम लिये जाते है। सम्वत् 2011 सन् 1955 में पिताजी ने रासलीला मंच पर संगत हेतु कुशल मृदंग वादक श्री मुरलीधर जी को अपने रासमण्डल में रख लिया। श्री मुरलीधरजी मथुरा जनपद में करैहला ग्राम के निवासी रहे। आपने बनारस जाकर कुदौसिंह घराने के श्री मन्नूजी मृदंगाचार्य से पाँच साल मृदंग वादन की शिक्षा प्राप्त की। आप संगत करने में कुशल वादक थे। मेरे पिताजी ने आपकी गुण गरिमा समझकर मुझे मृदंग वादन की शिक्षा श्रीमुरलीधर गुरुजी से प्रारंभ करा दी। उस समय मेरी उम्र 14-15 साल की थी। चार साल मैंने अपने मनोयोग से आप श्रीमुरलीधर गुरुजी से शिक्षा प्राप्त की।

इसके पश्चात् मैं रासलीला मंच पर पिताजी के साथ मृदंग वादन की संगत करने लगा। संगत करने का बोध मुझे पिताजी के साथ हुआ। पिताजी के स्वर्ग सिधारने के पश्चात् मुझे संरक्षक की आवश्यकता और मृदंग वादन को संबृद्ध और सुदृढ़ बनाने की अभिलाषा थी। इस कारण मैंने मुरलीधर गुरुजी को अपने पास रख लिया। आपकी वयोवृद्ध अवस्था थी कोई संतान भी नहीं थी। परिवारजनों से आप उदासीन रहते इस कारण आप मेरे पास रहने लगे। मुझे पुत्रवत् प्यार करते। मैंने मृदंग वादन सम्बन्धी जिज्ञासा आपके सामने प्रगट की। आपने मेरे मनोभाव जानकर मुझे अपने मित्र श्री पुरुषोत्तम दास मृदंगाचार्य जी की शरण में कर दिया। श्रीपुरुषोत्तम दास गुरुजी ने मुझे मृदंग वादन शिक्षा की स्वीकृति देकर मुझे अपना लिया। श्रीमुरलीधर गुरुजी आपके मृदंग वादन की बहुत प्रशंसा किया करते। ऐसे प्रशंसनीय गुरुदेव को प्राप्त कर मैं अपना परम सौभाग्य मानता हूँ। मृदंग वादन के मेरे दूसरे गुरु श्रीपुरुषोत्तमदास पदम्श्री के चरणों में बार-बार प्रणाम करता हूँ।

यद्यपि मुझे गुरुजी के पास स्थाई रूप से रहने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ क्योंकि घर ग्रहस्थ आदि का पोषण भी परम आवश्यक था। इस कारण

मैं समय पाकर दिल्ली जाता। दो-तीन दिन रहकर शिक्षा ग्रहण करता। आपका सानिध्य प्राप्त करके मुझे बहुत संतुष्टि प्राप्त हुई। मैंने जाना कि भारत के प्रसिद्ध मृदंग वादकों में आपकी एक विशेष पहचान थी जोकि मृदंग के शब्दों को विविध प्रकार की छन्द चाल में विस्तार करना जैसे कि तबले में एक कायदे को विविध रूप से पल्टे बजाये जाते है। आपने इसी प्रकार मृदंग वादन में एक नवीनता जाग्रत की। 'धिननक' में छन्द विस्तार करना तो आपकी वादन शैली की प्रमुख विशेषता है।

आपने कुछ परनों की भी रचना की है। उनमें एक परन ऐसी है जिसे सुनकर आपका वैदुष्य ज्ञात होता है। वह परन चौमुखा नाम से बोली जाती है जोकि चारताल, धमार, झपताल और तीन ताल में बजाई जाती है इस परन का रूप बड़े आकार में होते हुये चारों तालों के सम स्थान पर 'धा' का प्रयोग होता है। इस प्रकार की परन रचनाओं की क्रिया से आपकी गुण गरिमा का बोध होता है। आपके नाथद्वारा घराने की वादन शैली की पुस्तक '**मृदंग सागर**' है। इसका लेखन आपके पिताश्री घनश्यामलाल पखावजी ने किया। आपके मृदंग वादन में '**मृदंग सागर**' पुस्तक की गरिमा का भान होता है। श्रोतागण आपके वैदुष्य से बहुत ही प्रभावित होते आपका सोलौ वादन और संगत करना दोनों ही बड़ा प्रभाव पूर्ण था। आप स्वभाव से सीधे सच्चे निराभिमानी रहे। भारत के प्रसिद्ध मृदंग वादकों में आपका नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। आपके मृदंग वादन गम्भीर ज्ञान को मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार जैसा जितना समझ पाया उसी को मैं बहुत समझकर मृदंग वादन शिक्षा के द्वितीय गुरु के श्रीचरणों में बार-बार प्रणाम करता हूँ।

बंदउँ गुरु पद पदम परागा
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती
सुमरत दिव्य दृष्टि हियँ होती।

रा.च.मा.

❐

॥ श्रीनाथो जयति ॥

संगीत शास्त्र

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते।

(संगीत रत्नाकर)

गीत, वाद्य और नृत्य इन तीनों को मिलाकर संगीत कहा जाता है, संगीत की ये तीनों विधा स्वतन्त्र होते हुये भी एक दूसरे के आश्रित कही जाती हैं।

संगीत के तीनों अक्षरों का तात्पर्य यह है स शब्द से साज अथवा वाद्य, ग अक्षर से गीत और त अक्षर से ततथेइ नृत्य, इन तीनों अक्षरों से गायन, वादन और नृत्य के स्वरूप से संगीत जाना जाता है। यह संगीत विविद्य नाम रूपों से देखा सुना जाता है जैसे कि उत्तर भारतीय संगीत, दक्षिण भारतीय संगीत, पाश्चात्य संगीत, सुगम संगीत, लोक संगीत, चित्रपट संगीत, हवेली संगीत और समाज संगीत आदि और भी नामों से देखा सुना जाता है।

कालान्तर में संगीत के विद्वानों ने अपने ग्रन्थों में संगीत के विविध रूपों का लेखन किया है। थोड़े में कहकर और भी संगीत विद्वानों के लेखन से संगीत शास्त्र का विस्तार रूप ज्ञात होता है। संगीत दर्पण ग्रन्थ के लेख ने संगीत को दो भागों में विभाजित किया है।

मार्गी देशी विभागेन संगीतं द्वविधं मतम्।
स्वर्गे मार्गा श्रितं देस्या श्रितं भूतल रंजकम्॥

प्रथम 'मार्गी संगीत' स्वर्गवासी देवताओं का संगीत, दूसरा देशी संगीत है जो भूतल पर देखने सुनने में आ रहा है। देवता और मानव की कार्य विधियों में बहुत अंतर होता है, इस कारण मनुष्य को मार्गी संगीत के विषय में कहना बहुत दुर्लभ है। बिना देखे सुने मार्गी संगीत के विषय में कहना केवल कल्पना का विलास है। परन्तु यहाँ पर यह कहना और समझना भी आवश्यक है कि देशी संगीत मार्गी संगीत का ही अंग है तथा रूप है।

देश, काल, पात्र, स्थान और क्रिया भेद से रूपान्तर होना प्रकृति का स्वाभाविक नियम है। जैसे कि कालान्तर में तबला वाद्य मृदंग का ही दूसरा रूप है इसी प्रकार सितार को भी वीणा का उभय रूप समझा जाय।

काल, क्रिया, पात्र भेद से जो दोनों संगीत में अन्तराय कहा है, उसी प्रकार दोनों के फलादेश में भी अन्तर कहा जाता है, उदाहरण में भागवत के चौथे स्कन्ध 14 अध्याय में कहा है।

धर्म आचरितः पुंसां वाङ्मनः कायबुद्धिभिः।
लोकान् विशोकान् वितरत्य थानन् त्यम संगिनाम्॥

मनुष्य मन वाणी शरीर और बुद्धि से धर्म का आचरण करे तो उसे स्वर्गादि शोक रहित लोकों की प्राप्ति होती है। यदि उसका निष्काम भाव हो तो वही धर्म उसे अनन्त मोक्ष पद को प्राप्त करा देता है।

कालान्तर में ग्रन्थकारों ने जो संगीत के विषय में कहा है वह देशी संगीत का ही अपने अपने मतों से कथन किया है। समयानुसार परिवर्तन होने के कारण देशी संगीत को भूलोक का मनोरंजन कहा है। संगीत की परिवर्तन गति को देखकर आगे कुछ मतों की चर्चा करना आवश्यक है।

शास्त्रीय संगीत के प्राचीन ग्रन्थों में राग, रागनी, पुत्र और पुत्रवधू के वर्गीकरण का उल्लेख मिलता है जिसमें चार मतों की प्रधानता है। प्रथम सोमेश्वर मत, दूसरा भरत मत, तीसरा कल्लीनाथ मत, चौथा हनुमत मत। सोमेश्वर और कल्लीनाथ मत में 6 जनक राग और 36 रागनी हैं इन दोनों मतों में रागनियों के नामों में भिन्नता है, जनक राग समान है। भरत मत और हनुमत मत में 6 जनक राग के नामों में अन्तराय न होते हुये 30 रागनियों के नाम हैं प्रत्येक राग की पाँच रागनियाँ जानी जाती है। इन दोनों मतों में भी रागनियों के नामों की भिन्नता देखने में आती है। भरत और हनुमत से जनक रागों के नाम इस प्रकार है।

भैरवो, मालकोशश्च, हिन्डोलो, दीपकस्तथा।
श्री रागो, मेघ रागश्च, षडेते पुरुषा स्मृताः॥

(राग कल्पद्रुम)

अन्य मत से जनक रागों के नाम

बसंतो, वृहन्नाटश्च, मल्लारो, मालवस्तथा।
प्रदीपाः, कौशकः षडेते पुरुषा हयाः॥

(राग कल्पद्रुम)

संगीत शास्त्रकारों द्वारा विभिन्न मतों में जो राग-रागनी पुत्र और पुत्रवधु के ध्यान आदि का जो उल्लेख है, इसके लिये 'राग कल्पद्रुम' ग्रन्थ देखना परम आवश्यक है। इस ग्रन्थ में संगीत के तीनों विषय गायन, वादन और नृत्य का संस्कृत भाषा में उल्लेख है। इसी सम्बन्ध में हमें भाषा के कुछ दोहा 'राग रत्नाकर' ग्रन्थ से प्राप्त हुये हैं जोकि हनुमत के सिद्धान्त से 6 राग और 30 रागनियों के नाम हैं।

भैरो की धुनि भैरवी बंगाली बैरार।
मदमादौ अरु सिन्धवी पाँचौ वृहणीनार॥

तोडी गौरी गुनकली खम्मा यह पहचान।
और कुकभ को कहत हैं मालकोश की जान॥

रामकली पटमंजरी और कहै देवसाख।
ये नारी हिन्डोल की ललित विलावल राख॥

देशी नट और कान्हरौ केदारौ कामोद।
दीपक की प्यारी सवै महा प्रेम परमोद॥

धनाश्री आसावरी मारु बोहट बसंत।
श्रीराग की रागनी मालश्री है अन्त॥

भूपाली और गूजरी देशकार मल्हार।
मेघ राग की रागनी और देशी वरनार॥

इन्हीं 6 जनक रागों के स्वर समूह का गुण प्रभाव तीन दोहा में कथन करते हैं।

भैरौ स्वर स्वर साधते कोल्हू चलै सु धाय।
मालकोश जब जानिये पाहन पिघल बहाय॥

चलै हिडोलौ आपते राग सुनै हिन्डोल।
बरसै नवघन जलद अति मेघ राग के बोल॥

श्रीराग के स्वर सुने सूखौ बृक्ष हराय।
दीपक दीयौ बरि उठै जो कोई जानै गाय॥

थोड़े ही शब्दों में कहकर हमें विद्वानों के विविध मतों से संगीत का बृहद रूप विस्तार ज्ञात होता है। तानसेन जैसे संगीतज्ञ ने अपने को संगीत सागर से एक बूंद प्राप्त होने को एक पद्य में कहा है -

नारद मुनि नाद विद्या प्रभु प्रताप पाई।
दीन जानि दया करी त्रिभुअन पति राई॥
प्रथम औंकार लियो ता पाछै गान कियौ।
रीझ मोहे नारी नर बेदन में गाई॥
सप्त स्वर तीन ग्राम उनचास कोटि तान।
इकईस मूर्छना छै राग छाई॥
नाद कौ प्रवाह कहा गुनीजन जानै भेद।
सागर ज्यौ एक बूंद तानसेन पाई॥

'संगीत भाष्य' ग्रन्थ के लेखक संगीत की जयध्वनि करते हुये कहते है -

सुखिन सुख निधानं दुःखि तानां विनोद।
श्रवण हृदय हारी मन्मथस्याग्र दूतः॥
अति चतुर सुगंम्यो वल्लभ कामनी नां।
जयत जयत नाद पंचम श्चोप वेदः॥

❐

॥ श्रीनवनीत लाल जयति ॥

संगीत रचना काल

श्रीमद्भागवत के तीसरे स्कन्ध में ब्रह्माजी से सृष्टि रचना का प्रसंग है। ब्रह्माजी ने अपने चारों मुख से चार वेदों की रचना की जिनके नाम हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इसी प्रकार पूर्वादि मुख से चार उप वेदों की रचना की।

आयुर्वेदं धनुर्वेदं गान्धर्व वेद मात्मनः।
स्थापत्यं च सृजद् बेदं क्रमात्पूर्वादिभिर्मुखेः॥

(भागवत)

उपवेद के नाम है - आयुर्वेद (चिकित्सा शास्त्र), धनुर्वेद (शस्त्र विद्या), गान्धर्व वेद (संगीत शास्त्र), स्थापत्य वेद (शिल्प विद्या) इस प्रमाण से सिद्ध होता है कि संगीत की उत्पत्ति सृष्टि के आदि काल से जानी जाती है। अतः ब्रह्माजी के अंग से धर्म के चार पाद, चार आश्रम और छन्द आदि की रचना हुई।

ब्रह्माजी की इन्द्रियों को उष्म वर्ण बल को अन्तःस्थ कहते हैं तथा उनकी क्रीडा विहार से षडज, रिषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवद और निषाद सात स्वरों की उत्पत्ति हुई।

स्वराः सप्त विहारेण भवन्ति स्म प्रजापते।

(भागवत)

ब्रह्माजी को शब्द ब्रह्म स्वरूप कहा है, उनके ये सप्त नाद स्वर सर्वभूत प्राणियों में व्याप्त हैं। पशु-पक्षियों की आवाज में भी सात स्वरों की ध्वनि का बोध है। ऐसा नारद पुराण से ज्ञात होता है। मोर षडज स्वर में बोलता है, गाय रिषभ स्वर में रंभाती है, भेड़ और बकरी गान्धार स्वर में बोलती हैं, क्रौंच (कुरर) पक्षी मध्यम स्वर में बोलता है। बसंत ऋतु में कोयल पंचम स्वर में बोलती है, घोड़ा धैवद में हिनहिनाता है और हाथी निषाद स्वर में

चिंघाड़ता है। इसी प्रकार मनुष्य शरीर के अन्दर सात स्वरों के स्थान का कथन नारद पुराण में किया है। षड्ज स्वर कंठ से, ऋषभ स्वर मस्तक से, गान्धार मुख सहित नासिका से, मध्यम स्वर हृदय से, पंचम स्वर छाती, सिर और कंठ से, धैवद ललाट से और निषाद स्वर सम्पूर्ण संधियों से प्रगट होना कहा जाता है।

संगीत के विषय में इन्हीं धारणाओं से पृथक तानसेन और बैजू बाबरा सम्वाद के कुछ छन्द पिता गुरु की हस्तलिखित पुस्तक से प्राप्त हुये है। इन कवित्त छन्दों में सप्त स्वर और जनक रागों का कथन किया है।

प्रश्न -

ऐजू षडज कहाँ ते रिषभ कहाँ ते
कहाँ ते उपज्यौ उपज्यौ गान्धार सार।
मध्यम कहाँ ते पंचम कहाँ ते
कहाँ ते उपज्यौ धैवद निषाद नार॥
आरोही कहाँ ते अवरोही कहाँ ते
कहाँ ते उपज्यौ संगीत सार।
कहै मियाँ तानसेन सुनौ बैजू बावरे
जानै को याकौ विस्तार॥

उत्तर -

षडज नाभिते रिषभ हृदय ते
गरेते उपज्यों गान्धार सार।
मुख सौ मध्यम पंचम नासिका सों
धैवद निषाद ब्रह्माण्ड सार॥
आरोही सिंह्य सों वृषण सों अवरोही
सप्त स्वर मूर्छना गीत संगीत सार।
कहै बैजू बावरे सुनौ मियाँ तान सैन
महादेव नारद नै, प्रथम कहयौ अलंकार॥

प्रश्न –

कहौ जू कौन स्वर मालकोश
कौन स्वर उपज्यौ हिन्डोल बोल॥
कौन दीपक कौन स्वर श्रीराग।
कौन स्वर उपज्यों मेघराग बोल॥
सप्त स्वर छै राग कौन बिध बनत है
कैसे कि जानियै इनकी तोल।
कहैं मियाँ तान सैंन सुनौ बैजू बावरे
सोई विद्या धर जो जानै याकौ मोल॥

उत्तर –

षडज स्वर भैरों रिषभ स्वर मालकोस।
उपज्यौ गन्धार हिन्डोल बोल॥
मध्यम सों दीपक पंचम सौ श्रीराग।
धैवद निषाद मिल मेघ बोल॥
सप्त स्वर छै राग याही विध बनत हैं
जानत हौ भरत संगीत प्रमान तोल।
कहै बैजू बावरे सुनों मियाँ तानसैन
नाद स्वर भेद ब्रह्मा शंकर याकौ जानै मोल॥

कहने का तात्पर्य यह है कि सृष्टि के आदिकाल से ही ब्रह्माजी की वेद वाणी से संगीत की उत्पत्ति हुई। समयानुसार ऋषि, मुनि, विद्वानों ने अपने मतानुसार इसे विकसित किया। शास्त्र पुराण आदि भी वेद वाणी के ही उप स्वरूप है। इस वेद वाणी के वृहद रूप को भगवान ही जानते हैं। भागवत के एकादश स्कन्ध में भगवान उद्धव से कहते हैं – यह वेद वाणी ऐसी अलौकिक दिव्य वाणी है इसके अनेकों अर्थ निकलना स्वाभाविक है। इसी कारण संगीत के विद्वानों ने अपनी प्रकृति, स्वभाव, गुणों से प्रेरित होकर विविध मतों से संगीत की रचना कर संगीत शास्त्र का प्रकाशन किया।

❐

॥ श्रीमदनमोहन जयति॥

मृदंग वाद्य के नाम, रूप का कथन

प्राचीन ताल वाद्यों में प्रथम स्थान मृदंग वाद्य का माना जाता है। 'संगीत रत्नाकर' ग्रन्थ में चार वाद्यों का लेखन किया है।

तत, आनद्ध, सुषिर, घना नीत चतुर्विधं।

इसी प्रकार भरत ने अपने 'नाट्य शास्त्र' में भी चार वाद्यों का कथन किया है।

ततं चैवा आनद्धं घनं सुषिर मे वच।

चार वाद्यों को किन नामों से संकेत करते हैं।

ततं वीणा दिकं वाद्य आनद्ध मुरजा दिकम्।
वंशादिकं सुषिरं कास्य ताला दिकं घनम्॥

(संगीत रत्नाकार)

तत नाम में 'वीणा' आनद्ध नाम से मृदंग (मुरज), सुषिर नाम से वंशी, और झाँझ, मजीरा आदि को घन नाम से बताया है। गुरुजनों से प्राप्त एक दोहा से इन चारों वाद्यों का परिचय जाना जाता है।

दोहा –

बाजे साढ़े तीन हैं गुनि जन करत बखान।
बीन, पखाबज, बाँसुरी अर्ध मजीरा जान॥

कहने का तात्पर्य है कि सारे वाद्यों का सृजन कालान्तर में इन्हीं चार वाद्यों से हुआ, जैसे कि वीणा से सितार, सरोद आदि, चमड़े से मढ़े हुये मृदंग, तबला, ढोलक आदि, मुँह से बजाये जाने वाले बाँसुरी, शहनाई आदि, झाँझ, मझीरा आदि यंत्र को आधा कहने का भाव है कि इसमें विविध स्वर के अभाव में केवल ताल का संकेत करता है। अब हम चारों वाद्यों में से आबद्ध मृदंग वाद्य की चर्चा करने का प्रयास करते है। इसी पर प्रमुख रूप से कहना है।

इस मृदंग तथा पखाबज वाद्य के आदि काल का समय निश्चित करना तो असम्भव है यह किस युग, कल्प, काल में विकसित हुआ किन्तु इतना अवश्य ग्रन्थों से जाना जाता है कि कालान्तर में विविध नामों से इसका कथन है। श्रीमद्भागवत गीता आदि अनेक ग्रन्थों में तथा संत भक्तों के भाषा पद्य ग्रन्थों में इसका प्रमुख रूप से उल्लेख है। संक्षिप्त में नामों का परिचय इस प्रकार है –

बुद्ध और जैन धर्म के ग्रन्थों में मृदंग को मुइंग की संज्ञा दी है। भरत ने अपने नाट्य शास्त्र में इस प्रकार उल्लेख किया है, मृदंग वाद्य को ''पौष्कर' नाम की संज्ञा देकर कहा है कि यह पहले मिट्टी का होने से मृदंग कहते थे बाद में लकड़ी रूप में होने लगा। भरत के काल में मृदंग के आकार रूप में तीन वाद्य होते जिन्हें आलिग्य, अंकिक और उर्ध्वक नाम से बोला जाता। भरत ने इन तीनों को 'त्रईपौस्कर' नाम की संज्ञा देकर सम्बोधित किया। भरत ने इन तीनों नामों के आकार का उल्लेख करते हुये कहा कि इन तीनों को भिन्न-भिन्न स्वरों में मिलाया जाता, और इन तीनों का वादन एक व्यक्ति करता जिससे गायक को इच्छानुसार स्वर मिलता, अंकिक बीच में आढ़ा रखकर बजाया जाता। बायीं तरफ आलिग्य और दायीं तरफ उर्ध्वक को बजाने का क्रम था। 'आलिग्य' गौ के पुच्छ आकार में होता 'अंकिक' जौ के आकार में 'उर्ध्वक' हल्दी के आकार में होता। समयानुसार अंकिक नाम वाला आकार को मृदंग नाम से कहने लगे। शास्त्रीय संगीत में उपयोगी होने से यह वाद्य प्रचार में आने लगा, शेष दो भाग लोक संगीत में उपयोगी हुये। गीत के प्रथम अध्याय 13 वें श्लोक मृदंग के उपनाम का कथन है।

ततः शंखाश्च भेर्यश्च पणवानक गौमुखाः गौ के मुखाकृति आकार में होने से मृदंग को 'गौ मुखा' नाम से कहा है। मृदंग वाद्य की प्रमाणिकता शास्त्र ग्रन्थ और गुरुजनों के द्वारा बहुत प्राचीन देखी जाती है। सृष्टि का आदि काल से परिवर्तन होना 'प्रकृति' का स्वाभाविक नियम है।

मृदंग वाद्य के नाम रूप की प्रमाणिकता नीचे दिये हुये छन्द से भी जानी जाती है।

(कवित्त)

मर्दल, मृदंग, मुरज, मुइअंग गौमुखा।
पक्षबाज, पखाबज, अंकिक प्रमान्यो है॥
जवाकार, पुच्छकार हरद आकार जाकौ।
उमा शिव संयुक्त नाद ब्रह्म गान्यों है॥
शुक कवि चार आठ षौडष बत्तीस अंग।
गौरा सुत गणपति नै गोद मोद मान्यौ है।
रिषी मुनि आदि नै पुरानन प्रमान्यौ
एसौ वाद्य है मृदंग जाकों विदुष बखान्यौ है॥

इस छन्द में ग्रन्थों के अनुसार मृदंग के नाम, रूप, अंग, नाद और वादक का परिचय प्राप्त कराने का लेखन है। इस छन्द में मृदंग के नाम, रूप, नाद और वादक का परिचय स्पष्ट है। अंगों को प्रगट रूप से कहना है। गजरा, किनारी, मैदान और स्याही ये चार अंग हुये, गजरा में सोलह विभागों को षौडष अंग कहा है, आठ गट्टे और प्रत्येक गट्टे पर चार डोरी को बत्तीसी अंग माना है।

❐

॥ श्रीमथुरेश जयति ॥

मृदंग का अध्यात्म स्वरूप

मृदंग वाद्य के अध्यात्म एवं देव स्वरूप का लेखन शास्त्रकारों ने ग्रन्थों में किया है। प्रकृति रचना में दो रूप है स्थूल और सूक्ष्म। इसी प्रकार मृदंग वाद्य के दो स्वरूप है, देखने में लकड़ी के रूप में चमड़े से मढ़ा हुआ है, जोकि स्थूल रूप कहलाता है। सूक्ष्म स्वरूप देखने में नहीं आता वही देव रूप है।

'संगीत मकरंद' ग्रन्थ के रचियता नारद ने मृदंग के आध्यात्मिक रूप का जैसा वर्णन किया है ऐसा वर्णन आनद्ध वाद्यों में और किसी वाद्य का देखने को नहीं मिलता।

दक्षिणांगे स्थितो रुद्र उमा वामे प्रतिष्ठिता।
शिव शक्ति मयो नादो मर्दले परिकीर्तितः॥
शिवनादे भवेद् ब्याधिः शतन्या दारिद्र माप्नुयात्।
द्विर्नाद युक्त श्रेष्ठश्च श्रुति युक्तस्य मर्दले॥
लक्षणं तु मृदंगस्य कथ्यते नारदेन च।

ग्रन्थकार ने मृदंग के दक्षिण भाग में श्री शंकर भगवान और बायें भाग में देवी पार्वती को स्थित बताय है। मृदंग में दोनों शक्तियों से संयुक्त नाद, समस्त व्याधियों, दारिद्र आदि को नष्ट करने वाला श्रुति संयुक्त है।

इस देव स्वरूप वाद्य की गरिमा भाषा बद्ध छन्द से भी ज्ञात होती है।

दक्षण स्वर शिव शक्ति उमा वामांग जानौ।
नाद संयुक्त अल्हाद उपजावै है॥
वीणा कौ वीर गम्भीर ध्वनि धवल धीर।
गति में गयन्द की सी चाल उमगावै है॥

'शुक' कवि याके उच्छिष्ट की कहालौ कहौ।
खाय जोपै गूँगौ तापै मूक मिट जावै है।
तत सुषिर घन वाद्य परम प्रसिद्ध।
ऐसौ सिद्ध आनन्द साज मृदंग कहावै है॥

जैसा कि छन्द में कहा है इस वाद्य के उच्छिष्ट आटे को यदि गूँगा मनुष्य कुछ समय खाय तो बोलने लग जाता है ऐसा हमको कई गुरुजनों के मुख से सुनने को मिला है। इससे यह जाना जाता है कि मृदंग वाद्य के प्रभाव और देवत्व स्वरूप को जानकर संगीत सम्राट तानसेन ने अपनी रचना में मृदंग वाद्य को सभी वाद्य यंत्रों में श्रेष्ठ जानकर स्वामी पद की उपाधि देकर कहा है अथवा सभी ताल वाद्य यंत्रों का पिता एवं मुख्य जान कर कथन किया है।

ज्ञान पति महादेव, विद्या पति गणेश।
प्रथवी पति नरेश, बल पति हनुमान॥
सरिता पति सागर, गिरन सुमेरु पति।
पक्षिन पति गरुड़, पत्रन पति पान॥
साजन के पति मृदंग, तारेन पति चंद्रमा।
वृक्षन पति कल्पतरु, धरमन पति दान॥
भक्तन पति भगवान
तानसेन पति अकबर
अर्जुन पति बान॥

(राग कल्पद्रुम)

❐

॥ श्रीमदनमोहन जयति ॥

मृदंग वाद्य में प्रकृति गुणों की अवधारणा

शास्त्रों में तीन प्रकार के गुणों का कथन है। सात्विक, राजस और तामस। सारी सृष्टि का सृजन तीनों गुणों के अंतरगत है। गीता के 18वें अध्याय में भगवान ने कहा है।

न तदस्ति प्रथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः।
सत्वं प्रकृति जै र्मुक्तं यदेभिः स्या त्रिभिर्गुणैः॥

पृथ्वी या आकाश में अथवा देवताओं में तथा इनके अलावा और कहीं भी ऐसा कोई सत्व नहीं है जो प्रकृति से उत्पन्न इन तीनों गुणों से रहित हो। गीता में तीनों गुणों का रूप विस्तार से कहा गया है। इससे यह ज्ञात होता है कि संसार की प्रत्येक कार्यविधियाँ प्रकृति के सात्विक, राजस, तामस गुणों को लेकर है। अबनद्ध वाद्यों में मदृंग (पखाबज) वाद्य गम्भीरता लेते हुये सात्विक गुणों की श्रेणी में आता है। तन्तु वाद्यों में वीणा गम्भीर प्रकृति का साज है जिस प्रकार वीणा की प्राचीनता प्रमाणित लक्षित होती है उसी प्रकार मृदंग की भी वीणा के समकक्ष है। वीणा का सहयोगी सहपाठी होने के कारण मृदंग भी गम्भीरता धारण किये हुये है। इसी कारण वीणा के बोल, चाल आदि में जितना कि अबनद्ध वाद्यों में मृदंग वाद्य उपयोगी है उतनी उपयोगिता अन्य वाद्यों की असंगति पूर्ण है। इस कारण इन दोनों वाद्यों का नाम आदि काल से एक साथ कहा जाता है।

मृदंग वीणा पणवै वद्यिं चक्रुर्मनोरमम्।

भागवत 12-8-24

बाजहि ताल पखाबज बीना।
नृत्य करति अपछरा प्रवीना॥ रा.च.मा. लंकाकाण्ड

यहाँ पर कुछ संक्षेप में तबले की चर्चा करते हैं। वर्तमान में आबनद्ध वाद्यों में तबला वाद्य लोक प्रिय सर्व उपयोगी श्रेष्ठ वाद्य है। किन्तु यह चंचल प्रकृति का होने पर राजस, तामस गुणों से प्रभावित है, इसकी उपयोगिता इसी

के समकक्ष प्रकृति गुणों से पूर्ण गीत वाद्यों के साथ प्रभाव पूर्ण सिद्ध होती है। इतना कहकर हमें अपनी पूर्व चर्चा में ही आ जाना है।

कुछ संगीत विद्वानों का ऐसा मानना है कि मृदंग (पखाबज) वादन जोरदारी तथा तड़क-भड़क लेते हुये है किन्तु यह धारणा मृदंग वाद्य के गम्भीर शान्त गुणों की ओर देखकर विचार करे कि इस वाद्य की संगति किन वाद्य यंत्र एवं गायन के साथ होती चली आई है। वीणा और ध्रुवपद गायन जोकि गम्भीर शान्ति प्रकृति के अंतर्गत आते हैं इनके साथ मृदंग वाद्य ही उपयोगी सिद्ध हुआ है। इस वाद्य के बोल परन क्रिया कलाप में शान्ति, स्थिरता, गम्भीरता, मधुरता का बोध होता है।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने संकेत करते हुये कहा है

बाजहि ताल मृदंग अनूपा।
सोई रव मधुर सुनहु सुर भूपा॥

पाँच सौ वर्ष पूर्व से चली आ रही वैष्णव सम्प्रदाय में हवेली संगीत और समाज संगीत के साथ मृदंग वाद्य की उपयोगिता है। इन धार्मिक परम्पराओं में इसका आदर इसके गुण गौरव एवं आध्यात्मिक स्वरूप का प्रतीक है।

आबनद्ध वाद्यों में और भी वाद्य जैसे कि पणव, निसान, दुन्दभी, ढोल, ढोलक आदि का देवताओं द्वारा बजाने का शास्त्रों में लेखन है किन्तु इन सभी वाद्यों से मृदंग की श्रेष्ठता अधिक है। कारण है कि शास्त्रीय संगीत विधा में प्राचीन काल से इस वाद्य को उपयोगी सिद्ध किया है। यह तो लोक प्रसिद्ध है कि जब शंकर भगवान ने ताण्डव नृत्य किया और देवी पार्वती ने लास्य नृत्य किया तब आदि देव गणेशजी ने दोनों के साथ मृदंग को बजाया। 'ताल' शब्द के आविर्भाव का भी यही समय था। श्री शंकरजी के ताण्डव से 'ता' और देवी पार्वती के लास्य नृत्य से 'ल' इस प्रकार दोनों के नृत्य से 'ताल' शब्द की रचना हुई।

तकारे शंकरः प्रोक्तो लकारे पार्वती स्मृता।
शिव शक्ति सभा योगा ताल इत्य भिधीयते॥

(संगीत रत्नाकार)

❐

॥ श्रीकृष्णाय नमः॥

मृदंग वाद्य की रचना

मृदंग तथा पखाबज वाद्य की रचना शास्त्रों और गुरुजनों द्वारा जो देखने सुनने को मिली है उसे कहते है- श्रीशंकर भगवान ने जब त्रिपुर दैत्य का वध किया इसी कारण शंकर जी को 'त्रिपुरारी' नाम से कहा जाने लगा। दैत्य वध की प्रसन्नता में शंकरजी को नृत्य करने का मन हुआ, उस समय ब्रह्मा जी ने शंकर जी के डमरू के आधार पर त्रिपुर दैत्य के रुधिर से मिट्टी सानकर पिण्ड बनाया उसी के चमड़े से ढक दिया तब गणेशजी ने शिवजी के ताण्डव नृत्य के साथ और देवी पार्वती के लास्य नृत्य के साथ बजाया एक मत यह कहा जाता है।

दूसरा मत गणेशजी ने ही मृदंग की रचना की। मृदंग को गणेश जी द्वारा बजाना इसमें दोनों मत एक है। इस प्रकार मृदंग वाद्य की रचना देव समाज में देखी जाती है। अब इसी प्रसंग को मानवी सृष्टि में चल कर देखे 'भरत' के नाट्य शास्त्र की ओर।

कुछ ग्रन्थकारों ने भरत को ईसा की शताब्दियाँ से बहुत वर्ष पूर्व बताया है, कुछ का चौथी शताब्दी माना जाता है।

भरत के नाट्य शास्त्र में संगीत विषयक 6 अध्याय बहुत ही महत्वपूर्ण है, जोकि संगीत पाठकों के लिये बहुत ही उपयोगी है। 28 से 33 तक अध्याय संगीत से सीधा सम्बन्ध रखती है। 28वें अध्याय में वाद्यों के चार भेद, स्वर, ग्राम, श्रुति, मूर्छना, जातियाँ, ग्रह, अंश, न्यास का विवर्ण विस्तार से है। उन्तीसवें अध्याय में वीणा के विविध प्रकार के रूप और जातियों का रसानुकूल प्रयोग तीसवें अध्याय में सुषिर वाद्यों का विस्तार से वर्णन। इक्कतीस अध्याय में विभिन्न तालों का विवरण और कला, लय का वर्णन। बत्तीसवें अध्याय में ध्रुव, पाँच भेद और छन्द तथा गायक वादकों के गुण, तैंतीसवें अध्याय में आबनद्ध वाद्यों की उत्पत्ति, भेद वादन विधि तथा इनके वादन की जातियाँ और वादकों के लक्षणों का वर्णन है।

नाट्य शास्त्र का तेतीसवां अध्याय हमारे लेखन का विषय है, संक्षिप्त में इसी अध्याय की कुछ बातों को प्रकाश में लाने का प्रयास करते है। जैसा कि पहले कहा गया है कि 'भरत' ने मृदंग वाद्य को पुष्कर नाम की संज्ञा दी है, इसके दो रूप है। प्रथम तीन मृदंगों का एक साथ एक ही व्यक्ति वादन करता, दूसरा रूप एक ही में तीन मुख होते, इन दोनों रूपों को विभिन्न स्वर में मिलाया जाता। उसे मिलाने की क्रिया को उस समय 'मार्जना' नाम से कहा जाता, मार्जना तीन प्रकार की होती है।

प्रथम मायूरी, दूसरी अर्घ मायूरी, तीसरी कामारिबी, मायूरी में मृदंग के बायें अंग को गंधार स्वर में मिलाया जाता, दाहें अंग को षड्ज स्वर में, तीसरे भाग को मध्यम स्वर में मिलाने का विधान है। अर्घ मायूरी में यही क्रम षडज, रिषभ, धैवद स्वर में मिलाना और कामारिबी में यही क्रम षडज रिषभ मध्यम में मिलाने को मार्जना कहते हैं।

'भरत' ने नाट्य शास्त्र में मृदंग वादन के लिये 14 पाठ्यक्रम बतलाये हैं, जोकि मृदंग वादन के पांडित्य तथा मृदंग वादन विषय का सूचक है। पाठ्यक्रम के नाम इस प्रकार है। 1. अक्षर, 2. मार्ग, 3. विलेपन, 4. करण, 5. यति, 6. लय, 7. गति, 8. प्रचार, 9. संयोग, 10. पाणिप्रहत, 11. प्रहार, 12. मार्जना, 13. अलंकार, 14. जाति।

भरत के समय मृदंग के ये विषयों का अध्ययन परम आवश्यक था। इन चौदह विषय की व्याख्या नाट्य शास्त्र में विस्तार रूप से दी गई है। यहाँ पर इन चौदह पाठ्यक्रम के नाम कवित्त छन्द से प्रस्तुत करते हैं।

पखाबज प्रशिक्षण के शिक्षण प्रगट करो।
गुनीजन बतायो सोइ छन्द माँहि गाऊ मैं॥
अक्षर, विलेपन, मार्ग, कर्ण, यति, प्रस्तार,
लय, गत, प्रहार, पाणिप्रहत, जनाऊँ मैं।
शुक कवि मार्जना, संयोग, अलंकार,
जाति भरत के नाट्य माहि द्रग दरसाऊँ मैं।
एते विषय वादन मृदंग के सुढंग करै।
ताही को प्रचण्ड पद पंडित गिनाऊं मैं॥

नाट्य शास्त्र के अनुसार मृदंग विषयक चर्चा करके 'भरत' के मतानुसार इस वाद्य के आविष्कार का लेखन करते है।

'भरत' ने मृदंग वाद्य के रचनाकार 'स्वाँति' नाम के व्यक्ति का कथन किया है। मृदंग बनाने की कल्पना सर्वप्रथम इन्हीं के मन में हुई। कल्पना का आधार इस प्रकार है। प्रातः काल का समय था आकाश में बादल छाये हुये थे। धीमी-धीमी पवन का प्रभाव था, ऐसे सुहाने समय में 'स्वाँति' सरोवर स्नान को गये। उस समय थोड़ी बूँदे पड़ रही थी, उन बूँदों का आघात कमल पत्रों पर पड़ रहा था। कमल पत्तों पर बूँद पड़ने से जो ध्वनि निकल रही थी वह ध्वनि श्रवन द्वारा हृदय में अंकित हो गई। उसी ध्वनि का आधार लेकर देव प्रेरणा से 'स्वाँति' ने मृदंग वाद्य की रचना की। ऐसा भी कहा जाता है कि इस वाद्य के विषय में 'स्वाँती' नाम से एक ग्रन्थ था। भरत ने अपने 'नाट्य शास्त्र' में उस ग्रन्थ की पर्याप्त सहायता ली। इस प्रकार मृदंग रचना की भूमिका भरत के नाट्य शास्त्र से ज्ञात होती है। यहाँ पर इस प्रसंग को जानकर अपनी सोच समझ से यह भाव लगाते हैं कि स्वाँती नाम के किसी देव प्रतिभा के व्यक्ति हैं। अपने भाव के समाधान के लिये गुरुजनों से सुना प्रसंग याद आया उसे कहते हैं।

देवराज इन्द्र की देव सभा में अप्सरा नृत्य गान कर रहीं थीं। उनके साथ 'नीलाम्बर' और 'पीताम्बर' गन्धर्व मृदंग बजा रहे थे, वादन करने में उनसे गलती हो गई तब इन्द्र को अच्छा न लगा और श्राप दिया कि भूतल पर जाकर जन्म लो। इसी संदर्भ में हमें जो सुनने को मिला वह भी प्रस्तुत करते हैं। काशी विश्व विद्यालय के स्वर्गीय मन्नू जी मृदंगाचार्य इन्होंने 'तालदीपका' नाम से चार भागों में तबला वादन की पुस्तक का लेखन किया है। ऐसी गरिमा पूर्ण पुस्तक हमको देखने में नहीं आई। मृदंगाचार्य मन्नू जी ने बताया कि विक्रमी संवत् से बहुत वर्ष पूर्व बनारस के निकट किसी क्षेत्र में दो व्यक्तियों का जन्म हुआ, वो पृथ्वी पर भ्रमण करते रहे। कुछ दिन पश्चात् एक गृहस्थ परिवार के दो बालकों को मृदंग वादन की शिक्षा दी। इस कथन की पूर्व भूमिका में उन्होंने 'नीलाम्बर' 'पीताम्बर' गंधर्व को इन्द्र के द्वारा श्राप देने का भी कथन किया।

इस कथन से यह कल्पना भी स्वाभाविक रूप से होती है कि इन्द्र की संगीत सभा के मृदंग वादक नीलाम्बर, पीताम्बर ही स्वाँती नाम से मानव देह में अवतरित हुये हों। भगवान की सृष्टि संचालन लीला में परम्परागत गुरुजनों द्वारा बहुत ही ऐसी बातें सुनी जाती हैं जिन्हें सत्य एवं प्रमाणित माना जाता है। गुरुजनों तथा विद्वानों के मत से यह निश्चित है कि मृदंग वाद्य का आविष्कार मानव शरीर द्वारा विक्रमी संवत् के बहुत वर्ष पूर्व हो चुका था।

❐

॥ श्री नाथप्रभु जयति ॥

ताल प्रकर्ण

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम् ।

संगीत की तीनों विद्याओं में गायन, वादन और नृत्य के साथ ताल का योग विशेष महत्वपूर्ण है। यह पहले भी कहा गया है कि शंकर जी के ताण्डव नृत्य से तकार और पार्वती देवी के लास्य नृत्य से लकार दोनों के योग से ताल शब्द की रचना हुई। संगीत में काल को ही ताल नाम से कहा जाता है, यह काल एक क्षण से लेकर युगान्तर कल्पान्तर के नाम से बृहद रूप से होता है। इसी प्रकार संगीत में छोटी बड़ी तालों के एक आवर्तन में जो काल व्यतीत होता है वह काल ही ताल से कहा जाता है।

ब्रह्म कल्पोऽपि कालेन यतः काल वशं गतः।
काल क्रिया वसाच्छिन्न स्ताल शब्देन मन्यते॥

(राग कल्पद्रुम)

ब्रह्मा की आयु भी काल के अन्तर्गत है। काल ही संगीत में क्रियात्मक रूप से ताल कहा जाता है। शास्त्रकारों ने ताल महत्व को और भी विशेष रूप से कहा है।

उत्पत्यादि त्रयं लोके यतस्तालेन जायते।
कीट कादि पशूनांच ताले नैव गतिर्भवेत्॥
यानि कानि कर्माणि लोके ताला श्रितान च।
आदित्यादि ग्रहाणांच ताले नैव गतिर्भवेत्॥

थोड़े शब्दों में कहने का तात्पर्य है कि संसार की प्रत्येक गतिविधि कालरूपी ताल के अंतर्गत है।

ताल के दस प्राण

काल मार्ग क्रियाङ्गानि ग्रह जाति कलालयः।
यत प्रस्तार को चेति तालः प्राणः दशस्मृता॥

(ताल दीपका)

ताल के दस प्राणों के नाम है काल, मार्ग, क्रिया, अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यत और प्रस्तार। इन सभी का भावार्थ समझने के लिये बनारस के 'मन्नूजी' मृदंगाचार्य की 'तालदीपिका' ग्रन्थ देखना आवश्यक है। विस्तार भय के कारण अपनी असमर्थता जानी जाती है।

ताल में ग्रहों के नाम

समोऽतीतोऽनाधातश्च बिमश्च चतुर्विधा।
ग्रहास्तालेषु विज्ञेयाः सुक्ष्म द्रष्टया विचज्ञणोः॥

गायन वादन में चार प्रकार की क्रियाओं को ग्रह नाम से कहा जाता है जोकि ताल के अंतर्गत प्रयोग किया जाता है। ग्रह के नाम है- समग्रह, अतीतग्रह, अनाघात ग्रह और विषम ग्रह। 'संगीत परिजात' ग्रन्थकार ने चारों को माना है किन्तु 'संगीत रत्नाकार' लेखक ने विषम ग्रह को छोड़कर तीन को माना है। आगे इन चारों ग्रह के उपनाम का भी ग्रन्थकारों ने लेखन किया है।

तालो वितालोऽनुतालः प्रतिताल चतुर्विधा।
सम ग्रहो भवेत्तालो वितालोऽतात कःस्मृतः॥
अनागतोऽनुतालस्यात् विषम प्रतितालकः।

(ताल दीपका)

समग्रह का दूसरा नाम 'ताल' अतीत का 'वितात' अनाघात का 'अनुताल' विषम का नाम प्रतिताल है।

ताल के सात अंग

अनुद्रुतो द्रुतश्चाथ दविरामो लघुस्तथा।
लविरामो गुरुश्चैव प्लुतश्चेत यथा क्रमम्॥
सप्तांगानीह तालेषु ज्ञात ब्यानि सदा बुधैः ।
अण्यवाद्याद्य रैर्ज्ञयं सन्ति संज्ञान्त राण्यपि॥

(ताल दीपका)

ताल वाद्य के वादक को ताल के अंगों की जानकारी परम आवश्यक है। अंगों के नाम है- अणुद्रत, द्रुत, द्रुत विराम, लघु, लघु विराम, गुरू और प्लुत। इन सातों के अंग और मात्रा इस प्रकार है।

नाम	मात्रा	अंगचिन्ह
अनुद्रुत	१	‿
द्रुत	२	०
द्रुत विराम	३	‿ ०
लघु	४	। ‿
लघु विराम	५	।
गुर	८	ऽ
प्लुत	१२	ऽ

ताल की जाति

चतुर स्त्रस्त त्र्यस्तः खण्डो मिश्रस्तथैवच।

संकीर्ण इति विज्ञेया जातयः क्रमशो बुधैः॥

शास्त्रीय संगीत गायन में राग की तीन जाति मानी जाती है। इसी प्रकार ताल में भी पाँच जाति कही जाती है जिसके नाम है- चतुरस्त्र, त्र्यश्य, खण्ड, मिश्र और संकीर्ण। अब इनके रूप की जानकारी करते है। चतुरस्त्र ४ मात्रा, त्र्यश्य ३ मात्रा, खण्ड ५ मात्रा, मिस्त्र ७ मात्रा और संकीर्ण ९ मात्रा की कही जाती है। विशेष कहने की आवश्यकता नहीं। ताल के छोटे रूप की तुलना इन जातियों की मात्राओं के साथ करके ताल की जाति ज्ञात होती है। जैसे कि चौताल का छोटा रूप ३ मात्रा का है तब त्र्यश्य जाति का चौताल कहा जायेगा इसी प्रकार अन्य तालों की भी जातियाँ जानी जाती है।

❐

॥ श्रीबालकृष्ण जयति ॥

मृदंग वादन में 'घराना' प्रवर्तक परिचय

कुदऊँ सिंह घराना

भारतीय शास्त्रीय संगीत के ताल वाद्यों में प्रमुख मृदंग वादन को 'घराना' नाम से करने में कुदऊँ सिंह जी का नाम संगीत जगत में प्रसिद्ध है। कुदऊँ सिंह जी अपने अकथ प्रयास और काली देवी की उपासना सिद्ध बल से मृदंग वादन के विशेष ख्याति प्राप्त कलाकार हुए। संगीत कार्यालय हाथरस से कुदऊँ सिंह अंक निकला उसके अनुसार उनकी जीवन गाथाओं का कथन करते हैं।

उत्तर प्रदेश के बाँदा नगर में कुदऊँ सिंह जी का जन्म स्थान है। आपके पिता का नाम गप्पे दुबे था जोकि कश्यप गोत्रिय कान्य कुब्ज ब्राह्मण थे। कुदऊँ सिंहजी का जन्म विक्रम संवत् 1872 कहा जाता है, आप अकेले ही मात्र पिता की संतान थे। कुदऊँ सिंह आठ साल के हुये तबही पिता जी का स्वर्गवास हो गया। एक साल बाद माताजी भी स्वर्गवासी हो गईं। कुदऊँ सिंह नौ साल की अवस्था में ही मृदंग लेकर घर से निकल पड़े। कहा जाता है कि मृदंग वादन की प्रारम्भिक शिक्षा कुछ अपने पिता से प्राप्त की उसी की ललक में किशोर अवस्था तक कहाँ भ्रमण करते रहे उनकी यह भ्रमण यात्रा अंधकार में है। कुदऊँ सिंहजी की भ्रमण यात्रा 'दासजी' के आश्रम पहुँचकर समाप्त हो गई।

यहाँ पर कुछ लेखनियों से भ्रम पैदा होता है। कोई भवानी सिंह लिखते है, कोई भवानी दीन लिखते है, कोई भवानी दास लिखते है। कुदऊँ सिंह अंक से ज्ञात होता है, भवानी सिंह अपने समय के अच्छे मृदंग वादक थे, वृद्धा अवस्था होने पर उन्होंने काशी जाकर संन्यास ले लिया दास नाम से कहलाने लगे।

कुदऊँ सिंह दासजी के आश्रम में रहकर गऊ सेवा करते। आश्रम की सफाई आदि देखभाल करना, अवकाश मिलने पर अपना मृदंग अभ्यास कर लेते। दासजी के आश्रम में कुछ शिष्य मृदंग वादन सीखने आते परन्तु दासजी कुदऊँ सिंह जी से संगीत विषयक कोई चर्चा नहीं करते। कुदऊँ सिंह भी आश्रम से सेवानिवृत्त होकर दासजी से छुपकर अपना मृदंग बजा लेते। कुछ समय पश्चात् दासजी ने कुदऊँ सिंह जी की रहनी करनी और मृदंग की लगन देखकर दया भाव से मंत्र देकर मृदंग वादन की शिक्षा प्रारम्भ कर दी।

इसी चर्चा पर तुलसीदासजी का दोहा उपयुक्त होता है।

दोहा - जैसी हो भवतब्यता तैसी मिलै सहाय।

आपुन पुहचै ताहि पै ताहि तहाँ लै जाय॥

कुदऊँ सिंह जी की मेधा शक्ति बहुत तीव्र थी। कर्मठता पूर्ण अपने गुरु श्रीदासजी से पन्द्रह साल तक मृदंग वादन की शिक्षा प्राप्त की। दासजी ने जाना कि कुदऊँ अब मृदंग वादन कला में पूर्ण रूप से निपुण हो गया है तब कुदऊँ सिंह को साथ लेकर लखनऊ के लिये चल दिये। दासजी का लखनऊ के नबाव अमजद अली साह से पूर्व परिचय था, दासजी के लखनऊ पहुँचने पर अमजद अली ने स्वागत किया और दासजी की मृदंग वादन प्रतिभा से परिचित होने के कारण कुदऊँ सिंह जी को अपने दरबार में रख लिया। अमजद अली साह के बड़े पुत्र वाजिद अली साह का भी कुदऊँ सिंह जी से परिचय हुआ। वो अपनी निजी संगीत गोष्ठियों में बुलाने लगे। कुदऊँ सिंह जी ने अपने मृदंग वादन से वाजिद अली साह को प्रभावित कर लिया। कुछ समय बीत जाने पर अमजद अली साह का देहान्त हो गया। कुछ समय बीत जाने पर कुदऊँ सिंह जी ने देखा कि वाजिद अली साह को भाट, भाड, मीरासी, ढाडी, नर्तकियों से घिरे रहने की आदत है। अब यहाँ पर ध्रुवपद वीणा मृदंग को कौन पूछेगा। ऐसे प्रतिकूल वातावरण के कारण कुदऊँ सिंह लखनऊ से चल दिये। एक साल बाद वाजिद अली साह ने गद्दीनसीन की सालग्रह मनाई। उसमें दूर-दूर के गायक वादक और नृत्यकारों को आमन्त्रित किया। इस विशाल संगीत आयोजन में दासजी और कुदऊँ सिंह जी भी आये। इस संगीत समारोह

में कुदऊँ सिंह ने अपने मृदंग वादन से सभी को प्रभावित किया और जोधसिंह, मृदंग वादक को परास्त करके वाजिद अली साह से एक हजार रुपये का पुरस्कार प्राप्त किया। साथ ही 'कुअरदास' की उपाधि से नामांकित किया।

दासजी वृद्धा अवस्था के कारण अस्वस्थ थे। कुदऊँ सिंह जी को लखनऊ छोड़कर अपने आश्रम में आ गये। कुदऊँ जी को मालूम हुआ कि गुरुजी आश्रम चले गये तब ये भी चले आये। गुरुजी की सेवा में समर्पित हो गये। श्रीदासजी ने अपना अंतिम समय निकट जानकर आश्रम की गाय कुदऊँ सिंह को दे दी। शरीर त्याग कर लोक सिधार गये। श्रीदासजी के देहान्त के बाद आश्रम सूना हो गया। शिष्य वर्ग भी सब आने से बन्द हो गये। कुदऊँ सिंह ने आश्रम की गऊ बेचकर यथावत सब क्रिया कर्म भण्डारा किया इसके पश्चात् अपनी जीविका उपार्जन के लिये देशान्तर भ्रमण के लिये आश्रम से निकल गये।

कुदऊँ सिंह प्रथम लखनऊ आये। वहाँ देखा कि पहले जैसा वातावरण नहीं है। लखनऊ से चलकर रामपुर, जयपुर, ग्वालियर, रीवा आदि कई राज दरबारों में गये। दुर्भाग्यवश आपको सभी जगह विपरीत प्रतिकूलता देखने में आई। अन्त में झाँसी आये वहाँ भी उपद्रवीजन समुदाय का वातावरण देखने में आया। अंग्रेज सैनिकों ने उन उपद्रवीजन समुदाय के साथ कुदऊँ सिंह को भी गिरफ्तार करके दतिया पुरानी जेल में राजनीतिक बन्दी के रूप में भेज दिया।

कुदऊँ सिंह बड़े धैर्यवान कर्मठी कलाकार व्यक्ति रहे। उन्होंने दतिया जेल में डेढ़ दो साल व्यतीत किये जाने पर भी अपनी दु:खी रूपी वेदना को किसी से प्रगट नहीं किया। जेल में एक स्तम्भ (खम्भ) पर मृदंग वादन का अभ्यास करते रहे। खम्भ में हाथ की अँगुलियों के निशान दिखाई देते। अधिकांश समय अपनी मृदंग वादन साधना में व्यतीत करते। कहा जाता है कि सच्ची साधना आराधना वर्तमान में कष्टदायक जान पड़ती है किन्तु भविष्य में वह सुखद रूप में प्रतीत होती है।

दतिया राजदरबार में युवराज भवानी सिंह जू देव के सामने अपने समय के प्रसिद्ध ध्रुवपद गायक पंजाबी बाबा का गायन हुआ। उनके साथ

संगत करने में मौजूद कोई पखाबजी नहीं कर सका, राजा भवानी सिंह को शर्मिन्दा होना पड़ा, उन्होंने गुनीजन खाने के दरोगा को कहा कहीं से कोई भी ऐसा पखाबजी ढूढ़ कर लाओ जोकि पंजाबी बाबा के साथ भली प्रकार संगत कर सके। दरोगा के मित्र जेल दरोगा सालिगराम को जब यह बात सुनाई पड़ी तो उसने बताया कि पुरानी जेल में एक ऐसा कैदी है जो रात दिन खम्भे को पखाबज की तरह पीटता है। निरन्तर हाथ चलने से खम्भे में निशान पड़ गये हैं। गुनजन खाने के दरोगा ने जान लिया कि यह कैदी कोई अच्छा कलाकार हो उसने अन्दर जाकर कुदऊँ सिंह कैदी को पखाबज पर संगत करने को राजी करके उनकी हजामत बनवाकर अच्छे कलाकारी शाही कपड़े पहनाकर कुदऊँ सिंह को दरबार में खड़ा कर दिया और रात को संगीत सभा में मृदंग बजाने की स्वीकृति दे दी। बाद में रात को महफिल जमी सभी गुनीजन खाने के गायक वादक एकत्रित हुये। कुदऊँ सिंह ने जैसे ही मृदंग मिलाई थाप लगाते एक ऐसी गूँज पैदा हुई जोकि सभी आश्चर्य चकित हो गये। पंजाबी बाबा ने राग मालकौंस सूलताल में ध्रुवपद गाया। कुदऊँ सिंह ने संगत करके पंजाबी बाबा को और उत्साहित किया ताकि वो अपने गाने में और सूझबूझ की उपज करने लगे। गायन समाप्त होने पर पंजाबी बाबा ने कैदी कुदऊँ सिंह को अपनी छाती से लगाया और राजा भवानी सिंह जी को धन्यवाद ज्ञापन किया कि आपके दरबार में ऐसे महान मृदंग वादक हैं मुझे पूर्ण रूप से संतुष्टि हुई। राजा भवानी सिंह जी को बहुत प्रसन्नता प्राप्त होने पर कैदी कुदऊँ सिंह से नाम पूछा तब कुदऊँ सिंह नाम बताने में संकुचित हुये फिर कुछ भय हुआ कि राजा साहब नाराज न हो जाय तब नाम बताया कुदऊँ दुबे मेरा नाम है। राजा ने पूरे शरीर की तरफ दृष्टि डाली तब पूछा पाँव में लोहे की साँकर क्यों पहनी है। तब दरोगा ने बताया कि पिछले डेढ़ साल से जेल में सजा भुगत रहे है। इस कारण पैर में साँकर डली हुई है। राजा भवानी सिंह ने कहा कि मैं आज ही आपको कैद से मुक्त कराता हूँ। आप आज से ही जेल से मुक्त हुये समझें। तुरंत राजा साहब ने एक थाल में सिर से पैर तक आभूषण और वस्त्र कुछ चाँदी के सिक्के देकर सम्मानित किया। उन्हें सिंह की उपाधि देकर सम्बोधित किया तब से कुदऊँ सिंह नाम से जाने जाते हैं।

इस घटना के बाद जेल से मुक्त तो राजा साहब ने करा ही दिया और उनके रहने के लिये सुन्दर हवेली तथा दैनिक खर्च के लिये सात राजशाही (चाँदी के रूपया) और भोजन आदि की व्यवस्था दतिया राजदरबार की ओर से प्राप्त होने लगी। कुदऊँ सिंह दतिया राजदरबार भवानी सिंह से सम्मानित होकर जीवन पर्यन्त दतिया में रहे।

कुदऊँ सिंह जी ने देवी उपासना साधना बल से प्रखर मेधा शक्ति प्राप्त कर हजारों परनों की रचना की। कुछ परनों के नाम हैं, गज परन, दुर्गा परन, गनेश परन, काल परन, सुन्दरी श्रृंगार परन, दहेजू परन, दलबदल परन, हजारी परन, बाज बहेरी परन, समुद्र लहरी परन, गुहार बढार भरतार परन, साथ परन, ताण्डव परन आदि। गुरुजनों से सुना है कि पंच देव अस्तुति परन को माँ काली के सामने बजाते थे। पूजा में रखा नारियल अपने आपसे फूट जाता, यह घटना उनकी प्रगाढ़ देवी उपासना का परिचय है। कुदऊँ सिंह जी के मृदंग वादन में ऐसे चमत्कारी रूप थे कि उन्मत्त पागल हाथी को शान्त वश में कर लेना, मृदंग को ऊपर उछाल देना ता, धा की ध्वनि सुनाई देना ऐसी चमत्कार पूर्ण घटना और किसी मृदंग वादन में सुनने को नहीं मिलती है। कुदऊँ सिंह जी ने अपनी मृदंग वादन शैली को ऐसा प्रभाव पूर्ण बनाया जोकि सभी भारतीयजन समाज ने आदर सम्मान के साथ अपनाया जो 'कुदऊँ सिंह घराना' नाम से विकसित है। इस घराने के बोल परन आदि में विशेष अभ्यास आवश्यक है। उदाहरण में एक परन।

क्तक धेतगधे धाकिटतकिटत काधि तागद गिनगदगिन धाकिटकिट किडनगधेत् धुमकिटितकथुं गा त्थूथू तिटकतागदगिन धागिगिधा गिगिधागे दिंनाना नानाकिटकिट तकिटतकाधुम किटतकगदगिन धाकिटकिट तकिटतकाधुम किटतकगदगिन धाकिटकिट तकिटतकाधुम किटतकगदगिन धा

भारत के प्रसिद्ध मृदंग वादक कुदऊँ सिंह जी के जीवन चरित्र के विषय में हम संक्षेप में लिख पाये है। विशेष जानकारी के लिये हाथरस संगीत कार्यालय से 'कुदऊँ सिंह अंक' देखना परम आवश्यक है। अपने विचारों से यह मानना है कि उनके जीवन काल की गतिविधियों से विद्या के प्रति सच्ची साधना आराधना की प्रेरणा जाग्रत हो।

धर्म न दूसर सत्य समाना।

आगम निगम पुरान बखाना॥ रा.च.मा.

कुदऊँ सिंह के प्रमुख शिष्यों के नाम है अयोध्या के बाबा रामकुमार दास, दरभंगा के भईयालाल और रामसिंह, राजस्थान के जगन्नाथ पारिक, बंगाल के दिलीपचंद भट्टाचार्य, पीलीभीत के शम्भूदयाल, टीकमगढ़ के लाला झिल्ली, दतिया के खिल्ली नागार्च, पंजाब के ज्ञानी हरिनाम सिंह और रागी फुम्मन सिंह, महाराष्ट्र के बलवंत राव ताने, मथुरा के चिरंजीलाल, सिंध हैदराबाद के चेतन गिरि और जानकी प्रसाद, कुदऊँ सिंह के जमाई काशी प्रसाद ने भी इन्हीं से मृदंग वादन की शिक्षा प्राप्त की।

कुदऊँ सिंह जी की मृदंग वादन परम्परा भारत के अधिकांश देशों में फैली हुई है। मृदंग वादन के चार घरानों में विशेषत: प्रचार प्रसार में इन्हीं की वादन शैली भारतीय संगीत में अग्रणीय एवं प्रशंसनीय है।

❐

॥ श्रीगिर्राजधरण जयति॥

नानापानसे घराना

संगीत जगत में नानापानसे जी के नाम से सभी परिचित है, जिन्होंने मृदंग वादन में कुदऊँ सिंह जी के काल में ही उन्हीं के समकक्ष घराना नाम से अपनी मौलिक मृदंग वादन शैली को जन्म देकर विकसित किया। जिस प्रकार कुदऊँ सिंह जी की मृदंग वादन कला का प्रचार-प्रसार भारत के यत्र तत्र स्थानों में अपनी बढ़त बनाये हुये है, इसी प्रकार नानापानसे जी की मृदंग वादन शैली ने महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के आँचल में प्रचार प्रसार की तीव्र गति से स्थान कायम कर घराने नाम की प्रतिभा से संगीत जगत को अवगत कराया।

नानापानसे बाल अवस्था से ही संगीत के संस्कारों से प्रेरित थे, आपका जन्म महाराष्ट्र के बवधन स्थान में हुआ था। बाल अवस्था से ही पिताजी से पखाबज सीख कर भजन कीर्तन मण्डलियों में वादन संगति करते। छोटी अवस्था में ही सुन्दर संगति करने पर सभी श्रोतागण प्रभावित हो जाते। महाराष्ट्र में मृदंग के बाये भाग पर आटा न लगाकर स्याही का प्रयोग किया जाता है, इस कारण भजन कीर्तन लोक संगीत के साथ मृदंग बजाने का प्रचलन पूर्व काल से चला आया है। पान सेजी ने पिताजी के पश्चात् पूना के दरबारी कलाकार मन्यावा कौडीतकर से कुछ शिक्षा प्राप्त हुई तत्पश्चात् उन्हें बार्यी के चौण्डे बुवा तथा भारतण्ड बुवा से भी कुछ तालीम प्राप्त हुई। संयोग से नानापानसे अपने पिता के साथ काशी गये, वहाँ के मन्दिरों में भजन कीर्तन के साथ निर्भय पूर्वक उत्साह के साथ पखाबज पर संगति करते, सभीजन समाज आपकी वादन संगति से प्रभावित होता।

उस समय बाबू जोधसिंह जो कि अच्छे मृदंग वादक थे। विद्या नगरी काशी में ही रहते, लोगों के मुख से जोधसिंह जी की प्रशंसा सुनकर नाना पान से उनके निवास स्थान पर गये। उन्होंने देखा कि जोधसिंह जी माँ सरस्वती के पूजा स्थल में मृदंग बजाने में मग्न है, नानापानसे उनका मृदंग वादन सुनकर आनन्दमग्न होकर गुर शरणापन्न होने का निश्चय करके चरणों में गिर पड़े।

बाबू जोधसिंह, विद्या का सुयोग्य पात्र और निष्ठा से प्रभावित होकर गुरु शिष्य परम्परा के अनुसार मृदंग वादन की शिक्षा देने लगे, पानसेजी ने बारह वर्ष गुरु का सान्निध्य प्राप्त कर मृदंग वादन की कर्मठता पूर्वक साधना की।

तदोपरान्त गुरु आज्ञा से नानापानसे प्रयाग के योगीराज माधव स्वामी के पास जाकर वादन विद्या में लग गये, माधव स्वामी मृदंग वादन के अच्छे विद्वान व्यक्ति रहे, उन्होंने अपने संग्रह की हुई बोल परनों की पुस्तक और अपनी मृदंग पानसे जी को देकर जल समाधि लेकर परलोकवासी हो गये, उसी समय नानापानसे इन्दौर आकर राज आश्रय प्राप्त कर दरबारी कलाकार के रूप में अच्छे प्रतिष्ठावान कलाकार माने जाने लगे।

इन्दौर नरेश तुकोजी राव होल्कर नानापानसे जी से बहुत प्रेम एवं वादन विद्या से प्रभावित होकर बहुत आदर करते। एक बार ग्वालियर नरेश जियाजी राव इन्दौर आये। नानापानसे का मृदंग सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और ग्वालियर ले चलने को कहा। इन्दौर दरबार से अधिक वेतन और सभी सुख-सुविधाओं का प्रलोभन दिया किन्तु नानापानसे ने सब कुछ प्रलोभन त्यागकर इन्दौर छोड़ने में अपनी असमर्थता व्यक्त कर जियाजी राव के साथ ग्वालियर चलने को मना कर दिया। इस गाथा से आपकी त्याग वृत्ति जानी जाती है।

कहा जाता है कि नानापानसे तबला वादन की भी विशेष जानकारी प्राप्त किये हुये थे इसी कारण आपने गहराई से मनन चिन्तन कर अपनी मौलिक धारणाओं से नवीन वादन शैली का आविष्कार किया।

नानापानसे जी ने तबला वादन की शिक्षा प्रभाव से तबले के कुछ आंशिक शब्दों को मृदंग वादन के शब्दों से जोड़कर अपनी वादन शैली को सहज सरल और मधुर बनाकर सुगम गतियों से विकसित किया। कुदऊँ सिंह जी की वादन शैली में क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग ज्ञात होता जैसे कि धडन्न, तडन्न, कृधा, कृधेत्, ग्रगिन्, तडतड तडात आदि। इस प्रकार के शब्दों में जोरदारी और विशेष अभ्यास की आवश्यकता है किन्तु पानसे जी ने अपने वादन में तिरकिट, धुमकिट, गदगिन, तकतक, धिरधिर आदि सरल भाषा का प्रयोग कर हाथ को सुगमता से दौड़ाने की चाल में थोड़े ही अभ्यास से वादन में प्रियता लाने पर आपका योगदान रहा। इसी कारण आपका मृदंग वादन संगीत जगत में 'नानापानसे' नाम से कहा जाने लगा।

आपका मूल नाम नारायण था। घर वाले सभी बचपन में ही नारायण न कहकर 'नाना' नाम से पुकारने लगे, पान से शब्द जुड़ने का कारण है। पानसे नाम के प्रसिद्ध कीर्तनकार थे उनके साथ संगति आप सुन्दर ढंग से करते। जन समूह एकत्रित होता और कहते कि पानसे के साथ पखाबज सुनने जा रहे हैं इसी कारण आगे चलकर आपको नानापानसे नाम से पुकारने लगे, ऐसा विद्वानों के मुख से सुना है।

नानापानसे शान्त स्वभाव निराभिमानी थे। सभी कलाकरों के प्रति आदर करना और विद्यादान करने में बड़े उदार थे। किसी कलाकार के प्रति प्रतिस्पर्धा रखते हुए प्रतियोगिताओं के जिक्र आपके मृदंग वादन में नहीं सुने जाते है। आपके नाम से मृदंग वादन की वंश परम्परा शिष्य प्रशिष्यों द्वारा विस्तार रूप से देखी सुनी जाती है, नानापानसे जी ने अपने पुत्र बलवन्त राव पानसे को मृदंग वादन में एक कुशल कलाकार तैयार किया किन्तु दुर्भाग्य से छोटी अवस्था में ही बलवन्त राव पान से का निधन हो गया। पानसेजी पुत्रशोक की व्यथा से अत्यन्त दुखी रहने लगे। पुत्र आघात से उनके जीवन में अस्वस्थता आने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में संगीत जगत को छोड़कर स्वर्ग सिधार गये किन्तु नानापानसे जी की मृदंग वादन विद्या को आगामी शताब्दियों में भी संगीत जगत् यादगार करता रहेगा। नानापानसेजी के मृदंग वादन का परिचय इस परन से करें।

चौताल

1. किटतकता किटतकत थुंऽग गदगिन नगतिट तगतिट कृधेऽधि किटधग तिटकता गदगिन धिंतिरकिटतक ता दिगनरा ऽनधेत् तगिऽन्न ताधा तिटकता गदगिन धा तिटकता गदगिन धा तिटकता गदगिन धा

2. धगतिट गदगिन नगतिट गदगिन धगतिट कताकता गदगिन नगतिट कतिटत गनधागे तिटकता गदगिन धा तिटतिट कतिटत गनधागे तिटकता गदगिन धा तिटतिट कतिटत गनधागे तिटकता गदगिन धा

❐

॥ श्रीनाथो जयति ॥

नाथद्वारा घराना

मृदंग वादन की इस परम्परा के मूल में प्रथम 'हालूजी' मृदंग वादक थे जोकि जयपुर की पूर्व राजधानी आमेर के निवासी रहे। महाराजा जयसिंह ने संवत् 1756 में जयपुर नगर बसाया तब हालूजी की परम्परा के रूपरामजी मृदंग वादक राजाश्रय में जयपुर रहने लगे। रूपरामजी बड़े कुशल मृदंग वादक थे, शिव ताण्डव नृत्य की परन आप कुशलता पूर्वक बजाते थे।

जोधपुर के राजा अभयसिंह संगीत कला के बहुत शौकीन थे। इनके दरबार में कई संगीतज्ञ विद्वान् रहते। जोधपुर नरेश ने सम्वत् 1791 में रूपरामजी को जयपुर से जोधपुर बुला लिया और मृदंग वादन सुनकर बड़े सम्मान से उपहार देकर अपने दरबार में रख लिया। रूपरामजी के पुत्र वल्लभदास का जन्म 1826 में हुआ। वल्लभ दास बचपन से ही मृदंग वादन की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त करने लगे। तरुण अवस्था होने पर वल्लभ दास ही जोधपुर दरबार और संगीत गोष्ठियों में भाग लेकर अपने मृदंग वादन से श्रोताओं को प्रभावित करने लगे। रूपरामजी को वृद्धा अवस्था का अनुभव होने के कारण मृदंग वादन का कार्य अपने पुत्र वल्लभ को सौंप दिया।

उसी समय जोधपुर राजदरबार में जाने माने मृदंग वादक पहाड़सिंह रहते, वल्लभ दासजी ने पहाड़ सिंह जी की बहुत सेवा करके मृदंग वादन की बहुत सामिग्री प्राप्त की यद्यपि पहाड़सिंह बताने में आनाकानी करते तब वल्लभ जी ने पहाड़ सिंह के पुत्र जोहार सिंह को मित्र बनाकर वादन सम्बन्धी काफी जानकारी प्राप्त की। वल्लभजी ने पहाड़ सिंह को गुरु समान मानकर जन समाज में स्वीकार किया कि अपनी परम्परा के अलावा जो भी विद्या प्राप्त हुई वह पहाड़सिंह जी का ही कृपा प्रसाद है।

सन् 1859 में नाथद्वारा के श्रीमद् गोस्वामी बड़े गिरधरजी ने वल्लभ दासजी को नाथद्वारा बुलाकर श्रीनाथ प्रभु के मन्दिर में मृदंग वादन सेवा करने की आज्ञा दी, वल्लभजी अपना परम सौभाग्य मानकर मृदंग वादन की सेवा करने लगे। इसी काल की अवधि से मृदंग वादन विधा को 'नाथद्वारा घराना' नाम से कहा जाने लगा।

वल्लभदासजी के तीन पुत्र हुये, बड़े चतुर्भुज, मझले शंकरलालजी, छोटे खैमलालजी। चतुर्भुज बड़े होने पर उदयपुर रहने लगे। इनके कोई सन्तान नहीं थी। शंकरलाल और खेमलाल जी की वंश परम्परा आगे चली। शंकरजी और खैमलालजी ने मृदंग वादन की शिक्षा अपने पिताजी से पूर्ण रूप से प्राप्त की। सन् 1906 में वल्लभजी का देहान्त हो गया। तत्पश्चात् शंकर लालजी ने श्रीनाथ मन्दिर में मृदंग वादन की सेवा कार्य करने लगे और खैमलाल यदा कदा समय सहायक रूप में रहे। शंकरलालजी के समय नाथद्वारा मन्दिर गद्दी पर श्रीद्वारकानाथलाल गोस्वामी महाराज थे उस समय यत्रतत्र स्थानों से गुणीजन आते। संगीत चर्चा होती, अपने विचारों का आदान-प्रदान करते, मन्दिर के गुनीजन दौलतराम कीर्तनीया, घनश्याम बीनकर, गायक रामदास, बिहारीदास, नवनीत प्रिया के रामनारायण पखाबजी, सुन्दर दास, बालकृष्ण आदि विद्वानों का समागम होता उसमें शंकरलालजी और खैमलालजी अपनी वादन विद्या से अवगत कराकर संगीत शास्त्र चर्चा से अपने वैदुश्य का परिचय देकर सभी को प्रभावित करते। शंकरलालजी यदा कदा समय राजदरबारों में जाकर अपनी परम्परागत मृदंग वादन विद्या से प्रभावित कर सम्मान सहित पुरस्कार प्राप्त करते। इसी समय खैमलालजी ने आगामी परम्परा हेतु 'मृदंग सागर' पुस्तक लिखना प्रारम्भ कर दिया। सहायता में उनके पुत्र श्यामलाल का भी योगदान रहा।

हरि इच्छा भावी बलवाना।
हृदय विचारत शम्भु सुजाना॥ रा.च.

होनेहारवश कुछ समय बाद अस्वथ होने के कारण खैमलालजी सन् 1934 में स्वर्ग सिधार गये। पुस्तक लिखने का कार्य इनके पुत्र श्यामलाल ने किया। कुछ समय पश्चात् श्यामलाल का भी देहान्त हो गया।

श्री शंकर लाल जी को भाई भतीजे की मृत्यु से बहुत दु:ख हुआ अशान्त चित्त होने के कारण आप तीर्थाटन के लिये नाथ द्वारा से चल दिये। यन्त्र तन्त्र स्थानों में तीर्थ यात्रा पूरी करके नाथ द्वारा आकर श्री नाथ प्रभु की मृदंग वादन सेवा करने लगे। कुछ समय बाद सन् 1950 में शंकर लाल जी का देहान्त हो गया। इनके पुत्र 'घनश्यामजी' ने मन्दिर में मृदंग वादन की सेवा अपनी परम्परा के अनुसार करने लगे। घनश्याम जीने अपनी परम्परा गत वादन विद्या को पूर्ण रूप से अपने पिताजी से प्राप्त किया, अपनी परम्परा की वैदुश्य पूर्ण सम्पदा से सम्पन्न कुशल मृदंग वादक थे। सोलो वादन आपका प्रभाव पूर्ण प्रसंशनीय था। श्री घनश्यामजी ने संगीत जगत के लिये ऐसा कार्य किया जो कि खैमलाल जी द्वारा 'मृदंग सागर' पुस्तक का लेखन कार्य उनके बाद अपूर्णता की स्थिति में था। घनश्याम जी ने उस पुस्तक के लेखन कार्य को पूरा करके श्री नाथ मन्दिर के गोस्वामी श्री गोवरधन लाल महाराज के पूर्ण सहयोग से प्रकाशित किया।

श्री घनश्याम जी सन् 1916 में परलोक सिधार गये। घनश्याम जी के पुत्र पुरुषोत्तम दास जी जन्म सन् 1907 में हुआ। पिताजी के अन्तकाल समय पुरुषोत्तम जी की उम्र नौ साल की थी। छोटी अवस्था में ही मृदंग वादन की शिक्षा अपने पिताजी से प्रारम्भ हो गई । नाथद्वारा में पुरुषोत्तमजी के दोहित्र प्रकाश जी के घर एक चित्र में देखा जिसमें घनश्याम जी मृदंग बजा रहे है और निकट में पुरुषोत्तम जी बाल अवस्था में बैठे पखाबज सुन रहे हैं। वंश परम्परा के प्रबल संस्कार और कुशाग्र बुद्धि योग से पुरुषोत्तम जी बाल काल से ही मृदंग वादन में लग गये। पिताजी के बाद पुरुषोत्तम जी की बाल अवस्था की परिवरिस भार नाथद्वारा महाराज ने संभाला। पुरुषोत्तम जी वंशानुगत संस्कारी तो थे ही अपने लक्ष्य पर आरुढ़ होकर कर्मठता पूर्ण पिताजी की पुस्तक का सहारा लेकर अपने घर मृदंग वादन में लगे रहते । पुरुषोत्तम जी की बाल अवस्था में पखाबज वादन के प्रति ऐसी उत्तेजित लगन को देख सुनकर इन्हीं की जाति के कुछ लोगों में ईर्ष्या के भाव पैदा हो गये। येन केन प्रकार से इनके अभ्यास में रुकावट डालना, अपमानित व्यवहार करना आदि ।

कुछ समय बाद श्री गोर्वधन लाल महाराज ने एक उत्सव किया, उसमें संगीत का आयोजन भी था, महाराज ने पुरुषोत्तम जी की बाल अवस्था में मृदंग वादन प्रतिभा जानकर उन्हें संगीत आयोजन में बुलाया। उस समय ईष्यालु लोगों ने कुछ विघ्न भी डाले। बालक पुरुषोत्तम को ठीक प्रकार से नहीं बजाने दिया और मंच से नीचे उतार दिया। उस समय पुरुषोत्तम जी की उम्र १२ बरस की रही । इस द्वेष भावना व्यवहार से अपमानित दु:खी होकर आत्महत्या करने नदी की ओर चल दिये जैसे कि सौतेली माँ के वचन प्रहारों से ध्रुवजी वन को चल दिये थे। किसी व्यक्ति से पुरुषोत्तम जी की माता को यह जानकारी मिली, तुरन्त घर से हाथ में लालटिन लेकर भागी और फुर्ती से हाथ पकड कर कहा-बेटा नदी में गिरकर पखाबज नहीं बजेगी। घर चल मेहनत करो जिन्होंने तेरे को अपमानित किया है एक दिन ऐसा होगा तू उनको अपमानित करेगा। इस प्रकार माता की ममता भरी आवाज से साहस पैदा होने पर पुरुषोत्तम जी घर आकर तन मन से मृदंग वादन की साधना में लग गये।

दो साल बाद संगीत का आयोजन फिर से हुआ। महाराज श्री गोर्वधन लाल जी की आज्ञा से पुरुषोत्तम जी ने भी उस आयोजन में भाग लिया। धुरपद गायक के साथ इनके विपक्षी व्यक्ति से संगत भली प्रकार न हो सकी तब महाराज श्री ने पुरुषोत्तम जी को संगत करने को कहा, तब आपने भली प्रकार बड़े सुन्दर ढंग से संगत करके अपनी वादन विद्या का परिचय दिया। आपकी कलात्मक संगीत क्रिया से श्री महाराज गोर्वधन लाल जी एवं सभी श्रोतागण ने भूरी भूरी प्रशंसा की। विपक्षी दल को अपमानित होना पड़ा। माता का कथन आशीष रूप में फलित होकर सत्य हुआ ।

श्री पुरुषोत्तम गुरुजी ने अपनी बाल अवस्था में वादन के प्रति प्रबल लगन की गाथा अपने मुख से मुझे सुनाई थी, यहाँ पर लिखने का हमारा इतना ही प्रयोजन है कि गुनीजन महानुभावों की इस प्रकार की गाथाओं से साधक को प्रतिकूलता में भी साधन में संलग्न रहने की जाग्रति हो।

श्री पुरुषोत्तम दास जी ने नाथद्वारा श्रीनाथ जी मन्दिर में ३५ साल तक मृदंग वादन की सेवा की तत्पश्चात् श्री गोविन्द लाल महाराज की आज्ञा

लेकर अपने भांजे व शिष्य रामचन्द्र और श्यामजी को श्री नाथ प्रभु की सेवा में नियुक्त कर दिल्ली चले आये। आपके पूर्व परम्परागत मृदंग वादन शैली राजदरबारों तक विकसित रही किन्तु पुरुषोत्तमजी ने दिल्ली आकर भारतीय कला केन्द्र और कत्थक केन्द्र में शिक्षक पद पर आरुढ़ होकर अपनी नाथद्वारा घराना वादन शैली को विकसित करने में पूर्ण योगदान रहा है।

आपने मृदंग वादन की गुण गरिमा से कई भारतीय संस्थाओं से सम्मान प्राप्त किया। सन् 1969 में दिल्ली संगीत नाटक अकादमी से सम्मानित राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया। सन् 1971 में राजस्थान अकादमी द्वारा और दिल्ली साहित्य कला परिषद ने आपको सन् 1978 में सम्मानित किया। सन् 1983 में राष्ट्रपति ने 'पदम्श्री' से विभूषित कर सम्मानित किया। श्री पुरुषोत्तम जी ने कत्थक केन्द्र में मृदंग वादन शिक्षा गुरु के पदाधिकार पर आरुढ़ होकर अपने घराने सम्बन्धी शिक्षा देकर शिष्य समुदाय को अवगत कराया। आपके प्रमुख शिष्यों में कुछ नाम है, भांजे श्यामलाल, दोहित्र प्रकाशचंद नाथद्वारा, दुर्गालाल कथक, तुलसी, भीमसेन, तेजप्रकाश, रामलखन यादव, भगवत उत्प्रेती, हरेकृष्ण बहेरा, मुरलीधर, गौरांग चौधरी, छत्रपति सिंह विजना। आपके घराने की वादन शैली और घरानों से पृथक रूप में जानी जाती है जैसे कि और घरानों में 'तिटकता गदगिन' का प्रयोग होता है। इसमें 'किटतका धदगन का प्रयोग किया जाता है और 'धातिरकिटतकता' यह शब्द अन्य घरानों में विशेष है किन्तु इस घराने में 'धाकिटतकिटतका' विशेष प्रयोग में आता है। इस घराने के वादन में १३ अक्षर मूल में कहे जाते है– ता दी थुं ना कि ट त का ध द ग न धा' इन्हें 'पाटाक्षर' नाम से कहा जाता है। इन्हीं शब्दों में 'पडार' नाम से परनों का प्रयोग बड़े सुन्दरता से किया जाता है जोकि अन्य घरानों में सुनने को नहीं मिलता है। इस घराने में ओर भी वादन विधि हैं जैसे ताधिननक धेत् धिन, नक धिन नक धिन नधि नन तक। इन्हीं शब्दों का प्रयोग विविध लयकारी में बजाना इसी घराने में देखा सुना जाता है अन्य में नहीं।

श्री पुरुषोत्तम दास जी के मृदंग वादन में आपके पिता श्री की लिखी हुई 'मृदंग सागर' लेखन का परिचय पूर्ण रुप से ज्ञात होता है, जोकि एक

पाव लय से अठगुनी लय तक का प्रयोग अपने मृदंग वादन में करते। आपकी वादन शैली में कुछ नृत्य के शब्दों का भी प्रयोग है जो कि थिरकिट, धिलाँग, थुंथुं थेइ थेइ आदि की उपयोगिता है। विशेष न कहकर आप मृदंग वादन के विशेष वन्दनीय एवं प्रशंसनीय कलाकार थे, दिल्ली कत्थक केन्द्र से गुरुपदाधिकार से निवृत्त होकर सन् 1982 में अपने जन्म स्थान नाथ द्वारा आ गये।

नाथद्वारा आने पर आपने श्री गोविन्द लाल महाराज के निर्देशन में संगीत विद्यालय का आरम्भ किया। 21 जनवरी सन् 1992 में बसन्त पंचमी के दिन आप स्वर्ग सिधार गये।

श्री पुरुषोत्तम जी के स्वर्ग सिधारने के पश्चात् मृदंग वादन की शिक्षा इन्हीं के भांजे व शिष्य श्यामलाल जी और दोहित्र प्रकाश चन्द्र जी कार्य करने लगे।

यह कहना आवश्यक है कि इस घराने की गुण गरिमा जानने के लिये 'मृदंग सागर' ग्रन्थ देखना परम आवश्यक है। मृदंग वादन विधि का ऐसा ग्रन्थ हमको और किसी घराने की परम्परा में देखने सुनने में नहीं आया।

चौताल

धादिं धाकिट ताकिट तकाकिट धिधिकिट धुमकिट तकिटत काकिट त्किट धुमकिट तकिटत काकिट तकतक धुमकिट तकिटत काकिट धदगिन नंकिट ताकिट तकाकिट तकधे ताधुम किटतक धदगिन धा

चौताल

किडना किटधुम किटतक धदगिन तकधुम किटतक
धदगिन धादी धिडना किडान धा तकधुम किटतक
धदगिन धादी धिडना किडान धा तकधुम किटतक
धदगिन धादी धिडना किडान धा

❐

॥ श्रीनाथो जयति ॥

सतघरा घराना, मथुरा

मृदंग वादन का 'सतघरा घराना' बृज की कृष्णा भक्ति संगीत से सम्बन्ध है। बृज के भक्ति संगीत की तीन धारायें तीन नामों से जानी जाती है। प्रथम 'हवेली' (कीर्तन) संगीत दूसरा 'समाज संगीत' तीसरा रासलीला संगीत है। आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व श्री कृष्ण भक्ति के प्रवर्तक आचार्य महानुभावों द्वारा त्रिविध संगीत धाराओं का उद्भव हुआ। आचार्य महोदय के नाम है श्री वल्लभाचार्य, इनके पुत्र श्री विठ्ठल नाथ गुसांई, स्वामी श्री हरिदास जी, श्री हित हरिवंश गोस्वामी, श्री नारायण भटट् जी। इन्ही आचार्यों की शिष्य परम्परागत भक्ति संगीत विकसित हुई। श्री वल्लभाचार्य तथा श्री विठ्ठल नाथ जी की परम्परा संगीत को हवेली व कीर्तन कहा जाता है, जो कि वृज के अन्तर्गत इसके मुख्य स्थान है, गोकुल, जतीपुरा गोवर्धन, कामवन, मथुरा, स्वामी श्री हरिदास जी और श्रीहित हरिवंश जी की समाज संगीत के मुख्य स्थान वृन्दावन, बरसाना, नन्दगाँव हैं। इन्हीं आचार्यों के संरक्षण में श्रीकृष्ण भगवान की लीलानुकरण रासलीला का विकास हुआ। समाज संगीत और हवेली संगीत का मिश्रण होकर अभिनय युक्त रासलीला संगीत है। इसके प्रचार प्रसार में श्री नारायण भटट् जी का योगदान है। भाद्र मास में बृज के गाँवों में मेले उत्सव आदि जो देखने में आते है वह रासलीला संगीत की भावनाओं से प्रेरित श्री नारायण भटट् जी का प्रयास है।

ठौर ठौर रास के विलास लै प्रकाश किये।
जिये यों रसिक जन कोटि सुख पाये है॥

(भक्तमाल)

बृज की तीनों संगीत विद्याओं का अविष्कार विक्रम की सोलहवीं शताब्दी का समय कहा जाता है। बृज की त्रिविध संगीत धारा में आबद्ध वाद्यों में मृदंग वाद्य ही उपयोगी है। समय की गति प्रभाव से रासलीला संगीत में कुछ पूर्व समय से तबला वाद्य का प्रयोग होने लगा है।

बृज के भक्ति संगीत में मृदंग वादन को 'सतघरा घराना' नाम से विदित होने की चर्चा करते हैं। श्री वल्लभाचार्य का तिरोधान विक्रम सं. 1587 में हुआ बाद में श्री वल्लभ के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथ जी आचार्य पद पर रहे, थोड़े ही काल बाद ये जगन्नाथपुरी गये वहीं जगन्नाथ भगवान के विग्रह में लीन हो गये। तत्पश्चात् गोपी नाथ जी के छोटे भाई श्री विठ्लनाथ गुसांई जी आचार्य पद पर विराजमान हुये, उस समय श्री गुसांई जी प्रयाग के पास अडैल गाँव में परिवार सहित निवास करते। जब तब बृज में आकर गोवर्धन और गोकुल गाँव में सुखद प्रिय जानकर निवास करते, यद्यपि आचार्य पद से पहले ही आप का बृज निवास करने का मन था उस समय राजकीय शासन की क्रूर भावनाओं के कारण बृज में सुखद रूप से रहना बड़ा कठिन था।

संवत् 1619 में मुगल सम्राट अकबर ने राज्य शासन अपने हाथ में लेकर धार्मिक भावनाओं के साथ शासन आरम्भ कर दिया । इसी काल अवधि में श्री विठ्ठलनाथ जी ने अडैल से हटकर स्थाई रूप से बृज में रहने का निश्चय कर लिया। श्री विठ्ठलनाथ जी अडैल से चलकर राजा रामचंद बघेला की राजधानी में कुछ दिन रुक कर वहाँ से विदा होकर गोडवाना की रानी दुर्गावती जोकि इन की शिष्या थी उसके आग्रह से राजधानी गढा (म.प्र.) में रहे। श्री विठ्ठलनाथ गुंसाई जी संवत् 1623 में मथुरा आ गये। उस समय गुसांई जी की शिष्या दुर्गावती रानी ने सुन्दर विशाल भवन बनवाया था उस भवन में श्री गुंसाई जी और उनके छैः पुत्रों के लिये सात घर बन गये थे इस कारण वह स्थान सतघरा नाम से कहा जाने लगा। उस भवन के ओर पास बस्ती भी 'सतघरा' नाम से प्रसिद्धि होने लगी। मथुरा में रानी दुर्गावती द्वारा सात घरों का लेखन गोस्वामी श्री गोकुल नाथ जी विरचित 'भावसिन्धुवार्ता' ग्रन्थ में देखा जाता है। मथुरा के वरिष्ठ साहित्यकार 'प्रभुदयाल मित्तल ' ने 'वृजस्थ वल्लभ सम्प्रदाय का इतिहास' लेखन में सतघरा की पुष्टि की है।

इस सतघरा के ओर पास कोरिया जाति का जनसमाज रहता था। मथुरा के कोरिया समाज के लोग ही बृज के भक्ति संगीत में यत्र तत्र जगह

मृदंग वादन का कार्य करते यही इनका व्यवसाय कार्य था। सतघरा के निकट रहने के कारण कोरिया समाज का मृदंग वादन 'सतघरा घराना ' नाम से कहा जाने लगा। मथुरा में यह स्थान सतघरा मुहल्ला नाम से आज भी कहा जाता है।

यहाँ पर भ्रान्ति पैदा करने वाले लेखन की संक्षेप में चर्चा करते हैं। आवान मिस्त्री ने 'तबला मृदंग के घराने' लेखन में दिया है कि एक कोढ़ी पुरुष गोर्वधन में रहता। आचार्य श्री वल्लभ ने गोवर्धन जाकर उसका कोढ़ रोग शान्त कर शिष्य बनाकर श्री नाथप्रभु के सन्मुख मृदंग बजाने की आज्ञा दी। इस कपोल कल्पना का आधार न तो वल्लभ सम्प्रदाय के वार्ता ग्रन्थों में मिलता है न किसी वर्तमान आचार्य मुख से सुनने में आता है न किसी गुरजनों द्वारा सुनने में आया है। श्री वल्लभाचार्य गोवर्धन पर्वत पर आकर श्रीनाथ प्रभु की सेवा कार्य में प्रथम रामदास चौहान जोकि अप्सरा कुण्ड पर गुफा में रहते आचार्य प्रभु ने उनको शिष्य बनाकर श्रीनाथ प्रभु की श्रृंगार सेवा आदि की आज्ञा दी। आन्यौर गाँव के सदूपाडे और मानिकचंद को शिष्य बनाकर श्रीनाथ प्रभु के लिये दूध दही भोग आदि की सेवा करने को कहा और गोवर्धन के पास जमुनावतो गाँव के कुम्भनदास भक्त को श्री आचार्य ने दीक्षा मन्त्र देकर श्री नाथप्रभु के सन्मुख कीर्तन गाने की सेवा के लिये कहा। श्री आचार्य महाप्रभु द्वारा श्री नाथप्रभु की प्रथम सेवा कार्य का प्रसंग चौरासी वैष्णव की वार्ता ग्रन्थ में सदूपाडे की वार्ता में विस्तार रूप से कहा गया है। श्री वल्लभाचार्य की उपस्थिति में संगीत से सम्बधित चार ही महानुभावों के नाम वार्ता ग्रन्थों में देखे जाते हैं। प्रथम कुम्भनदास, सूरदास, परमानन्द दास और कृष्णदास अधिकारी। इनमें प्रमुख रूप से तीन हैं- कृष्णा दास अधिकारी को श्री वल्लभ ने श्री नाथप्रभु की सेवा कार्य को समुचित रुप से व्यवस्था करने का अधिकार दिया और जब तक कीर्तन गान करने की आज्ञा दी। श्री आचार्य के काल अवधि में श्री नाथ प्रभु के सन्मुख मृदंग वादन की सेवा कहीं देखी सुनी नही जाती है।

श्री गुसाई विठ्ठलनाथ जी के आचार्य काल में कृष्णदास अधिकारी की वार्ता में मृदंग वादक का नाम देखा सुना जाता है। गोकुल गाँव के पास महावन गाँव में श्याम कुम्हार मृदंग अच्छी बजाता। श्री गुसांई जी का शिष्य होकर गोकुल में नवनीत प्रिया ठाकुर जीके सन्मुख मृदंग वादन करता।

जब गोवर्धन में श्री नाथ प्रभु का सेवा कार्य वैभव बढ़ने लगा तब गुसांईजी ने श्याम कुम्हार को गोकुल से बुलाकर श्री नाथप्रभु के सन्मुख मृदंग बजाने की आज्ञा देकर सेवा करने को कहा। श्री विठ्ठलनाथ गुसांई जी के समय से ही श्री नाथप्रभु के सन्मुख मृदंग वादन की सेवा आज भी नाथद्वारा में देखी सुनी जाती है। आवान मिस्त्री ने कोढ़िया शब्द का अपभ्रंस कोरिया करके मथुरा में कोरिया घराने का लेखन किया है यद्यपि जाति विशेष की धारणा से उनका कथन अयुक्त नहीं है, किन्तु मृदंग वादन में इस नाम की चर्चा गुरजनों द्वारा सुनने को नहीं मिलती न किसी संगीत इतिहास की लेखनी में देखने में आया है। हमको गुरजनों से ऐसा सुनने में आया है कि मथुरा में सतघरा भवन के निर्माण समय से ही कोरिया समाज का मृदंग वादन सतघरा घराना' नाम से कहा जाने लगा। इस घराने की उपयोगिता बृज के भक्ति संगीत के साथ विशेषत: देखी जाती है। गुरुजनों के मुख से जो सुनने को मिला वह कुछ समय पूर्व देखने में भी आया कि बृज के प्रमुख देव मन्दिरों में और रासलीला मण्डल में कोरिया समाज के लोग ही मृदंग वादन करते। मृदंग वादन में घराने नाम का प्रचलन एवं उपयोग चारों घराने में इसी घराने का सर्व प्रथम काल जाना जाता है।

विक्रमी सत्रह शताब्दी से पूर्व मृदंग वादन में घराने नाम की उपज सुनने को नहीं मिलती है।

मथुरा सतघरा के प्रमुख वादकों के नाम हैं- मक्खनलाल, छेदाराम, चिरंजीलाल, प्रेमवल्लभ, लाल जी, गोपाल और रामस्वरुप इन सभी का तबला वादन से भी सम्बन्ध था। इनमें भी मक्खनलाल जी की विशेष प्रशंसा गुनीजनों से सुनी जाती है।

हमें यहाँ पर यह कहना भी आवश्यक है कि विक्रम की बीसवीं शताब्दी से बृज की ब्राह्मण समाज में मृदंग और तबला वादन का प्रचलन होने लगा जोकि इस वादन विद्या से उदासीन था वही समाज समयाधीन होकर अग्रसर होने लगा। समय की गति गोस्वामी तुलसीदास जी की चौपाई से ज्ञात होती है। **रहा प्रथम अब ते दिन बीते समय फिरे रिपु होही पिरीते।**

बृज में करहला गाँव संगीत विद्वानों का मुख्य केन्द्र रहा है। यहाँ के गायक और वादकों के विषय में जानकारी गुरजनों के द्वारा जो सुनने को मिली है उसी के अनुसार कहने का प्रयास है। बृज की ब्राह्मण समाज में रामहेत जी को मृदंग वादन में प्रथम माना जाता है। आपने मृदंग वादन की तालीम चरखारी राजदरबार के विश्वनाथ जी से प्राप्त की। वादन में कुशलता प्राप्त होने पर आपने अधिकांश जीवन बम्बई में व्यतीत किया। अन्त समय अपनी जन्म भूमि करहला गाँव आकर स्वर्ग सिधार गये।

इसी गाँव के फूलीराम जी रामहेत जी के शिष्य अच्छे मृदंग वादक कहे जाते, इसी स्थान के 'भिलभिली रोसन' कुशल मृदंग वादक थे। इसी स्थान के बिरजो' जी इन्होंने तबला वादन की शिक्षा बनारस के प्रसिद्ध कंठे महाराज से प्राप्त की। बिरजो जी के शिष्य आनन्द जी करहला गाँव के अच्छे तबला वादक थे। इसी गाँव में सारंगी वादन में तीन विद्वानों के नाम बताये जाते हैं- प्रथम गोर्वधनजी, दूसरे सोहन लाल जी, तीसरे चौथास्वामी। करहला गाँव के कुशल गायकों के नाम हैं- 'श्री घूरीस्वामी' 'वावडे रोसन' छेदाराम, मोहनलालजी, चेतराम जी और मधुसूदन ये सभी रासलीला और हवेली संगीत विद्या के कुशल गायक थे। इनमें घूरीस्वामी जी के विषय में जो विद्वानों से सुनने मैं आया उसे कहते है। आप गायन की तीनों विद्या 'ध्रुपद' ख्याल और ठुमरी के कुशल गायक थे। गायन में तानों का प्रयोग प्रभावपूर्ण था। घूरीस्वामी रासलीला मण्डल का कार्य करते। आप रासलीला मण्डल लेकर नाथद्वारा गये, उस समय श्री नाथ मन्दिर के गोस्वामी श्री गोवर्धन लाल महाराज की उपस्थिति में रासलीला की। श्री गोस्वामीजी आपके गायन से बहुत प्रभावित हुये और घूरीस्वामी जी को श्रीनाथ प्रभु के सम्मुख गायन सेवा करने को नाथ

द्वारा में बड़े आदर पूर्वक रख लिया तबसे आप नाथद्वारा रहने लगे। मधुसूदन घूरी स्वामी जी के ज्येष्ठ पुत्र थे। गायन में अपने पिता के अनुरुप कहे जाते किन्तु छोटी अवस्था में परलोकवासी हो गये। बृज के अन्य स्थानों में भी संगीत विद्वानों के कुछ नाम है। छाता के 'रामधन स्वामी' आन्यौर गाँव के मुंशीलाल कीर्तनिया, गोकुल के श्यामलाल कीर्तनिया, हरीबाबू चौहान कीर्तनिया और गोपी रसिक तलंग, मथुरा के चन्दन चतुर्वेदी और लक्ष्मन चतुर्वेदी, जतीपुरा गाँव के हरिवल्लभ जी, नन्दगाँव के जय गोविन्द गोस्वामी। इन्होंने नानापानसे घराने के सखाराम जी से मृदंग वादन की शिक्षा प्राप्त की। हाथीये गाँव के किशन लाल स्वामी। ये सभी विद्वान श्री विठ्ठ नाथ गुसांई जी के सात पुत्रों की परम्परा के देव मन्दिर में हवेली संगीत और रासलीला संगीत के वृज में प्रमुख संगीतकार थे। यदि इन सभी गायक वादकों को सतघरा घराने के अंतर्गत कहा जाय तो असंगति नही संगतिपूर्ण होगा। अब हमें सतघरा के मृदंग वादन विधि पर कुछ कहना है। यह तो हम पहले भी कह चुके है कि इस घराने के मृदंग वादन का प्रयोग वृज के भक्ति संगीत के साथ रहा है जोकि विविध राग ताल में बद्ध भावात्मक संगीत है। इसमें कला पक्ष को सूक्ष्म रीति से लिया गया है।

इस संगीत विद्या में गायन के साथ ताल, वाद्य, झाँझ का प्रयोग होता है। विविध तालों में झाँझ की गति के अनुसार मृदंग वादन में भी गति के अनुरुप संगत करना मृदंग वादन की कुशलता जानी जाती है। क्लिष्ट परनों की उपेक्षा रखते हुये साधारण बोल परनों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार बृज के भक्ति संगीत के साथ सतघरा घराने की मृदंग विधि को जैसा गुरजनों से सुना और देखा है अपनी सोच समझ से वैसा ही कुछ लिखने का प्रयास है।

जैसा कि पहले कहा गया है कि मथुरा में रानी दुर्गावती ने श्री विठ्ठल नाथ गुसांई जी के सात पुत्रों को सात घर बनवाये। इन्हीं सात घरों की आचार्य परम्परा में भी संगीत के प्रमुख विद्वानों के कुछ नाम जाने जाते हैं। आगे दी हुई नामावली सूची से ज्ञात करें।

विद्वत् सूची

स्थान	नाम	गायन	वादन
पोरबन्दर	गोस्वामी श्री घनश्याम लाल जी		हारमोनियम
	पुत्र		
	गो. श्रीद्वारकेश लाल जी		हारमोनियम
	पुत्र		
	गो. श्रीरसिक राय जी		हारमोनियम
बम्बई	गो. श्री मुकुन्दराय जी		वीणा
	गो. श्रीप्रशान्त बाबा		मृदंग
इन्दौर	गो. श्रीगोकुलोत्सव जी	गायन	मृदंग
	गो. श्री कल्याण राय जी	गायन	मृदंग
	गो. श्री देवकीनन्दन जी		मृदंग
मथुरा	गो. श्री वृजरमन लाल जी		मृदंग
	पुत्र		
	गो. श्री प्राणवल्लभ जी		मृदंग
जतीपुरा ब्रज	गो. श्री रणछोर लाल (प्रथमेश) जी	गायन	वादन
कामवन ब्रज	गो. श्री बृजेश राय जी		मृदंग
	गो. श्री कल्याण राय जी		मृदंग

अपनी समझ से यह कहना आवश्यक है कि इन सात घरों में गोस्वामियों के मृदंग वादन को भी सतघरा घराना नाम से कहा जाये। यह निर्विवाद सत्य है कि मृदंग वादन में घराने शब्द की उपज मथुरा के कोरिया समाज के मृदंग वादन से सर्वप्रथम जानी जाती है। कालान्तर में बृज का ब्राह्मण समाज मृदंग वादन में अग्रसर होने लगा। बृज के देव स्थान और रासलीला संगीत में ब्राह्मण जन समाज ही मृदंग व तबला वादन करते वर्तमान में भी देखा जाता है।

भारत के प्रसिद्ध मृदंग वादक श्री पुरुषोत्तम जी, अयोध्या प्रसाद जी, रामशंकर पागल दास जी और मन्नूजी आदि के मुख से मृदंग वादन के चार

घराने हमें सुनने को मिले हैं। इस विषय में भ्रान्ति पैदा करने वाले लेखन भी देखे जाते है। आवान मिस्त्री ने 'तबला मृदंग' के विविध घराने लेखन में कहा है। 'जावली घराना' 'पंजाब घराना' 'ढाका घराना' और 'बंगाल घराना' आदि तानसेन के साथी मृदंग वादक 'भगवानदास' का जावली घराना लिखा है। आवान मिस्त्री के इन चारों घराने का लेखन न तो किसी ग्रन्थकार की लेखनी में देखा गया है न किसी गुरजनों द्वारा सुना गया। इन चारों घराने के लेखन से मनोवैज्ञानिक गाथा जानी जाती है। विद्वानों के लेखन व गुरजनों द्वारा यह अवश्य जाना गया कि तानसेन के साथी भगवान दास अपने समय के अच्छे मृदंग वादक थे, किन्तु घराने सम्बन्धी चर्चा उनके मृदंग वादन में निराधार है, कही देखी सुनी नहीं जाती। गुरुजनों द्वारा हमें सुनने को मिला है कि संगीत में घराना शब्द का उपयोग तब ही कहा जाता है कि जिस वादन शैली में मूल को लेकर अपनी मौलिक उद्भावना को कहा जाय अथवा प्रकाशित किया जाय।

मृदंग वादन के चार घरानों में सर्वप्रथम सतघरा घराना विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी काल है इसके पश्चात् तीन घराने विक्रमी उन्नीसवीं शताब्दी में जाने जाते हैं। विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी पूर्व मृदंग वादन में घराने सम्बन्धी चर्चा ग्रन्थकारों की लेखनी में देखने सुनने की नहीं मिलती है। यह कहना अवश्य है कि विक्रम की शताब्दियाँ पूर्व भरत के 'नाट्य शास्त्र' की रचना में मृदंग वादन में घराने जैसी बात ज्ञात होती है। जैसे वर्तमान में घराना शब्द कहा जाता है इसी प्रकार भरत काल में मृदंग वादन में 'मार्ग' शब्द का प्रयोग होता। मृदंग वादन के १४ पाठ्यक्रम में मार्ग शब्द का लेखन पहले किया गया है। भरत ने मृदंग वादन में चार मार्गों का लेखन किया है। मार्गों के नाम है- आलिप्त मार्ग, अडिड्त मार्ग, गौमुखा मार्ग और वितस्त मार्ग। इन चारों मार्गों का तात्पर्य कहने में अपनी अल्पज्ञता प्रगट करते हुये हमारा कहने का इतना ही प्रयोजन है कि मृदंग वादन में घराने सम्बन्धी जैसी चर्चा भरत के 'नाटय शास्त्र' में ही देखी सुनी जाती है अन्य ग्रन्थकारों के लेखन में नहीं देखी जाती।

❐

मृदंग व पखाबज वादन

॥ श्रीगोवर्धन जयति ॥

मृदंग व पखाबज वादन

ताल-चौताल, मात्र 12, ताली 4, खाली 2

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	किट	तका	धद	गन
+		0		1		0		1		1	

ताल के शब्दों में प्रस्तुति बोल

(1)

धादिं ताकिट धादिं तादिं ताधा दिंता
धा ऽधा दिंता धा ऽधा दिंता धा

(2)

धादिं ताकिट तकधद गिनधा दिंता धाधा दिंता ऽधा दिंता
धा ऽधा ऽऽ धा ऽधा दिंता धा ऽधा ऽऽ धा ऽधा दिंता
धा ऽधा ऽऽ धा

(3)

धागदगिनधा दिंताऽधा दिंताऽग दगिनधा ऽदिंऽता ऽगदगि नधाऽदिं
ऽताऽकि टतकध दगिनधा ऽधा ऽधाऽ धा

(4)

गदगिनधादि ऽतागदगिन धदिंता किटतक धदगिन धातिधा
ऽऽकिटत कधदगि नधातिधा ऽऽकिट तकधद गिनधाति धा

(5)

धदगिनधादिं ऽताकत गदगिन धादिंता किटतक धदगिन धाधाधाकि
टतकध दगिनधा धाधाकिट तकधद गिनधाधा धा

(6)

किटतकधदगिन धादिंता ऽदिंता ऽकिटतकध द्दीधदगिनध
किटतकदीगडधा ऽधाऽ धाऽ धाऽधा ऽधा ऽधा ऽधा
धा

(7)

धदगिनधदगिन धादिंऽता ऽधदगि नधाऽदिं ऽताऽकि टतकध
दगिनधा धाकिटत कधदगि नधाधाकि टतकध दगिनधा धा

(8)

धाकिटतकधद गिनधादिंता ऽकिटतकधद गिनधादिंता ऽकिटतकधद
गिनधादिंता ऽधादिंता ऽकिटतकधद गिनधाऽन धाधा ऽनधा
ऽधाऽन धा

(9)

धादिंताधा दिंताकिटधा दिंताकिटधा दिंताकिटतक धदगिनधादिं
ताकिटकधद गिनधादिंता धदगिनधाऽने धाऽन धाधा ऽनधा
ऽधाऽन धाता धदगिनधाऽ नधाऽन धाधा ऽनधा ऽधाऽन धाता
धदगिनधाऽ नधाऽन धाधा ऽनधा ऽधाऽन धा

(10)

सरस्वती वंदना चक्करदार

सोहै करकम लफूऽल स्वेतत नदुकू लसाज वीणा स्वरगत
अलाऽप निरेगम पधनिस निरेसाऽ जैभा रतीस रस्वती ऽसार
देऽऽ जैभा रतीस रस्वती ऽसार देऽऽ जयभा रतीस रस्वती
ऽसार देऽऽ जैजै जैजै

(जय शब्द दो मात्रा का दम देकर दो बार और कहना है।)

(11)

मिश्र गत में दूसरी सरस्वती वंदना

जयति जयमा सार दाअघ हरन
बुद्धिप्र दाय नीसुख दाय नीभुज चार
वीणा धार पुस्तक कमल वाहन हंस
सोभित सुभृ कौमल शुक्ल अम्बर
क्रीट शीशसु श्रवन कुण्डल कंठ मुक्ता
माल सुभगसि दूर वैदी दिव्य राजत
करत अस्तुति सकल सुरगन गान गावत
बजत तालमृ दंग धुमकिट ग्रगिन
गिणगिण थौऽग दिगदिगथेइ ताथुगा
तकथेइ करहु कृपासु दृष्टि हेरनि वेर
निजजन जानि आपन सरन दीजै
कीजि येमम हृदय भक्तिप्र कास माता
ऽसार देसा ऽरदे ऽसार दे जयजय माता
ऽसार देसा ऽरदे ऽसार दे जयजय माता
ऽसार देसा ऽरदे ऽसार दे

(12) परन

ताता तिटकिट कतिटक तागेतिट ताकिटथु किटकत कतिटक
तागेतिट तगतिट किटधुम किटतक धदगिन दिंदिं तिटकिट
कतिटक तागेतिट तकिटथु किटकत कतिटक तागेतिट तगतिट
किटधुम किटतक धदगिन थुंथुं तिटकिट कतिटक तागेतिट
तकिटथु किटकत कतिटक तागेतिट तगतिट किटधुम किटतक
धदगिन नंनं तिटकिट कतिटक तागेतिट तकिटथु किटकत
कतिटक तागेतिट तगतिट किटधुम किटतक धदगिन धाऽ ताऽ
तगतिट किटधुम किटतक धदगिन धाऽ ताऽ तगतिट किटधुम
किटतक धदगिन धा

(13)

किटतकता किटतकता किडाऽन धिडाऽन धाकिटतकिटत
काकिटघुमकिट तकिटतकाकिट तकिटतका धाकिटतकिटत
काधिडा ऽनतक धदगिन धाऽऽ ताऽऽ धाकिटतकिटत
काधिडा ऽनतक धदगिन धाऽऽ ताऽऽ धाकिटतकिटत
काधिडा ऽनतक धदगिन धा

(14)

धिडाऽन किटतकता किडाऽन किटतकता ताधिडा ऽनकत
धिडाऽन किटतकता कृधाकिट ताधिडा ऽनधिडा ऽनतक
धदगिन धाधिडा ऽनधिडा ऽनतक धदगिन धाधिडा ऽनधिडा
ऽनतक धदगिन धाकृधा किटता धिडाऽन धिडाऽन तकधद
गिनधा धिडाऽन घिडाऽन तकधद गिनधा धिडाऽन
धिडाऽन तकधद गिनधा कृधाकिट ताधिडा ऽइनधिडा ऽनतक

धदगिन धाघिडा ऽनधिडा ऽनतक धदगिन धाधिडा ऽनधिडा
ऽनतक धदगिन धा

(15)

धाऽनधि किटकत कात्रकधि किटकत धिडाऽन किटतकता
धेत्धातिर किटतकता किडाडन धिडाऽन धात्रकधि किटधेता
तातिरकिट धेत्रा किटधग नधाकिटतक दीगडधाऽ नधाऽन
धाकिटतक दीगडधाऽ नधाऽन धाकिटतक दीगडधाऽ नधाऽन धा

(16)

धिधितिट धिधितिट तकिटथु किटकत धाकितकधि किटतक
ताकिटतकधि किटतक धिननाना धिनधाऽ धिनधात्र कधिकिट
धाऽगद गिनगद गिनतऽ धिनाऽन धडऽन्न किटतकता किटतकि
टधाऽन धातकि टधाऽन धातकि टधाऽन धा

(17)

कृधाऽन कृधाऽन कृधाकिट कृधाकिट धकिटध किटधेत
तकाऽन धाऽताऽ किटतकताऽ नधाऽन गदिंता ऽनधिदी कतगद
गिनधा धितिटक ऽतधनि तकऽत कतधा किटतकदीगड धाकत
धाकिटतक दीगडधा कतधा किटतकदीगड धा

(18)

धकिटधा गेतिटकि टतकिट तागेतिट धाकृधाकि टधकिट
धागतिट तागेतिट धाकृधाऽ नधाकिट धाधाकिट कृधाकिट
गदिऽता ऽनगद गिननागे तिरकिटतकता धिधितिट धिधितिट
धित्रकधि किटकत तधिडा ऽनकता ऽनथुथु किटतकदीगड
धाथुथु किटतकदीगड धाथुथु किटतकदीगड धाऽ ताऽ तृधिडा

ऽनकता ऽनथुथु किटतकदीगउ धाथुथु किटतकदीगड धाथुथु
किटतकदीगउ धाऽ ताऽ तृधिडा ऽनकता ऽनथुथु किटतकदीगड
धाथुथु किटतकदीगड धाथुथु किटतकदीगड धा

(19)

चक्करदार परन

तिककिटधेत् तिरकिटधेत् धिटकिट धिलाऽग ताधिला ऽगतक
धिलाऽग धिलाऽग धडऽन्न किटकता धिदाऽन धिधितिट
धितिटक ऽतधिदा ऽनधेत् धननाना धराऽन धगदिग नधगदि
गनधग दिगनध गदिगन धाधेत् धननाना धराऽन धगदिग
नधगदि गिनधग दिगनध गदिगन धाधेत् धननाना धराऽन
धगदिगि नधगदि गिनधग दिगिनध गदिगन धा 'धद् गिन'

(दो मात्रा गैप देकर दोबारा और)

(20)

धकिटध गदिऽन गिनतागे तिटकिट धगनधि किटकृधा ऽनकृधा
किटतक किटतकथु ऽनतिट धिताऽन किटतकता कृधकधि
किटधदि ऽन्नदिग दिनगिन धिडाऽन तृधिडा ऽनधिरधिर कऽत्ध
नितकत धाऽ कतधा ऽकत धाधिरधिर कऽत्ध नितकत धाऽ
कतधा ऽकत धाधिरधि कऽत्ध नितकत धाऽ कतधा ऽकत धा

(21)

चक्करदार

त्रकधेत् धेत्धिकि टधाऽन धादीकत् धाकिटतकधि किटधेत्
धिरकिट कृधाकिट कृधाऽन धाता ऽनधा ताधा किडनाऽधि
तादी तकिटतकाधुम किटतकधदगिन धाता किडनाऽधि तादी

तकिटतकाधुम किटतकधदगिन धाता किडनाऽधि तादी
तकिटतकाधुम किटतकधदगिन धा 'धद गिन'

(दो मात्रा दम देकर दो बार और)

(22)

चक्करदार

धाता धाऽ किटतकदीगड धाऽ गदगिन धाऽ कति धाऽ
धडऽन्न धाकिटतकधुम किटतकधेत् धिडाऽन तिटधिधि ऽताऽन
धिनधा ऽधिन धाऽ धात्रकधि किटधिद्र गधिकिट धेत्तका
ऽनतिरकिट तकताऽध नितक् ध्धातिरकिट तकताऽध नितक्
ध्धातिरकिट तकताऽध नितक् ध्धा 'धद गिन'

(दम देकर दो बार और)

(23)

परन

धगतिट किटधग तिटकिट तगतिट किटतग तिटकिट धाकिटतकधि
किटधग तिटकिट ताकिटतकधि किटधग तिटकिट धिनगद
गिननगि नधाऽन धित्रकधि किटनगि नताऽन धिटकृधा ऽनधिट
कृधाऽन कृधेऽधि किटकत कताऽन धकिटध किटतकि टतकिट
धेता धाकिटतकधुम किटतकताऽ नधाऽन ताऽनधा ऽनताऽ
नधाऽन धादित् धाकिटतकधुम किटतकताऽ नधाऽन ताऽनधा
ऽनताऽ नधाऽन धादित धाकिटतकधुम किटतकता नधाऽन
ताऽनधा ऽनता गधाऽन धा

(24)

पडार परन

ताता किटकिट तकिटत काऽकिट तकिटत काऽकिट तकिटत काऽकिट दीदी किटकिट तकिटत काऽकिट तकिटत काऽकिट तकिटत कऽकिट थुथु किटकिट तकिटत काऽकिट तकिटत काऽकिट तकिटत काऽकिट नाना किटकिट तकिटत काऽकिट तकिटत काऽकिट ताकिट किटतकि टऽतकाऽ दीकिट किटतकि टतका थुकिट किटतकि टतका नाकिट किटतकि टतका तकिटत कादिकि टतका थुकिटत कानकि टतका तकिटत काकिट तकधद गिनधा धाकिट तकधद गिनधा धाकिट तकधद गिनधा धा

(25) परन

धाधिला ऽगधुम किटधिला ऽगतक धाकिटतकधि किटधिला ऽगतक धिलाऽग कतकधि किटधिला ऽकत गदगिन धेत्तग ऽन्नधे त्रातिरकिट धेत्रा तगऽन्न धेता धा तकधुम किटधिला ऽगधिला ऽगकत गदगिन धा तकधुम किटधिला ऽगधिला ऽगकत गदगिन धा तकधुम किटधिला ऽगधिला ऽगकत गदगिन धा

(यही परन दून की लय में बजाने पर दो मात्रा दम देकर 'फरमायसी' चक्करदार बन जायेगी।)

(26)

धात्रक धेऽधगि नधेऽन गिनधेऽ धाकिटतकधि किटतकि टधेऽता गदगिन धाऽना ऽडधा दिंता कृधाऽन तिरकिटतकता ऽनधिकि

टताऽन धिधिकिट धिताऽकि तांऽकिटतक ताऽनधि नननन धात्रकधि किटकत धाऽक ऽतधा ऽकत धाधत्र कधिकिट कतधा ऽक ऽतधाऽ ऽकतधा धात्रकधि किटकत धाक ऽतधा ऽकत धा

(27)

धकिटध किटधग दिंधग दिंनग तिटतग तिटकृधा किटतकि टधाऽन थुथुकिटतक दीण्ऽडधा ऽताधा किटतकदीगड धिकिटधा ऽनधिकि टधाऽन धेत्रा धेतग ऽन्नधा तिरकिटतकता किटतकदीगड धातिधाऽ नधातिधा ऽनधाति धाऽ तातिरकिट तकताकिटतक दीगडधाति धाऽनधा तिधाऽन धातिधा ऽता तिरकिटतकता किटतकदीगड धातिधाऽ नधातिधा ऽनधाति धा

(28)

दुचाली परन

धगतिट किटकृधा ऽनधुम किटतक धातिरकिटतक ताधितिर किटतकता धिलाऽग धगन धगदिग नगिन नतिटता धिनाऽ धिनधा धितिट धिधितिट धाऽन तिरकिटतकता कतिट कतकत् धाऽन किटतकदीगड धाऽन किटतकदीगऽ धाऽन कतकत धाऽन किटतकदीगड धाऽन किटतकदीगड धाऽन कतकत् धाऽन किटतकदीगड धाऽन किटतकदीगड धा

(29)

फरमायशी चक्करदार

धकिटध गदिंऽन किटतागे तिटकता नानातिरकिट तकताकता ऽनधा तिधाऽ नताऽन धाता धात्रकधि किटधिद्र गधिकिट

धेत्धड ऽन्ननग तिटतग तिटकृधा किटधग नधाऽन ताधा
किटतकदीगड धाकिटतक दीगडधा किटतकदीगड धाधाग
नधाऽन ताधा किटतकदीड धाकिटतक दीगडधा किटतकदीगड
धाधग नधाऽन ताधा किटतकदीगउ धाकिटतक दीगडधा
किटतकदीगड धा 'दिं ऽताऽ'

(दो मात्रा दम देकर दो बार और)

(30)

छै धाकी परन

धाकिट तकधुम किटतकि टतकाऽ तकधुम किटतकि टतकाऽ
तकधिला ऽगतकि टतकाऽ धेता धेत्धिधि किटतकि टतकाऽ
किटतक धुमकिट तकधद गिनधा धाकिट तकधद गिनधा
धाकिट तकधद गिनधा धा

(31)

नौ धा की परन

धाकिट किटतकि टतकाऽ किटतक धुमकिट किटतकि टतकाऽ
किटतक त्किट किटतकि टतका किटतक न्किट किटतकि
टतकाऽ किटतक तकिटत काऽकिट धुमकिट तकधद गिनधा
ऽन धा धा धाकिट तकधद गिनधा ऽन धा धा धाकिट
तकधद गिनधा ऽन धा धा धा

(32)

बारह धाकी परन

धाकिट तकधुम किटतकि टधिकिट ताकिटधि किटतकि
टधिकिट धुमकिट तकधिला ऽगधुम किटतक धदगिन धाकिट

तकधद गिनधा धाधा धाकिट तकधद गिनधा धाधा धाकिट
तकधद गिनधा धाधा धा

(33)

पन्द्रह धाकी परन

धाकिटतकधि किटधुम किटतकि टथुकिट तकिटथु किटकत
धिधितिट कतधिधि तिटधिला ऽगधिला ऽगधुम किटतक धदगिन
धाधा धाधा धाकिट तकधद गिनधा धाधा धाधा किटतक
धदगिन धाधा धाधा धा

(34)

दुचाली परन

धिकिटत गनधग तिटकृधा किटदिंता किटधकि टधादिंता
किऽऽधादिंता ऽधादिंता धगनधिकिटधागे तिटकतागदगिन
धगऽदिगनधग दिगनधगदिगन धाता किडधादिंता धगनधिकिटधागे
तिटकतागदगिन धगऽदिगनधग दिगनधगदिगन धाता किऽधादिंता
धगनधिकिटधागे तिटकतागदगिन धगऽदिगनधग दिगनधगदिगन धा

(35)

मिस्त्रगत परन

धाकिट धगतिट तकिट तगतिट धात्रक धिननाना तकिट
धिननना कृधेऽ धिकिटता कताऽ कतगद गिनन गननग ताऽन
धाता धाऽन धिकिटक ताऽन किटतकदीगड धाऽन धाता धा
ऽकत धा किटतकदीगड धाऽन धाता धा ऽकत धा
किटतकदीगड धाऽन धाता धा ऽकत धा

(36)

मिश्रगत परन

धगन धगतिट तगन तगतिट धाकृधा तिटधग तिटकृ धाऽदीऽ धिकिट धिधिकिट धेऽत् धादीकत् धाऽन धाता धाकृ धाति धाध गनधग तिटकृ धाति धाकृ धाति धाकृ धाति धा

(37)

आढीलय

तऽक धिकिट धात्रक धिकिट धिद्रग धिकिट धिदित् ताऽन कतक धिकिट कतिट धादिंता धाकृ धाऽन धिटकृ धाऽन धगऽ दिगन नगिन तकिट तगन धाऽन धा धाऽन धा तकिट तगन धाऽन धा धाऽन धा तकिट तगन धाऽन धा धाऽन धा

(38)

आड़ी

धाऽन धाऽन तिरकिटतक ताऽन कतग दगिन नगिन ताऽन धिधिकि टधिधि किटधि धिकिट धाकिटतक धिकिट धादिंता कऽत् धेऽधि रकिट धिटकृ धाऽन धाकृ धाऽन धाकृ धाऽन धा

(39)

धगतिट किटतग तिटकिट तकधुम किटग्रगिं ऽताऽन धाकिटतकधि किटताकिट तकधिकिट धिधिकिट धिधिकिट धेता धेत्तका ऽनधादी कताऽन तकिटतकाकिट तकिटतकाकिट तकिटतका धागद गिनगदि ऽताऽन धाता ऽनधा ऽताऽन धा

(40)

धगतिट किटधिडा ऽनतग तिटकिट धगतिट धिडाऽन तगतिट धिडाऽन धाधिडा ऽनधिड नगतिट धिडाऽन तुधिडा ऽनधागे तिटकता गदगिन धाधिडा ऽनधागे तिटकता गदगिन धाधिडा ऽनधागे तिटकता गदगिन धा

(41)

तिरकिटधेत् तिरकिटधेत् धिटधिट कृधाकिट कात्रकधि किटकता ऽनधिधि तिटधिधि ऽताऽन धिधिदी धाकिटतकधि किटधाकिट तकधिकिट धेत्रा कृधेऽधि किटधा त्रकधिकि टधाऽन धा त्रकधिकि टधाऽन धा त्रकधिकि टधाऽन धा त्रकधिकि टधाऽन धा

(42)

धितिट धिधितिट दिगन दिगदीऽ ताऽत किटतक ताऽन तिरकिटतकता कतिट धाकत् धाऽन धाकत् धाऽन तिरकिटतकता कतिट धाकत् धाऽन धाकत् धाऽन तिरकिटतकता कतिट धाकत् धाऽन धाकत् धा

(43)

धकिट धगतिट किटत किटतक धगन धागेनाना तगन तागेनाना कृधेऽ धिरकिट कतिट ताकत् धाऽन किटतकदगड धाऽन धाता धाऽन किटतकदगड धाऽन धाता धाऽन किटतकदीगड धाऽन धाता धा

(44)

अंक परन चक्करदार

एक एकदो ऽएक दोती ऽनएक दोतीन चार एकदो तीनचार
पाँच एकदो तीनचार पाँचछै ऽएक दोतीन चारपाँच छैसा
ऽतएक दोतीन चारपाँच छैसात आठ एकदो तीनचार पाँचछै
सातआ ऽठएक दोतीन चारपाँच छैसात आठ 'एक दो'

(दो मात्रा दम लेकर दोबारा और अंक परन को बजाने वाले बोल)

(45)

धाऽ धिनधा ऽगद गिनधा ऽकत गदगिन धा तिटकता गदगिन
धा तिटकता गदगिन धिनधा ऽतिट कतागद गिनकत धिनधा
ऽतिट कतागद गिनकद गदगिन धाऽ तिटकता गदगिन कतगद
गिनधा ऽतिट कतागद गिनकत गदगिन धा 'गद गिन'

(दो मात्रा गैप देकर दो बार और चौताल ठेका की दुगन, तिगुन और चौगुन में चक्कर दार बजाना)

(46)

दुगुन

धाधा दिंता किटधा दिंता किटतक धदगिन धाकिट तकधद
गिनधा किटतक धदगिन धादि ताधा धादि ताकिट धादि
ताकिट तकधद गिनधा किटतक धदगिन धाकिट तकधद
गिनधा दिंता धाधा दिंता किटधा दिंता किटतक धदगिन
धाकिट तकधद गिनधा किटतक धदगिन धा

(47)

तिगुनी लय में चक्करदार

धाधादि ताकिटधा दिंताकिट तकधदगिन धाकिटतक धदगिनधा
किटतकधद गिनधादिं ताधाधा दिंताकिट धादिंता किटतकधद
गिनधाकिट तकधदगिन धाकिटतक धदगिनधा दिंताधा धादिंता
किटधादि ताकिटतक धदगिनधा किटतकधद गिनधाकिट तकधदगिन
धा

(48)

चौगुन लय चक्करदार

धाधादिंता किटधादिंता किटतकधदगिन धातिधाकिट तकधदगिनधा
तिधाकिटतक धदगिनधाति धादि ताधाधा दिंताकिटधा दिंताकिटतक
धदगिनधाति धाकिटतकधद गिनधातिधा किटतकधदगिन धातिधा
दिंता धाधादिंता किटधादिंता किटतकधदगिन धातिधाकिट
तकधदगिनधा तिधाकिटतक धदगिनधाति धा

अब आगे कुछ वंदना परनौ का लेखन मृदंग वादन में करते हैं। संगीत में मृदंग तबला वादक विद्वान गुनीजनों ने देवी देव आदि नामों से वन्दना परनों का लेखन किया है, किन्तु यहाँ पर हमारे ब्रजधाम के संत, भक्त, आचार्य, मूर्ति स्वरूप और भगवान के लीला स्थलों के नामों का लेखन है।

यह मैं अपनी अल्पबुद्धि ज्ञान से कहता हूँ कि मृदंग वादन में इन नामों की परनें शायद ही देखने सुनने को मिलें।

(49)

महारानी श्री यमुना वंदना

धाकृधा ऽनकृधा किटधाकिट तकधिकिट क्रधेऽता धिधितिट
किडाऽन घिडाऽन श्रीयमु नेऽकीर गाऽनध्याय ऽनअस नाऽनआ

ऽचमन पाऽनस कलकऽ ल्यणहि येऽआऽ वतकुम रकाऽन किटतकता धेतग ऽन्नधादी कत्धग नधगन धिटधिट धगतिट तिटतिट तगतिट किटतकता नधाऽन भानुसु तायम भगनी पातक दमनी कृष्णप्रि यारस रमणी करिकृपा ऽदाऽन ताकृता ऽनचर ननप्रणा ऽमयमु ना यमुना ऽयमु नाचार ननप्रणा ऽययमु ना यमुना ऽयमु नाचार ननप्रणा ऽयमु ना यमुना ऽयमु ना

(50)

रसिकाचार्य श्रीस्वामी हरिदासजी की वंदना परन (मिश्रगत)

जयति जयहरि दास ललिता रूप जुगलस्व रूप सेवत रसिक आचा रजस धननिध बनब सतवृं न्दावि पिनमधि चरन सरनन राखि येजन जयति जयहरि दास जयहरि दास जयजय जयति जयहरि दास जयहरि दास जयजय जयति जयहरि दास जयहरि दास

(51)

वृन्दावन में 'समाज संगीत' के जन्मदाता गोस्वामी श्री हित हरिवंश जी की वन्दना मिश्रगत में

जयति जयश्री व्यास सुवनप्र संस श्रीहरि बंस बन्दौ प्रघट बंशी रूप हितसखि कुंज सेवा सदन सेये राधि काव ल्लभत किटतक धाम ऽऽत किटतक धाम ऽऽत किटतक धाम राधि काव ल्लभत किटतक धाम ऽऽत किटतक धाम ऽऽत किटतक धाम राधि काव ल्लभत किटतक धाम ऽऽत किटतक धाम ऽऽत किटतक धाम

आगे वाली परन में वृन्दावन के मुख्य स्थलों के कुछ नाम है और श्री मूर्ति विग्रह के नाम और तीन संत महानुभावों का परिचय है। इसी भाव से इसका नाम 'श्रीधाम वृन्दावन दरसन' कहने का भाव है।

(52)

श्रीधाम वृन्दावन दरसन परन

धात्रकधि किटधिधि किटतक धदगिन चलिवृ न्दावन धामनि रखबं शीवट यमुना केतट ताके निकटद रसकरि महादे ऽवगो पेश्वर नाथ धगनध गनतग नतगन धदगिन श्रीनिध वनहरि दासद रसकरि श्रीहरि रामव्या ऽसकिशो ऽरवन घिट्त गनधाकिट तकिटतका सेवा कुंजहे ऽरहरि बंशध नितधन धनजी वनजन धात्रकधि किटधात्र कधिकिट धाति (मिश्रगत) धगन धगतिट तगन तगतिट निरख बाँके विहा रीरा धार मणरा धिका वल्लभ दरस दुरलभ ग्रगिन तातक धाऽन किटतकदीगड धा ग्रगिन् तातक धाऽन किटतकदीगड धा ग्रगिन् तातक धाऽन किटतकदीगड धा

(53)

मथुरा पुरी दरसन परन

जैजै जैबृज धामम धुपुरीऽ सोहै अतिअभि रामज नमजहाँ लियौकृ ऽष्णाभग वानधि किटधाकिट तकधुमकिटतक धेत्रा धेत्तग ऽन्नधग दिगनध गदिगन श्रीरं गेश्वर महादे ऽवकत कृतऽत्र केशव देवद रसद्रग करियैद्वा ऽरका धीससे ऽवतकि मदनमो हनश्री युगलच रनधेत् तकाऽन धाऽवि श्राऽमघा ऽटअस नानकि ऽजिये जमुनापा ऽनतिरकिट तकतान धेत्रा किटतक धदगिन धाधा किटतकता ऽनधाऽन धाकिटतक ताऽनधा ऽनधा किटतकता नधाऽन धा धाधा किटतकता नधाऽन धाकिटतक तानधा ऽनधा किटतकता नधाऽन धा धाधा किटतकता नधाऽन धाकिटतक तानधा ऽनधा किटतकता नधाऽन धा

(इस परन की तिहाई में 24 'धा' का प्रयोग है। इसका भाव है कि विश्राम घाट के दायें भाग में वारह घाट है, इसी प्रकार बायें भाग में भी वारह घाट है ऐसा 'आदि वारह पुरान' में इन घाटों के नाम का उल्लेख है। इन चौबीस घाटों का भाव इस परन की तिहाई में 'धा' के प्रयोग में किया है। तिहाई के एक पल्ले में आठ धा आते है, चौबीस 'धा' को यमुना के चौबीस घाटों के भाव से जाना जाता है।)

(54)

काली नाग नाथन परन

नाचत नटवर मुरलीअ धरधरि कालीय फनपर दिंता मुद्रिताम् थौऽगथौ ऽगधिक ताधिला ऽगतक धाकत कतिटक तागेतिट दिगदादिगदिग थेइकत कतिटक तागेतिट दिगदादिगदिग थेइकत कतिटक तागेतिट दिगदादिगदिग लटपटा ऽतझट पटाऽत फुंफु फनसह सधाऽर विषमुख डारत त्रामथेइ ताथेई ततथेइ आथेइ ताण्डव गतिभर तनिरुत उरगफ ननधर तचरन ताऽनधा ऽताऽन धाताधा किटतकदीगड धाथुथु किटतकदीगड (मिश्रगत) धाऽकृ धेध्धे धडऽन् नगतिट थौऽग थेइया बजत नूपुर श्रवन कुण्डल मुकट झलकत सुभग उरबन माऽल जसुदा लाल मदनगु पाऽल केऽदिम दिमक तादिम दिमक ताऽदिम (दूनीलय) तागडधादी गडधादीदी किडधादीगड धातागडधा किटतकतडधा दीगडधाता गडधादीगड धाऽता गडधादीगड धाऽता गडधादीगड धा (बराबर लय) धाधा धाअति आरत उरगपुकारत् हेदया ऽलहेऽ कृपाऽल नंदला ऽलअति विहाऽल टूटत अगअं गमोर बिनय शुककर तजोर त्राहित्रा ऽहित्रा हित्राहि माम् ऽत्राहि माम् ऽत्राहि माम्

(55)

नंदीस्वर परन

इस परन में नंदग्राम के स्थलों के नाम है जहाँ श्रीकृष्ण और बलराम ग्वालों के साथ खेलते और गाय चराने जाते थे।

नन्दी स्वरनंऽ दगाम विहरत वलराऽ मश्याऽम धात्रकधि किटघिद्र गधिकिट धिननाना धिननगिन नधाऽन तिरकिटतकता ऽनधेत् कताऽन पावन सरसुभ गठाऽम सरवनसं ऽगकर तरंऽग नचतत ऽत्रगति सुधंग धाकिटतकधुम किटतकथेइ तथेइ आशे स्वरदर सपरस कदमटे ऽरगाय नहेऽर धकिटध किटतकि टतकिट कृधाकिट धाकृधा ऽनधेत् धिरकिट तकधिकि टकिताऽ धेत्रा कृष्णाकुं ऽऽजसु दाकुंऽड मधुसूऽ दनललि तकुंऽड गावत शुकपर नछऽन्द रामश्या ऽमचर नबंऽद किडधेता तिरकिटतकता किटतकदीगड धा रामश्याम ऽमचर नबंऽद किडधेता तिरकिटतकता किटतकदीगड धा रामश्याम ऽभचर नबंऽद किडधेता तिरकिटतकता किटतकदीगड धा

(वृन्दावन के सप्त स्वरूप दरसन परन)

इस परन में सेवक और सेव्य दोनों के नाम हैं। वर्तमान समय में 'श्रीबॉकेबिहारी' 'राधावल्लभ और 'राधारमण' ये तीन स्वरूप वृन्दावन में हैं। 'श्रीगोविन्द देव' 'गोपीनाथ' जयपुर में है। 'मदनमोहन' स्वरूप करौली में और 'जुगलकिशोर' स्वरूप औरछा में विराजमान हैं। इन सातों स्वरूप के भक्त एवं सेवकों के नाम परन से जान लेंगे।

(56)

(मिश्रगत में)

धगन धगतिट तगन तगतिट कृधेऽ धगतिट धगन धाकिटतक दिंदिं नानानाना कतिट कतकत रुऽप केगोऽ विन्द ठाकुर मदन

मोहनस नाऽत नातक धाऽन ताऽनकृ धाऽन गोपी नाऽथ मधुसे
वतस दाकत कतिट तारा धार मणगो पाल भट्टल डाव तेराऽ
धिका बल्लभ लाल हितहरि वंश गायरि झाव ते (सीधीलय)
धाकता ऽनधिट कताऽन धानीकत् धाकिटतकधि किटगदि
ऽन्नधाकिट तकिटतका जुगलकि शोऽरव्या ऽसके ठाकुर
घिटतिट दिंनति टताऽन तिटता धाकिटतकधि किटस्वा मीहरि
दासके कुंजबि हारी निधवन वास वृन्दा वनरसि कसेव्य गावत
शुकमन हुलास ध्वनिमृद अंगगति विलास तिरकिटता ऽनकत
गदगिन धाकृधा ऽनधा कृधाऽन धातिरकिट तकताऽन कतगद
गिनधा कृधाऽन धाकृधा ऽनधा तिरकिट तकता ऽनकत गदगिन
धाकृधा ऽनधा कृधाऽन धा

(57)

श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल वंदना

श्री बल्लभाचार्य का जन्म संवत् 1535 में हुआ। आपने कृष्ण भक्ति का प्रचार किया। आपके द्वितीय पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी ने श्रीकृष्ण भक्ति सेवा में संगीत का प्रचार प्रसार किया।

(मिश्रगत में)

जयति जयव ल्लभश्री विट्ठल पुष्टि रीतप्र कास कीनी कियो
माया बाद खण्डन भक्ति मन्डन करौ वंदन जयति जयजय
तऽत किटतक थेइ तीधाकिटतक थेई तीधाकिटतक थेइत
किटतक थेई तीधाकिटतक थेई तीधाकिटतक थेइत किटतक
थेई तीधाकिटतक थेइ तीधाकिटतक थेई

(अष्ट सखा नाम ध्यान वंदना)

श्री कृष्ण भगवान की द्वापर काल लीला के अष्ट सखा हैं, जोकि कलियुग में विक्रम सोहलवीं शताब्दी में भूतल पर प्रगट हुये। इस कारण इनको अष्ट सखा कहा जाता है। इनमें सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास और कृष्ण दास ये चारों श्री वल्लभाचार्य जी के शिष्य हैं। छीतस्वामी, गोविन्ददास, नन्ददास और चतुर्भुज दास ये चारों श्री विट्ठलनाथ गुंसाई जी के शिष्य हैं। वे सभी संगीत और साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान थे। इन्होंने विविध राग रागिनियों में ठाकुर जी की लीलाओं का गान किया जिसे आज 'कीर्तन संगीत' या 'हवेली संगीत' कहा जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से इन आठों भक्त वाणी को 'अष्टछाप' कहा जाता है।

(58)

अष्टछाप वंदना

(आडीलय)

धाऽन धिकिट धगन धिकिट धेता ऽधेऽ धेऽत काऽन अष्ट
छाऽप धरियै ध्यानऽन सूर दास प्रथम जाऽन तिरकिटतक ताऽन
धिटक ताऽन धगति टधग धेत्त काऽन कुंभन दास परमा नंद
धाकिटतक धुमकिटतक कतग गिन्न नगन नगन धिनना नाधिन
नानाधि नधा कृष्णा दास भनित राऽस थेइथे इथेइ ताधाकिट
तकथेइ छीत स्वामी नंद दास धाकिटतक धिकिट ताकिटतक
धिकिट धिधिकि टधिधि किटधि धिकिट गोविद दास करत
राऽग ताऽन लाऽप कृधाकि टधग तिटधि ताऽन चतुर्भु जप्रभु
धानीत काऽन धा ता धाऽन धिकिट धिद्रग धिकिट दिगना
नाकिट तऽग्र गिन्न धा तऽग्र गिन्न धा तऽग्र गिन्न धा ता
धाऽन धिकिट धिद्रग धिकिट दिगना नाकिट तऽग्र गिन्न धा
तऽग्र गिन्न धा तऽग्र गिन्न धा ता धाऽन धिकिट धिद्रग

धिकिट दिगना नाकिट तऽग्र गिन्न धा तऽग्र गिन्न धा तऽग्र गिन्न धा

(नव निधि स्वरूप वंदना)

आचार्य श्री वल्लभ परिवार में ये नौ सेव्य स्वरूप प्रमुख माने जाते हैं। प्रथम श्रीनाथजी गोवर्धन पर्वत पर विराजमान रहते है। अन्य आठ गोकुल में विराजमान रहते है। वर्तमान में श्रीनाथजी, नवनीत प्रिय और विट्ठलनाथ जी नाथ द्वारा (राजस्थान) में विराजमान है। श्री 'मथुरेश' जी कोटा (राजस्थान) में हैं। 'द्वारकानाथ' जी कॉकरोली (राजस्थान) में है। 'बालकृष्ण' जी सूरत (गुजरात) में चले गये। श्री गोकुलनाथ, गोकुल में 'गोकुल चंद्रमा' और 'मदनमोहन' जी दोनों कामवन ब्रज में विराजमान है। नवनिधि मूर्ति स्वरूप के विषय में इतना ही परिचय पर्याप्त है। समझता हूँ परन में प्रथम 'गोवर्धननाथ' नाम श्रीनाथ जी का उपनाम कहा जाता है।

(59)

नवनिधि स्वरूप वंदना परन

धाकिटतकधे ऽतधेत् धेत्धेत् धिरकिट धानीतक ऽतकत धाकिट कुधाकिट धाऽत किटतक श्रीगो वरधन नाऽथप्र घटसे येश्री वल्लभ लाऽउल डाये श्रीवि ट्ठलनव नीतप्रि याभल धाऽनधि किटधाकिट तकधिकिट धिधिकिट धिदिंऽता किटतक तकतका ऽनतक धाऽति किटतकधदगिन धाता धाऽ ताधा ऽऽता सप्तस्व रूपध्या ऽनधरि मथुरा नाथरू ऽपरस पानध गिनधर हृदयश्री विट्ठल नाथत गिनतग धगतिट धगतिट धागिनधि किटधिट दिगदिग दिनदिन दरसट्टा ऽरका नाथश्री गोकुल नाथध किटकिट धाधाकिट कुधाकिट धदिंत किटतक धाऽनधा ऽनकिटतक ताऽनता ऽनपं चमश्री गोकुल चंद्रमा ऽहरत छविछमा ऽललित बालकृ ऽष्णवलि हारम दनमो हनकुमा ऽरत्

तागडधा दीगडधा दीदीकिडधा दीगडधा तागडधाथू थूकिटतकदी गडधागदगिन धाकतगद गिनधाऽधिन धातागड धादीगड धादीदी किडधादीगड धातागड थाथूथूकिट तकदीगडधा गदगिनधा कतगदगिनधा ऽधिनधा तागडधा दीगडधा दीदीकिडधा दीगडधा तागडधाथू थूकिटतकदी गडधागदगिन धाकतगद गिनधाऽधिन धा

इस परन की तिहाई में नौ 'धा' का जो प्रयोग है उसका भाव है कि नौओं देव स्वरूप को हाथ जोड़कर प्रणाम करना 'धा' शब्द का प्रयोग दोनों हाथों से एक साथ बजाने पर धा ध्वनि का बोध होता है। यहाँ हम धा शब्द से नौओं देव स्वरूपों को हाथ जोड़कर प्रणाम करने का भाव है।

(60)

श्री वल्लभाचार्य और पुत्र पौत्रादि वंदना

श्रीव ल्लभपद कमलन माऽमि गुणनिध गोपी नाथसु वनपुरु सोत्तम लाल श्रीवि ट्ठलव्रज भूऽयरू ऽपप्रध टेगो पाल धाकिटतकधि किटधकिट तकधिकिट धगतिट कृधेता किटतकदीगड धा धा (मिश्रगत) धाऽन धिटधिट धगन धिटधग तिटकृ धातिट भजहु श्रीगिर धरकृ पानिध सरन गहगो विन्द प्रभुकी बाल कृष्णप्र णाम धनधन धनित निसदिन रटत जनमन गुनन गोकुल नाथ श्रीरघु नाथ श्रीयदु नाथ जयजय जयति जयघन श्याम किटतकदीगड धा किटतकदीगड धा जयघन श्याम किटतकदीगड धा किटतकदीगड धा जयघन श्याम किटतकदीगड धा किटतकदीगड धा

गोस्वामी श्रीहरिराय वंदना

संक्षेप में परिचय

श्रीहरिरायजी का जन्म संवत् 1640 में बृज के गोकुल ग्राम में हुआ। आप श्रीविट्ठलनाथ जी के द्वितीय पुत्र गोविन्दराय जी के पौत्र है। आपने 166 ग्रन्थ संस्कृत में और 52 ग्रन्थ गद्य पद्यात्मक बृजभाषा में रचना की। आप भक्तिभाव से पूर्ण अपने समय के श्रीवल्लभ वंशीय गोस्वामियों में प्रतिष्ठावान महापुरुष थे।

(61)

वन्दना परन

धाकृधा ऽनकृधा ऽनकृधा किटतक धाकिटतकधि किटधा तिधाऽ नताऽन बन्दौ श्रीहरि रायसु मुखबा रताब खानत रसिकप्रीत तमहरि दासर सिकपद द्यापसु गावत धाकिटतकधि किटधिर किटधेत् धिरकिट धानीतका ऽनतानी तकाऽन धेता धिट्त किटधाकिट तकिटतकाकिट तकिटतका शिक्षा पत्रप ठायभ्रा ऽतसं तापन सावत धगनध गनधन धनतकि ननतन शुकचर नसरन तीधाकिटतक धाऽनधा ऽनधाऽ नधाऽन धाचर नसरन तीधाकिटतक धाऽनधा ऽनधाऽ नधाऽन धाचर नसरन तीधाकिटतक धाऽनधा ऽनधाऽ नधाऽन धा

भक्तमाल परन

चारों युगों में भगवान के अनेकों भक्त हुये हैं जिनके नामों का उल्लेख पाँच वर्ष पूर्व गोस्वामी श्रीनाभा जी महाराज ने छप्पय छन्दों में किया है जोकि 'भक्तमाल' नाम से कहा जाता है। आज भी भक्तजन समुदाय में इस ग्रन्थ का आदर है। इस भक्तमाल ग्रन्थ के उत्तरार्ध में कलियुग के भक्तों के नाम है। इस 'भक्तमाल' परन में कलियुग के कुछ भक्तों की नामावली है। नाम संख्या 53 है।

(61)

भक्तमाल परन

धाकिटतकधि किटधाकिट तकधिकिट धेता धिधितिट कृधेऽधि किटकिटतक दीगडधाऽ नधाऽन धागद गिनधा गदगिन 'विष्णुस्वा ऽमि"रा मानुज' 'रामा नंद"नि म्बारक' तिरकिटतकता ऽनकत कतकता ऽन'शं कराचा ऽर्य"व ल्लभ"मा ध्वाचेऽ तन्य"स्वा ऽमिहरि दास'ध किटकिट धाधाकिट कृधाकिट धदिंऽत 'हितहरि वंश'है ऽर'हरि रामव्या ऽस"हरि व्यासदे ऽव'धि त्ताकिटतक धित्ता तगऽन्न तगतग तिटकृधा किटगद गिननग नताऽन 'विट्ठल नाऽथगु साई"वि हारिन दास"सू ऽरगो विन्ददा ऽस"पर मानंद' 'कुंभन' 'छीतस्वा ऽमी"नंद दास"च तुरनुज' 'कृष्णदा ऽस'धन धनधिता ऽनतन कातिरकिटता ऽनकत कतकता ऽनकत धा ऽकत धाऽनधि किटधात्र कधिकिट कृधेऽधि किटदिन नडाऽन 'तुलसीदा ऽस"अऽ ग्रदास' 'आसक रनजन' 'रैदाऽस' 'कविकवी ऽरा"मग नमीअरा' 'नरवा हन"सद नधीऽरा' 'नरसी' 'विल्वमंग ल'बन्द 'भटगोपा ऽल"प्रबो धानंद' 'नारा यनभऽ ट्ट'जानि 'श्रीभट' 'नाभा सुजान' 'वृजव ल्लभ"वि द्यापति' 'रामरा ऽयकर' तगाऽन धाकिटतकधि किटतग नधिकिट धेत्तका ऽनधादी कताऽन धाकिटताकिटत कानगि नताऽन धाऽधा ऽनधा ऽधाऽन (मिश्रगत में) धगन धगतिट तगन तगतिट कृधेऽ धगतिट धगन धाकिटतक दिंदिं नानानाना कतिट कतकत 'रूप' 'श्रीजय देऽव' 'केशव भट्ट' 'जीव"स नात न"रस खान' 'नित्या नंद' 'श्रीधर' 'नाम देव"भ गत'ध नाकिट तगन 'जनभग वान' 'मधुसू दन"ग दाधर' बरणि येकथि भक्त

माऽलेमृ दंग पर'शुक' सिन्धु भवसौ तरन थेतक धाऽन
किटतकदीगड धाऽन धाता धान किटतकदीगड धाऽन धाता
धाऽन किटतकदीगड धाऽन धाता धा ऽतक धाऽन किटतकदीगड
धाऽन धाता धाऽन किटतकदीगड धाऽन धाता धाऽन
किटतकदीगड धाऽन धाता धा ऽतक धाऽन किटतकदीगड
धाऽन धाता धाऽन किटतकदीगड धाऽन धाता धाऽन
किटतकदीगड धाऽन धाता धा

सत अष्टोत्तर परन

इस परन में श्रीभगवान के 108 नाम हैं इसीलिये इस परन का नाम 'सत अष्टोत्तर' परन है। इस परन की रचना करने का भाव यह है कि भजन करने की माला में 108 मनका होते है। प्रत्येक मनका पर एक नाम भगवान का लिया जाता है। माला पूरी हो जाने पर 108 नाम हो जाते हैं इस परन में भी भगवान के 108 नाम है। आपने एक बार इस परन को बजा लिया तो आपकी एक माला हो गई। कलियुग में भगवान का नाम ही कल्याणकारी है।

(63)

सत अष्टोत्तर परन

धाऽनधि किटकृधा ऽनकृधा किटतक तिरकिटतकता ऽनकत
धाता धाऽ ऽधा ताधा ऽऽ धाता जैजै 'राऽसबि हारी'
'रसिकबि हारी' 'गिरवर धारी' 'गिरधर' 'छैऽलबि हारी'
'बनवा री"गो वरधन धारी' 'कुंऽजबि हारी' कृधकधि ऽतकत
कतिटक ताकता ऽन'कृपा ऽसिन्धु' 'करुणा निध"के शव"कम
लाऽपति' 'कान्ह"क न्हैयाँ' 'रघुरइ या' 'रघु पति"रा घौ"श्री

राम"र मापति' 'रघुनं दन"जो गेश"ज गतपति' 'जगऽन्ना
थ"जग दीश"ह रे'ऽऽऽ धाकिटतकधि किटधग नधिकिट
धगतिट धगऽदि गनधाकिट तकिटतकाकिट तकिटतका दिगन'द्वा
ऽरका' 'नाथग दाधर' 'गरुड ध्वज"गो पाल"मु रलीधर'
'नगधर' 'नटवर' 'नारा यण"नंद लाल"न रोत्तम' 'पुरसो
त्तम"नर सिंघ"न रहरि' 'अखिले श्वर"अभि नासी' 'श्रीपति'
'भुवने श्वर"त्रइ लोकना ऽथ"श्री नाथ"य दुपती' धगनध
गनतग नतगन कृधाकिट कृधेऽता ऽनतिरकिट तकताऽन धिधिकिट
'दामो दर"दी नबन्धु' 'दयानि धी"कृ ष्णाचंद्र' 'भजगोवि
ऽनन्द"दे वदमन' 'नागद मन"रभा ऽरमन' 'यदुनं दन"श्या
मसुन्दर' 'साँवरि या"मद नमोहन' 'वासुदे ऽव'रिषी ऽकेश'
'विट्ठले ऽश'मा धौऽऽ (आडीलय) धाऽधान धाकिटतक
धिधिकिटतक धुमकिटतक धगननगन कतिटताऽन धाकिटतकधिकिट
कतगदिंन्न कृधेधिकिट कतगदगिन धाता 'धरणीधर' 'जयमुकुंद'
'मधुसूदन' 'आँनंदकन्द' 'माखनचोर' 'चित्तचोर' 'चीरचोर'
'वृजकिशोर' 'मथुराधीश' 'वृजवल्लभ' 'राधाव ल्लभ"वृजेश'
'गोकुलेश' 'गोकुलपति' 'पूरनब्रह्म' 'परब्रह्म' 'परमेश्वर'
'परमानंद' 'वृजाधीश' 'वृजकेचंद' धाकृधाऽन धाधाकृ धाऽनधा
धाकृधाऽन (मिश्रगत आगे) धकिटधाधाकिट धाकृधातिट
धगनधगदिग नगिननतिटता कतिटताकत धेतधेधे धगनधगतिट
धाकृधाति धाधागतिट धाकृधाति धाधगतिट धाकृधाति 'भक्तवत्सल'
'भुवनपति"भग वंत"लीला विहारी"घन श्याम"श्रीवृज नाथ"रसिया

रसिकशेखर' कतिटताकत 'कमललोचन' 'पापमोचन'
'चक्रभुजकर' 'चक्रधारी' 'मुरारी"गो पिकावल्लभ' 'प्राणवल्लभ'
'देवकीन न्दन"यसोदा लाल"दीनद याल"दीना नाथजू'तक
धाऽनकिटतकदीगड धातकधाऽन किटतकदीगडधातक
धाऽनकिटतकदीगड (अठगुन) धाकताऽनधिट कताऽनधादीकत्
धाकिटतकधिकिटगदि ऽतानधिधिकिट 'निराकार"सा कार"निरंजन'
'निरविकार"निर लेय"बदतजन अज"अनंत"वृ न्दावनचंद'
एकसूनअठ नामकहेशुक गावतहैवा जतमृदंगकिटतक
दीगडधाऽनधाऽन धाऽनधाऽनधाऽ नधाऽनधाति धाकिटतकदीगडधाऽ
नधाऽनधाऽनधा ऽनधाऽनधाऽन धातिधाकिटतक दीगडधाऽनधाऽन
धाऽनधाऽनधाऽ नधाऽनधाति धा

❐❐❐

।। श्रीराधावल्लभो जयति।।

धमार

ताल - धमार, मात्रा 14, ताली 3, खाली 3

+		0			1		0			1		0	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
क	धि	ट	धि	ट	धा	ऽ	क	ति	ट	ति	ट	ता	ऽ

(1)

क धि ट ऽधि टधि टधि टधा
क ति ट ऽति टति टति टता

(2)

क धि टकिट तकधद गिनधा किटतक धदगिन
क ति टकिट तकधद गिनधा किटतक धदगिन

(3)

क धि टकिट तकधद गिनधाकिट तकधदगिनधा किटतकधदगिन
क ति टकित तकधद गिनधाकिट तकधदगिनधा किटतकधदगिन

(4)

क धि टकिटतक धदगिनधाकिट तकधदगिनधा किटतकधदगिन
धाकिटतक धदगिनधाकिट तकधदगिनधा किटतकधदगिन
धाकिटतक धदगिनधाकिट तकधदगिनधा किटतकधदगिन धा

(5)

धगतिट किटधा धादिं ताकिट धादिं ताकिट तकधद गिनधा
धाकिट तकधद गिनधा धाकिट तकधद गिनधा धा

(6)

धगतिट धादि ताधा दिता किटतक धदगिन धाधा धाकिट तकधद् गिनधा धाधा किटतक धदगिन धाधा धा

(7)

धगतिट धादिं ताकिट तकधद् गिनधा धाधा धाकिट तकधद् गिनधा धाधा धाकिट तकधद् गिनधा धाधा धा

गणेश वंदना

(8)

तिरकिटतधे तिरकिटधे धिटधिट धिटधिट जैजै गनपति गौरी सुवनग जानन देवा करहुकृ पाबल बुद्धिज्ञा ऽनदै तिरकिटतकता किटतकदीगड धातिधा नतान धा तिरकिटतकता किटतकदीगड धातिधा नतान धा तिरकिटतकता किटतकदीगड धातिधा नतान धा

(9)

धाकिट कृधाकिट धगतिट कृधाकिट धगनधि किटधग तिटकृधा ऽनतक धाधग तिटकृधा ऽनतक धाधग तिटकृधा ऽनतक धा

(10)

धिकिटत गनधग तिटकृधा ऽनधा किटतक धदगिन धाकिटतकधि किटकृधा ऽनतक धदगिन धातक धदगिन धातक धदगिन धा

साथ परन

(11)

धाकिटध किटधाकि टधकिट धाधाकिट कृधाकिट कृतकदिता तकिटथुकिटधग तिटकतागदगिन धगदिगनधग तिटकतागदगिन धातिधातिट कतगदगिनधा तिधातिटकता गदगिनधाति धा

(12)

धकिटध किटधाकृ धाकिटधा कृधागद गिनधकि टधाऽन धागद गिनकृधा किटधकि टधाऽन धागद गिनकृधा किटधकि टधाऽन धा

(13)

धात्रकधि किटकृधा ऽनकृधा किटतक धगनधि किटतिरकिट तकताऽन धेत्रा धेतग ऽन्नकिटकिट तकिटतकाधुम किटतकधदगिन धातिधा नधान धा धेत्तग ऽन्नकिटकिट तकिटतकाधुम किटतकधदगिन धातिधा नधान धा धेत्तग ऽन्नकिटकिट तकिटतकाधुम किटतकधदगिन धातिधा नधान धा

(14)

धकि टधा दिंता किडधा दिंता कृतक दिंता कतिटत गनधा त्रकधिकि टधाऽन धाऽता ऽनधा ताधा कृधाकिट गदगिन धगनधि किटधा त्रकधिकि टधाऽन धाति धात्रक धिकिटधा ऽनधा तिधा त्रकधिकि टधाऽन धाति धा ताऽ धगनधि किटधा त्रकधिकिट टधाऽन धाति धात्रक धिकिटधा ऽनधा तिधा तकधिकि टधाऽन धाति धा ता धगनधि किटधा त्रकधिकि टधाऽन धाति धात्रक धिकिटधा ऽनधा तिधा त्रकधिकि टधाऽन धाति धा

(15)

धकिटध गतिटत किटतग तिटकृधा किटतक धदगिन धाकिटतकिटत काधड ऽन्नथूथू किटतकदीगड धाथूथू किटतकदीगड धाथूथू किटतकदीगड धाधड ऽन्नथूथू किटतकदीगड

धाथूथू किटतकदीगड धाथूथू किटतकदीगड धाधड ऽन्नथूथू किटतकदीगड धाथूथू किटतकदीगड धाथूथू किटतकदीगड धा

(16)

धाकिटध किटधाकृ धातिटधा कृधागद गिननग नताऽन धाकिटतकिटत काकृधे ऽधिकिट कृधाकिट तकथुंगा धित्ताऽकिड नाकिटकिट तकिटतकाकिट तकिटतकाकिट तकधुमकिटतक धातिधाऽ नधातिधा ऽनधाति धातकधुम किटतकधाति धाऽनधा तिधाऽन धातिधा तकधुमकिटतक धातिधाऽ नधातिधा ऽनधाति धा

(17)

धात्रकधि किटधित्र कधिकिट धेत्रा किडनाऽधि ताधेत् ताकिटतक दीगडधा कृधाऽन कृधाकिट धाकिटतकधुम किटतकधेत् तगऽन्न ताधा तडधा किटतकदीगड धाऽनधा ऽनधाऽ नधाऽन धाकिटतक दीगडधाऽ नधाऽन धाऽनधा ऽनधा किटतकदीगड धाऽनधा ऽनधाऽ नधाऽन धा

(18)

धाऽ त्रकधेत् त्रकधेत् धिटतिट धिंतिरकिटधि किटधिंतिर किटतकतागे तिटकता कतिटधा ऽनकृधा ऽनकृधा तिटकता कातिरकिटतक तागेतिट धिंतिरकिटतक तागेतिट कतिटता किटतकदीगड धाता धाकिटतक दीगडधा ताधा किटतकदीगड धाता धा कतिटता किटतकदीगड धाता धाकिटतक दीगडधा ताधा किटतकदीगड धाता धा कतिटता किटतकदीड धाता धाकिटतक दीगडधा ताधा किटतकदीगड धाता धा

(19)

कृधेऽधि किटधग दिंधातिर किटतकता कताधि नाधिन तिटधिदा ऽनकत् किडनाऽधि त्तागिडगिन् ऽनगधे तकिटतका किटतग नधाऽन धा किडनाऽधि तागिडगिन ऽनगधे तकिटतका किटतग नधाऽन धा किडनाऽधि तागिडगिन् ऽनगधे तकिटतका किटतग नधाऽन धा

(20)

धाकृधा ऽनकृधा ऽनधाकिट तकधिकिट गदिऽता ऽनता धाकिटतक दीगडधा धानीतका ऽनधग तिटकता ऽनकत धाकिट किटतिरकिट तकताऽन धाकृधा ऽनधा किटतकदीगड धातिरकिट तकताऽन धाकृधा ऽनधा किटतकदीगड धातिरकिट तकताऽन धाकृधा ऽनधा किटतकदीगड धा

पडार परन

(21)

ताता ताता ताकिट किटतक ताता ताता ताकिट किटतक ताता ताकिट किटतक ताता ताकिट किटतक दीदी दीदी दीकिट किटतक दीदी दीदी दीकिट किटतक दीदी दीकिट किटतक दीदी दीकिट किटतक थूथू थूथू थूकिट किटतक थूथू थूथू थूकिट किटतक थूथू थूकिट किटतक थूथू थूकिट किटतक नाना नाना नाकिट किटतक नाना नाना नाकिट किटतक नाना नाकिट किटतक नाना नाकिट किटतक ताकिट किटतक दीकिट किटतक थूकिट किटतक नाकिट किटतक ताकिट किटधद गिनधा तिधा धदगिन धाति धा ताकिट किटधद

गिनधा तिधा धदागन धाति धा ताकिट किटधद गिनधा तिधा धदगिन धाति धा

(22)

धाकिट कृधाकिट धात्रकधि किटधात्र कधिकिट धगदिग नगतिद धिकिटधा ऽनधा ऽतान ताधा गदगिनधा कतकृधा ऽधान धेत्तग ऽन्नधुमकिट तकिटतकाधुम किटतकधदगिन धा धेत्तण ऽन्नधुमकिट तकिटतकाधुम किटतकधदगिन धा धेत्तग ऽन्नधुमकिट तकिटतकाधुम किटतकधदगिन धा

आढीलय परन

(23)

धगन धिकिट धिकिट तगन धाकृ धाकिट नगिन ताऽन तिरकिटतक ताऽन धिकिट ताऽन धिधिकि टधिधि किटधि लाऽग धाकि टतक धदगि नधा किटत कधद गिनधा ऽधा किटत कधद गिनधा ऽधा धा

(24)

धात्रकधि किटधाधा किटकृधा किटधग दिंता किटतकता कृधेधि किटधागे नानाधिंतिर किटतकता नातिटता ऽधितिट ताऽधि किटता धिताऽन किताऽन किटतकधा नताऽन धात्रकधि किटतिरकिट तकतान धाता धातिरकिट तकतान धाता धातिरकिट तकतान धाता धा

(25)

धगतिट किटधग तिटकिट धगतिट धगतिट धगदिग नगतिट तगतिट किटतग तिटकिट धगतिट धगतिट धगदिग नगतिट धगनधि किटधग नधिकिट धगदिग नगतिट धगदिग नगतिट धगनधि किटधग तिटकृधा किटधागे तिटकता गदगिन धिकिटत गनधेत् तगऽन्न धेत्ता किटतकि टधाऽन धाति धाकिट किटतकि टधाऽन धाति धाकिट किटतकि टधाऽन धाति धा

चक्कर दार परन

(26)

तिरकिटधेत् तिरकिटधेत् धिटधिट कृधाकिट कात्रकधि किटकता ऽनधिधि तिटधिधि ऽतान धिधिदिन धाकिटतकधि किटधाकिट तकधिकिट धेत्ता कृधेऽधि किटधा त्रकधिकि टधान धा तिरकिटधेत् तगेऽन्न धातिरकिट धेत्तगे ऽन्नधा तिरकिटधेत् तगेऽन्न धा 'धद् गिन'

(दो मात्रा दम देकर दो बार और बजायें)

चक्कर दार

(27)

धाकिटतकधि किटतिरकिट तकतगन धगतिट धगऽदि गनधग दिगनध गदिगन तकधिला ऽगधाकिट तकदिकिट धेत्ता धिट्ऽत गनधाकिट तकिटतकाकिट तकिटतका किटतग नधाऽन धाधा ऽनधा ऽधाऽन धाकिट तगनधा ऽनधा ऽधाऽन धाधा ऽनधा किटतग नधाऽन धाधा ऽनधा ऽधाऽन धाता

(इसी को दो बार और बजायें)

परन

(28)

धिधितिट तिटतकि टथुकिट धाकिटधे ऽत्धेत् धिरकिट धगनध गनतग नतगन कातिरकिटधि किटधिना ऽधाऽऽ धेत्तका ऽनधादी कताऽन धात्रकदि किटदिग ऽताऽन धाथूथू किटतकदीगड धादिग ऽताऽन धाथूथू किटतकदीगड धादिग ऽताऽन धाथूथू किटतकदीगड धा

(29)

धाकिटध किटधग तिटधग तिटतकि टतकिट तगतिट तगतिट कृधाकिट धगतिट गदगिन नगतिट धेत्तका ऽनधादी तकिटतकाकिट तकिटतका किटतग नधाऽन धातिरकिट तकताऽन धाकिट तगनधा ऽनधा तिरकिटतकता ऽनधा किटतग नधाऽन धातिरकिट तकताऽन धा

चक्कर दार

(30)

धकिटत किटधाकिट तकधुमकिटतक धेत्ता ऽतिरकिट धेत्ता ऽधेत् धिरकिट धगनधि टधागेदि गनतक धिलाऽग ताधा ऽता धाधुमकिट तकथुंगा धित्ताथुंगा तकिटतकाकिट तकधुमकिटतक धातिधाऽ नधाऽन धाधाति धाऽनधा ऽनधा धातिधाऽ नधाऽन धाधुमकिट तकथुंगा धिताथुंगा तकिटतकाकिट तकधुमकिटतक धातिधाऽ नधाऽन धाधाति धाऽनधा ऽनधा धातिधाऽ नधाऽन धाधुमकिट तकथुंगा धित्ताथुंगा तकिटतकाकिट तकधुमकिटतक

धातिधाऽ नधाऽन धाधाति धाऽनधा ऽनधा धातिधाऽ नधाऽन धा 'दिं'।

(इसे एक मात्रा दम देकर दो बार और)

मिश्रगत में इसे गीतांगी छन्द भी कहते हैं।

(31)

धगन धाकिट तकत किटतक धाकिटतक धेऽता धेऽत गदगिन धाकिटतक धुमकिटतकिटत काकिटतक धदगिनधाति धाऽन धगतिट कृधेऽ धगतिट धगन ताकिटतक धाऽन धाता धा ताकिटतक धाऽन धाता धा ताकिटतक धाऽन धाता धा

मिश्रगत में

(32)

धकिट धगदिग नगिन नतिटता धकिट धाकृधा किटकृ धेऽता धगन धागेगिगि तगन तागेगिगि धेऽत् धेधे धिकिट धेऽताऽ दिगन दिगदिंऽ ताऽत किटतक धडन् धातिरकिटतक ताऽन ताधा ताऽन धाक् धाऽन गदगिन धाऽन गदगिन धाऽन धाक् धाऽन गदगिन धाऽन गदगिन धाऽन धाक् धाऽन गदगिन धाऽन गदगिन धा

(33)

किटतक धदगिन धादिं ऽता ऽधा दिता किडधा दिंता कृतक दिंता तकिटथु किटधग तिटकता गदगिन धाऽनना ऽनधग तिटकृधा ऽनकृधा ऽनकत धाति धादिं ताकृधा ऽनकत धाति धादि ताकृधा ऽनकत धाति धा

(34)

धाकिट तकधुम किटतक धुमकिट तकिटत काकिट तकिटत
काकिट तकधुम किटतक धुमकिट धुमकिट तकिटत काकिट
तकिटत काकिट तकधे ताधुम किटतक धदगिन धाति धाकिट
तकधद गिनधा तिधा किटतक धदगिन धाति धा

(35)

धिधिकिट धिधिकिट धुमकिट धुमकिट तकधिला ऽगधुम
किटतक धिधिकिट धाकिटतकधि किटधुम किटतक धेता
तकिधला ऽगधिला ऽगतक धदगि धा धदगिन धाधिला ऽगतक
धदगिन धा धदगिन धाधिला ऽगतक धदगिन धा धदगिन धा

(36)

धाकिट तकिटत काकिट धुमकिट तकिटत काकिट तकिटत
काकिट तकथुं गाधुम किटतक धुमकिट तकतक धुमकिट
तकिटत काकिट तकधे धिरकिट धिरकिट धुमकिट तकधुम
किटतक तकिटत काकिट तकतरा ऽगधुम किटतक धदगिन
धा किटतक धदगिन धा किटतक धदगिन धा तकतरा ऽगधुम
किटतक धदगिन धा किटतक धदगिन धा किटतक धदगिन
धा तकतरा ऽगधुम किटतक धदगिन धा किटतक धदगिन
धा किटतक धदगिन धा

चक्कर दार

(37)

कृतिट तिटधिधि तिटकता गेदिगन धाकृधा ऽनकृधा किटतक
धदगिन धडऽन्न नगतिट तिरकिटतकता ऽनधिट कताऽन धेत्धेत्

धाकृधा ऽनधग तिटकृधा ऽनकत धाकृधा ऽनकत धाकृधा
ऽनकत धा ता

(एक मात्रा दम देकर दो बार और)

आढ़ी लय में चक्कट दार

(38)

धाकिटतक धिकिट धेऽता ऽकिट तकध दगिन नगिन ताऽन
धादिता कऽत् धाकिटतक धिकिट धिरकि टधिर किटधि ताऽन
धडन् नगिन कतिट धाऽन तडधा ऽकिट ग्रगिन् ताऽन धा
ता तडधा ऽकिट ग्रगिन् ताऽन धा ता तडधा ऽकिट ग्रगिन्
ताऽन धा 'ता'

(एक मात्रा दम देकर दो बार और)

(39)

धादिं ताकिट तकधद गिनधा दिंता धगनधि किटधा दिंता
किडधा दिंता कृतक दिंता तकिटथु किटदिग ननगिन
धाकिटतकधि किटधा दिंता ऽधा दिता ऽधा दिंता धा ऽधा
दिंता धा ऽधा दिंता धा

(40)

धगतिट तगतिट कृधाकिट धगतिट गदगिन नगतिट कृधाकिट
धगतिट धागदिग नागेतिट धगनधि किटधागे दिगनागे तिटकिट
धगदिग नागेतिट किटधग नधिकिट किटतग नधाऽन धाधा
धाकिट तगनधा ऽनधा धाधा किटतग नधाऽन धाधा धा

(41)

धाऽऽतक थुंगाधगदिं ताधादिंता धेत्तागदगिन तकधिलाऽगधुम
किटतकधदगिन धादिंता धिकिटधाऽनधा ऽताऽनधा ऽतकिटधान

कतगदगिनगद गिनधिलाऽगतक धगनकऽत्तधग नकऽत्तधिनधा
कतिटकताकता ऽनकतगदगिन धाकतगदगिन धाधगनक
ऽत्तधगनकऽत धिनधाकतिटक ताकताऽनकत गदगिनधाकत गदगिनधा
धगनकऽत्तधग नकऽत्तधिनधा कतिटकताकता ऽनकतगदगिन
धाकतगदगिन धा

आढीलय

(42)

धकिट धकिट तकिट तकिट धाकिटतक धिकिट धेत्धि रकिट
धाऽकृ धाकिट धानीत काऽन धिटधि टधिट धिटकृ धाऽन
धाऽऽ ताऽऽ धाकिटतक धुमकिटतक गदि ताऽन धा गदि
ताऽन धा गदि ताऽन धा

आढीलय में

(43)

धाऽन धिकिट धात्रक धिकिट कात्रक धिकिट कतग दगिन
धगति टतग तिटकृ धाकिट गदिऽ ताऽन तिरकिटतक ताऽन
धगन धगन धागेना नानाना धिटधि टधिट धिटकृ धाकिट धाकृ
धाऽन धाकृ धाऽन धा धिटकृ धाकिट धाकृ धाऽन धाकृ
धाऽन धा धिटकृ धाकिट धाकृ धाऽन धाकृ धाऽन धा

आढीलय में

(44)

धाकिटतकधिकिट धेताऽकिट धेत्तकाऽन कतगदगिन धागेनानाकिट
तकधदगिन तातकिटतक दीदीकिटतक थूथूकिटतक नानाकिटतक
त्धिडाऽन धादिता ग्रगिन्ताऽन धाग्रगिन् ताऽनधा ग्रगिन्ताऽन

धात धादिता ग्रगिन्ताऽन धाग्रगिन् ताऽनधा ग्रगिनताऽन धाता
धादिंता ग्रगिन्ताऽन धाग्रगिन् ताऽनधा ग्रगिन्ताऽन धा

मिश्रगत में पडार

(45)

तातता ताऽकिट तकतकि टतक तकिट तकतकि टतक दीदी
दीदीदी दीऽकिट तकदि किटतक दिकिट तकदिकि टतक थूथू
थूथूथू थूऽकिट तकथु किटतक थुकिट तकथुकि टतक नाना
नानाना नाऽकिट तकन किटतक नकिट तकनकि टतक ताता
तातता ताऽकिट तकतकि टतक दीदीदी दीऽकिट तकदि
किटतक थूथूथू थुऽकिट तकथु किटतक नानाना नाऽकिट
तकन किटतक धा (त्रस्यगत में) तताकिट तकदीदी किटतक
थुथुकिट तकनाना किटतक धाऽ नानाकिट तकधा ऽनाना
किटतक धा तताकिट तकदीदी किटतक थुथुकिट तकनाना
किटतक धाऽ नानाकिट तकधा ऽनाना किटतक धा तताकिट
तकदीदी किटतक थुथुकिट तकनाना किटतक धाऽ नानाकिट
तकधा ऽनाना किटतक धा

चक्कर दार

(46)

धिधिदीधिधि दीधिधिदी गदितान गदितान धाकिटतक धुमकिटतक
धेत्राकिट तकधदगिन धाकिटतकधुम किटतकधेत्रा किटतकधदगिन
धाकिटतकधुमकिटतक धेत्राकिटतकधदगिन धाधाकिटतक
धुमकिटतकधेत्राकिट तकधदगिनधा धाकिटतकधुमकिटतक
धेत्राकिटतकधदगिन धा

(दो बार और बजाये)

(47)

धाधे त्ताधे ताकिटतक धेता धेधे ताधिरधिर कत्‌ध नितकत धाधिरधिर कत्‌ध नितकत धाधिरधिर कत्‌ध नितकत धा

(48)

धाकिटतकिटत काधाकिट तकिटतका धेता धेत्‌तग ऽन्नधादी कतिटधा ऽकऽत्र धाधादी कतिटधा ऽकऽत्र धाधादी कतिटधा ऽकऽत्र धा

(49)

धेधे धेत्रक धेधिकि टतगन धाकिटतकधुम किटतकधे त्रातक धिलाऽग तकधिला ऽगधाकिट तकिटतकाकिट तकिटतका धाकिटतकिटत काधिला ऽगतक धाधाकिट तकिटतका धिलाऽग तकधा धिलाऽग तकधा धाकिटतकिटत काधिला ऽगतक धाधिला ऽगतक धाधिला ऽतक धा

पुष्प माला परन

(50)

(इस परन के एक, दो अंकों पर रुकने का संकेत है)

धाधाकिटतक धदगिनधा1 2धाकिटतक धदगिनधा1 2किटतकधद गिनधा12 धदगिनधा1 2गिनधा1 2किटतकधद गिनधाऽन धाकिटतकधद गिनधाऽन धाकिटतकधद गिनधाऽन धादिं ताकिटतकधद गिनधाऽन धाकिटतकधद गिनधाऽन धाकिटतकधद गिनधाऽन धादिं ताकिटतकधद गिनधाऽन धाकिटतकधद गिनधाऽन धाकिटतकधद गिनधाऽन धा

❐❐❐

झपताल

झपताल - मात्रा 10, ताली 3, खाली 1

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धा	किट	धा	गे	दिं	ता	किट	धा	गे	दिं
+		**2**			**0**		**3**		

दूसरा प्रकार

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धा	धिधि	दिं	दिं	ता	ता	किट	तक	धद	गिन
+		**2**			**0**		**3**		

(1)

धकि टध किट धग तिट कृधा ऽधा ऽन धा धग तिट कृधा ऽधा ऽन धा धग तिट कृधा ऽधा ऽन धा

(2)

धाकि टध किट कृधा किट तक धद गिन धा कृधा किट तक धद गिन धा कृधा किट तक धद गिन धा

(3)

धगतिट धगतिट कृधाकिट धगतिट कृधाकिट धुमकिट गदगिन नगतिट धगतिट किटकृधा ऽधाऽन धाति धाधग तिटकृधा ऽधाऽन धाति धाधग तिटकृधा ऽधाऽन धाति धा

(4)

धकिटध गतिटत किटधागे तिटकता धाकृधा ऽनधागे तिटकृधा तिटकता तिरकिटतकता ऽनधिट कताऽन धेता तक्कधि किटकता ऽनकता ऽनकत धाकता ऽनकत धाकता ऽनकत धा

(5)

धादिं ताधुम किटतक धुमकिट तकधुम किटतक तकिटत काऽ किडना किटधुम किटतक धदगिन धगनधि किटधा किटकृधा ऽनकत धाकृधा ऽनकत धाकृधा ऽनकत धा ता धगनधि किटधा किटकृधा ऽनकत धाकृधा ऽनकत धाकृधा ऽनकत धा ता धगनधि किटधा किटकृधा ऽनकत धाकृधा ऽनकत धाकृधा ऽनकत धा

(6)

धगतिट किटधग तिटकिट तगतिट किटतग तिटकिट धगनधि किटधागे तिटकिट तगनधि किटतागे तिटकिट दिगतागे तिटकृधा किटतक धदगिन किटतकदीगड धाऽनता ऽनधाऽ नताऽन धाता किटतकदीगड धाऽनता ऽनधाऽ नताऽन धाता किटतकदीगड धाऽगता ऽनधाऽ नताऽन धा

(7)

चक्करदार

क्तिट धिधितिट कताक धेधे धिटधिट धगतिट गदगिन नगतिट कतिटता ऽनधेत तडऽन्न गदगिन नगधे ऽता ऽक ऽत धगतिट कतकृधा किटधाऽ नधान धाकृधा किटधाऽ नधाऽन धाकृधा किटधाऽ नधाऽन धा

(इसी प्रकार दो बार और बजायें)

(8)

चक्कर दार

धाकिटतकिटत काधाकिट तकिटतका धेता धेतग ऽन्नधग दिगनध गदिगन धातिट कृधाकिट धगनध नितकत् धेत्तगे ऽन्नकिटकिट तकिटतकाधुम किटतकगदगिन धाकिटकिट तकिटतकाधुम किटतकगदगिन धाकिटकिट तकिटतकाधुम किटतकगदगिन धा ता

(एक मात्रा दम देकर दो बार और बजायें।)

(9)

आढी

ताधि लाऽग तकधि लाऽग धाकिटतक धिकिट तकधि लाऽग धिधिकि टतक धुमकि टतक धेऽता ऽकिट तकध दगिन धाध दगिन धाध दगिन धा ता धेऽता ऽकिट तकध दगिन धाध दगिन धाध दगिन धा ता धेऽता ऽकिट तकध दिगिन धाध दिगिन धाध दिगिन धा

(10)

आढी

धाऽन धिकिट धगन धिकिट धाकिटेतक धिकिट तगत गतिट कतक धादिता कतक ताऽन् धेत्त काऽन धादिता कऽत् धा कऽत्र धा कऽत धा

(11)

मिश्रगत में

कतिट कतकत कतिट ताकत् धाऽन धाता धाऽन धगतिट धाकिट धगदिग नगिन नतिटता कृधेऽ धिटधिट थुंऽग नानाकिट

कतिट ताकत धाऽन धाति धा कतिट ताकत धाऽन धाति धा कतिट ताकत धाऽन धाति धा

(प्रत्येक मात्रा से फरमायसी चक्कर दार परन)

(12)

(एक मात्रा से)

धिकिटतागदगिन नगनगतिरकिटतकता तिरकिटधेत्तगिन्न धाधेत्धेत् तगन्नधाता ऽनधाताधा कतधाकिटतकदीगड धाकतधा किटतकदीगडधा कतधाकिटतकदीगड धातगिन धाताऽनधा ताधाकतधा किटतकदीगडधा कतधाकिटतकदीगड धाकतधा किटदीगडधा तगन्नधाता ऽनताधा कतधाकिटतकदीगड धाकतधा किटतकदीगडधा कतधाकिटतकदीगड धाधिकिटता

(यह फरमायसी चक्कर दार बेदम है)

(13)

(दूसरी मात्रा से फरमायसी चक्कर दार)

धाऽनधिकिटधग नधिकिटधगतिट कातिरकिटधिकिटकता कातिरकिटतकतिटतिट तकिटथुकिटधिडा ऽनथुथुकिटतकदीगड धाधिडाऽनथुथु किटतकदीगडधाधिडा ऽनथुथुकिटतकदीगड धाता तकिटथुकिटधिडा ऽनथुथुकिटतकदीगड धाधिडाऽनथुथु किटतकदीगडधाधिडा ऽनथुथुकिटतक धाता तकिटथुकिटधिडा ऽनथुथुकिटतकदीगड धाधिडाऽथुथु किटतकदीगडधाधिडा ऽनथुथुकिटतकदीगड धा धद गन

(14)

(तीसरी मात्रा से)

धिनकतधिधितिट गदगिननगतिट कतिटतगनधेत् तगन्नधाता ऽनधाताधा धागेतिटगदगिन किटतकदीगडधाकिटतक दीगडधाकिटतकदीगड धाधेत्रा किटतकदीगडधाकिटतक दीगडधाकिटतकदीगड धाधेत्रा किटतकदीगडधाकिटतक दीगडधाकिटतकदीगड धा धद गन

(15)

चौथी मात्रा से

धाकिटतकिटतकाधाकिट तकिटतकाधेत्रा धेतगऽन्नधा दितातिरकिटधेत् तगऽन्नधातिरकिट धेत्तगऽन्नधा तिरकिटधेत्तगन्न धातिरकिटधे तगन्नधातिरकिट धेतगन्नधा तिरकिटधेतगिन्न धातिरकिटधे तगिन्नधातिरकिट धेतगिन्नधा तिरकिटधेतगिन्न धाता

(16)

पाँचवी मात्रा से

धगनधिकिटधग नधिकिटधगतिट धगतिटकिटतकि टधाऽनधाकिट तकिटधाऽनधा किटतकिटधाऽन धाऽकिटतकि टधाऽनधाकिट तकिटधाऽनधा किटतकिटधाऽन धाऽकिटतकि टधाऽनधाकिट तकिटधाऽनधा किटतकिटधाऽन धा दिं

(एक मात्रा दम देकर दो बार और)

(17)

छठवीं मात्रा से

धगतिटधगतिट तगतिटतगतिट कृधाकिटधगतिट गदगिननगतिट धाकतानधिट कताऽनगदगिन धगनधिकिटधग दिगनधगदिगन धिकिटतगनधेत् तगिन्नधेत्रा तिरकिटधेत्रा त्थूथूकिटतकदीगड धात्थुथु किटतकदीगडधा तथुथुकिटतकदीगड धाधित्रा धिकिटतगिनधेत् तगिन्नधेत्रा तिरकिटधेत्रा त्थुथुकिटतकदीगड धात्थुथु किटतकदीगडधा त्थुथुकिटतकदीगड धाधित्रा धिकिटतगिनधेत् तगिन्नधेत्रा तिरकिटधेत्रा त्थुथुकिटतकदीगड धात्थुथु किटतकदीगडधा त्थुथुकिटतकदीगड धाता

(18)

(सातवीं मात्रा से)

धिताकिटतक तिटतिटधित्रा तकिटथुकिटधुम किटतकधित्रा धाकिटतकधुम किटतकधुमकिट तकधुमकिटतक तकिटतकाकिट धुमकिटतकिटत काकिटतक तकधुमकिटतक धातिधाऽ ऽधातिधा ऽऽधाति धाकिटतक तकधुमकिटतक धातिधाऽ ऽधातिधा ऽऽधाति धाकिटतक तकधुमकिटतक धातिधाऽ ऽधातिधा ऽऽधाति धाता

(दो बार और)

19

(आठवीं मात्रा से)

धगतिटधगतिट किटतगतिटतग तिटकिटधगनधि किटधगतिटतग नधिकिटधगतिट दिंगतागेतिटकृधा किटकात्रकधिकिट नगतिटधित्रकधि किटकतगदगिन त्रकधिकिटधाऽन धात्रकधिकि टधाऽनधा

त्रकधिकिटधाऽन धाता त्रकधिकिटधाऽन धात्रकधिकि टधाऽनधा त्रकधिकिटधाऽन धाता त्रकधिकिटधाऽन धात्रकधिकि टधाऽनधा त्रकधिकिटधाऽन धा दिता

(एक मात्रा दम देकर दो बार और)

(20)

(नौमी मात्रा से)

धधेत्रकधेत् धातिरकिटतकता धातिरकिटतकता दिंदिंतिटतिट धिधितिटकृधाकिट क्तिटतिटधिधि तिटकतागेदिगन धातिरकिटतकता कतिटताकिटतकदीगड धाकतधाकिटतक दीगडधाकतधा किटतकदीगडधाकत धाता कतिटताकिटतकदीगड धाकतधाकिटतक दीगडधाकतधा किटतकदीगडधाकत धाता कतिटताकिटतकदीगड धाकतधाकिटतक दीगडधाकतधा किटतकदीगडधाकत धा धद गिन

(दो मात्रा दम देकर दो बार और)

(21)

(दस मात्रा से फरमायसी चक्करदार)

धाकृधाऽनकृधा किटधात्रकधिकिट धेत्तकाऽनधादी कत्धगनधिकिट कतकधिकिटकत गदगिननगतिट धात्रकधिकिटकता ऽनकतगदगिन धाकताऽनकत गदगिनधाकता ऽनकतगदगिन धाता धात्रकधिकिटकता ऽनकतगदगिन धाकताऽनकत गदगिनधाकता ऽनकतगदगिन धाता धात्रकधिकिटकता ऽनकतगदगिन धाकताऽनकत गदगिनधाकता ऽनकतगदगिन धाता धाकृधाऽन

(22)

धकि टध किट धाधा किट कृधा किट दिंता किट धकि टधा दिंता कृतक दिता तकिटथु किटधग दिगनध गदिगन धा गदगिन तकिटथु किटधग दिगनध गदिगन धा गदगिन तकिटथु किटधग दिगनध गदिगन धा

(23)

धाकृधा ऽनकृधा किटतक धदगिन धानितका ऽनधिट कताऽन ताधा ऽता धा किडनाधि ताकिटकिट तकिटतकाधुम किटतकधदगिन धाकिटकिट तकिटतकाधुम किटतकधदगिन धाकिटकिट तकिटतकाधुम किटतकधदगिन धा

(24)

तिरकिटतकत गनधग तिटकृधा किटधग दिंता कृधाऽन धाऽता ऽनधा ताधा गदगिनधा किटतकि टधाऽन धाता धाकिट तकिटधा ऽनधा ताधा किटतकि टधाऽन धाता धा

(25)

(पडार)

ताता ताकिट किटतकि टतका किटतक दीदी दीकिट किटतकि टतका किटतक थुथु थुकिट किटतकि टतका किटतक नाना नाकिट किटतकि टतका किटतक ताता किटकिट तकिटत काकिट दीदी किटकिट तकिटत काकिट थुथु किटकिट तकिटत काकिट नाना किटकिट तकिटत काकिट ताकिट किटतक दीकिट किटतक थूकिट किटतक नाकिट किटतक ताकिट किटधद गिनधा धदगिन धा ता ताकिट किटधद गिनधा धदगिन धा ता ताकिट किटधद गिनधा धदगिन धा

(26)

धगनधि किटधग नधिकिट धगतिट धगतिट कृधाकिट कृधाकिट धगऽदि गिननगि नताऽन ताधा किटधा नतान धाकिटतकिटत काधिकि टधान धाधिकि टधान धाधिकि टधान धा

(27)

धकि टध किट धाधा किट दिंता किट धकि टधा दिंता किडधा दिंता कतक दिंता धगनधि किटधिन नानाधिन नधान धाधिन नाधान धाधिन नधान धा धगनधि किटधिन नानाधिन नधान धाधिन नधान धाधिन नधान धा धगनधि किटधिन नानाधिन नधान धाधिन नधान धाधिन नधान धा

(28)

धाकृधा ऽनकृधा किटतक धाकिटतकधि किटगदि ऽताऽन धाकिटतकधुम किटतकधेत् कताऽन धाकिटतकधे ऽधेत धिरकिट धाकृधा ऽनकृधा ऽनकत गदगिन धाकत गदगिन धाकत् गदगिन धा

(29)

डेढी लय में परम

धादिता धाकिटतक धिधिकिटतक धुमकिटतक त्किटकिट धुमकिटतक धडन्नगिन धेत्तकाऽन धिधिकिटधिधि किटधिधिकिट तकधुमकिट धेत्राकिट ग्रगिन्तान धाग्रगिन तानधा ग्रगिन्तान धाता तकधुमकिट धेत्राकिट ग्रगिन्तान धागगिन तानधा ग्रगिन्तान धाता तकधुमकिट धेत्राकिट ग्रगिन्तान धाग्रगिन् तानधा ग्रगिन्तान धा

(30)

देत्तिट किटधिधि तिटधिधि दिंता धिधिकिट तकधुम किटतक दिंता धाधा दिंता धिरधिरक् धादिं ताधिरधिर क्धा दिता धिरधिरक् धा धिरधिरक् धादिं ताधिरधिर क्धा दिंता धिरधिरक् धा धिरधिरक् धादि ताधिरधिर क्धा दिंता धिरधिरक् धा

(चतुरमुखी परन, इस परन में चार प्रकार की लय का बर्ताव है इसी कारण चतुर मुखी इसका नाम है)

(31)

किटतागे तागेतिट किटतग नधिकिट धेत्तग ऽन्नधग तिटकृधा ऽनकत धा धात्रक धिकिट धित्रक धिकिट दिगना नाकिट तिरकिटतक ताऽन धा धकिट धागेदिंऽ ताऽध गनकत् धिकिट धिटधिट धेऽत् किटतक धाकिटतकिटत काकिटधुमकिट तकिटतककिट तकिटतका धाकिटतकिटत काधिरकिट थुकिटधा ऽथुंत धाधिरकिट थुकिटधा ऽथुंत धाधिरकिट थुकिटधा ऽथुंत धा

(32)

(पनिहारी परन)

नीरभ रनको चलीगो ऽपिका लचकम चकगत अचकअ चकशिर गगरी डगरी यमुना कीलखि नंदला ऽलउझ कीझिझि कीबृज बालत ऽतथेइ ताकत कतिटक तगितिट दिगदादिगदि थेइकत कतिटक तागेतिट दिगदादिगदिग थेइकत कतिटक तागेतिट दिगदादिगदिग थेइ

।। श्री गिरिराज धरण जयति।।

प्रभु प्रेरणा से जो भी जैसा बोल, परनौ की रचना कार्य इन्हीं तीन तालों में हो पाया है। शरीर और बुद्धि की शिथिलता के कारण यह कार्य आगे चलना असम्भव प्रतीत होने लगा।

अब आगे गुरुजनों से प्राप्त हुये बोल परनौ का कुछ लेखन 'तीन ताल' में करते हैं, थोड़े ही अंश में इसकी पूर्णता जानकर हमें अनुग्रहीत करें। 'तीन ताल' को 'आदिताल' और 'मूलताल' भी कहते हैं ऐसा गुरुजनों का कहना है।

तीन ताल-मात्रा 16, ताली 3, खाली 1

+				**1**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धा	आ	धि	ट	धि	ट	धा	आ
0				**1**			
9	10	11	12	13	14	15	16
ता	आ	ति	ट	ति	ट	धा	आ

दूसरा प्रकार

+				**1**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धा	आ	धि	ट	धि	ट	धा	आ
0				**1**			
9	10	11	12	13	14	15	16
कि	ट	त	क	ध	द	ग	न

बोल

(1)

धागेतिट तागतिट धागदिं नगतिट धिटतगे ऽन्नधिट तगेऽन्न धेत्रा तिरकिटधेत् तगेऽन्न धा तिरकिटधेत् तगेन्न धा तिरकिटधेत् तगेन्न धा

(2)

धेधे धिरकिट धागेतिट तागेतिट धगऽदि गिनधागे तिटकता गदगिन धाधा त्रकधेत् तगिऽन्न धात्रक धेत्तगि ऽन्नधा त्रकधेत् तगिऽन्न धाधा त्रकधेत् तगिऽन्न धात्रक धेत्तगि ऽन्नधा त्रकधेत् तगिऽन्न धाधा त्रकधेत् तगिऽन्न धात्रक धेत्तगि ऽन्नधा त्रकधेत् तगिऽन्न धा

(3)

धाकिट तकधे ऽत्र तिरकिट तकता कत् धिकि टधा ऽन धिकि टधा ऽन कृधे ऽत्र तिरकिट तकता किटतक दीगढ धा कृधे ऽत्र तिरकिट तकता किटतक दीगड धा कृधे ऽत्र तिरकिट तकता किटतक दीगड धा

(4)

कात्र कधि किट तिरकिट तकत गिन धग तिट तग तिट धिंतिर किटधि किट धिट तक्का थुंगा धिकि टधा ऽन धा तक्का थुंगा धिकि टधा ऽन धा तक्का थुंगा धिकि टधा ऽन धा

(5)

धाकिटतकधुम किटतकधेत् तगेऽन्न धाता ऽनधा ताधा तडधा क्ध्धा किटतकदीगड धाऽ ताक् ध्धाकिटतक दीगडधा ऽता क्ध्धा किटतकदीगड धा

(6)

धाधा धा गदगिन धा गदगिन नगतिट गदगिन धा धादिं ताक ऽति ऽट धा ऽ गदगिन नगतिट गदगिन धा धांदि ताक ऽति ऽट धा ऽ गदगिन नगतिट गदगिन धा धादिं ताक ऽति ऽट धा

(7)

कतिटता ऽनतिट कातिरकिटधा तिटतिट धिकिटता ऽनतिट कातिरकिटधा ऽनधा थुंथुं तिटतिट कातिकिटधा ऽनधिन कतधिला ऽगकत धाधिला ऽगकत धाधिला ऽगकत धाधिन कतधिला ऽगकत धाधिला ऽगकत धाधिला ऽगकत धाधिन कतधिला ऽगकत धाधिला ऽगकत धाधिला ऽगकत धा

(8)

कतिटता ऽनतिट कातिरकिटधा तिटतिट धिकिटत गिननति टताऽन धा धिडाऽन धा धिंतिरकिटतक ताऽ कतिटधा ऽनतक धाधा ऽनतक धाधा ऽनतक धा कतिटधा ऽनतक धाधा ऽनतक धाधा ऽनतक धा कतिटधा ऽनतक धाधा ऽनतक धाधा ऽनतक धा

(9)

धात्रकधि किटकत धिंऽत धातकधुम किटतकधा तडऽन्नधा धिधिनाना किटतकतकधुम किटतकधा धति टत तिट धाऽकिटतक थुंथुंनति टधा ऽटधा धिटधिट धतिटत तिटधात्र कधिकिट धाडधाड धाधिट धिटधति टततिट धात्रकधि किटधाड धाडधा धिटधिट धतिटत तिटधात्र कधिकिट धाडधाड धा

(10)

आढी लय में

कतिट तगिन कातिरकिट धिकिट धिकि तगन कातिरकिट धिकिट कतक तकत कतिट तगिन कतिट तगन कतक तकत कातिरकिट धिकिट कतग दगिन धाऽति टतिट कातिरकिट धिकिट कतग दगिन धाऽति टतिट कातिरकिट धिकिट कतग दगिन धा

आढी

(11)

धगतिटकिट धगतिटकिट धगदिंदि नगतिटकिट धिटतगिन्न धिटतगिन्न धेत्तातिरकिट धेतगिन्न धातिरकिट धेत्तगिन्न धेत्ततिरकिट धेत्तगिन्न धातिरकिट धेतगिन्न धेत्रातिरकिट धेत्गिन्न धा

आढी

(12)

धाकिटतक धुमकिटतक धुमकिटतक धाकिटतक धादिंगन धाकिटतक तकिटथुकिट कतगदगिन धडन्नगिन दिगदिंता

कतिटधाऽन धा धाताऽन धादिता धिडनगदि धा धिडनगदित् धाकताऽन धाकिटकिट धाकताऽन धाकिटकिट धाकताऽन धिडनगदित् धाकताऽन धाकिटकिट धाकताऽन धाकिटकिट धाकताऽन धिडनगदित् धाकताऽन धाकिटकिट धाकताऽन धा

(13)

धगतिट किटधग तिटकिट धगतिट धगतिट धगदिग नगतिट धगदिग नगतिट तगतिट किटतग तिटकिट धगतिट धगतिट धगदिग नगतिट धगतिट धगनधि किटधग नधिकिट धगतिट धगतिट धगदिग नगतिट धिकिटत गिनधेत् तगिऽन्न धेत्ता किटतकि टधाऽन धाकिट किटतकि टधाऽन धाकिट किटताकि टधाऽन धा ता धिकिटत गिनधेत् तगिऽन्न धेत्ता किटतकि टधाऽन धाकिट किटतकि टधाऽन धाकिट किटतकि टधाऽन धा ता धिकिटत गिनधेत् तगिऽन्न धेत्ता किटतकि टधाऽन धाकिट किटतकि टधाऽन धाकिट किटतकि टधाऽन धा

(14)

(नौवी मात्रा से)

कृतिट धिधितिट कताऽक धेत्धेत् धिटतिट धिधितिट गदगिन नगतिट कातिरकिटधि किटधागे तिटकिट गदगिन कृधऽधि किटधागे तिद्धा कृधाऽन धाऽता ऽनधा ताधा किटतक धागेतिट गदगिन दिगनन किटतक धिकिटत गिनधागे तिटगदि ऽताऽन धा नानाकिटतक धिकिटत गिनधागे तिटगदि ऽताऽन धा नानाकिटतक धिकिटत गिनधागे तिटगदि ऽताऽन धा

(15)

चक्करदार

क्तिट तिटधिधि तिटकता गेदिगन धेत्धेत् धिरकिट धिनागदि गनधा तिटधिड नगक्तिर किटतकता कध्धा कताऽन धाऽ ताक् ध्धाकता ऽनधा ऽता कध्धा कताऽन धा ता

(एक मात्रा दम देकर दो बार और)

(16)

चक्करदार

किडाऽनधाधिड ऽनधाकिडधा क्धिरकिटतक गदगिननगतिट धिंतडऽन्धा दिंताकत दिगताकृधाऽन धाकतदिगता कृधाऽनधाकत दिगताकृधाऽन धाता

(दो बार और बजायें)

(17)

आढीलय में चक्करदार

धाऽनधिकिट तकिटथुकिट धाकिटतकधिकिट तकिटथुकिट कतगदगिन धगऽदिगन नगिनकात्रक धिकिटकतिट तगनधाऽन धाकात्रक धिकिटकतिट तगनधाऽन धाकात्रक धिकिटकतिट तगनधाऽन धादि ताधाऽन

('दिंता', का दम देकर दो बार और)

(18)

(इक हत्थी बोल)

दिंदि तिटतिट तिटदिं नानातिट तातिट तिटता तिटताऽ नताऽन तिटदिं नराऽन ताता तिटदिं नराऽन ताता तिटदिं नराऽन ता

(19)

(श्रीगणेश वंदना चक्करदार)

गणपति सुरमुनि बन्दे बुद्धि विधायक गजमुख चत्रभुज विघनह रनसुभ करनस हायक दिगतक थौगतक दिगदादिगदिग धाऽनधा ऽनधाऽ नधान धादिगदा दिगदिगधाऽ नधाऽन धाऽनधा ऽनधा दिगदादिगदि धाऽनधा ऽनधाऽ नधाऽन धा गनपति

(दो बार)

(20)

श्रीभारत माता वंदना

तुंगभा ऽलहिम गिरविशा ऽलचम कततुसा ऽरकर मुकुटमं ऽजुफह रतश्या मलअं चलअमं ऽदनित धुवतच रनजुग अगमसिं ऽन्धुजग तरणत तरणिदुख हरणह रणिरिपु दलनदु खहरन मंगलक रनभा रतमा तामा ताभा रतमा तामा ताभा रतमा तामा ता

(21)

श्रीशंकर वन्दना

अगडबम् अगडबम् डिमकडि मकडिम ताण्डव नृत्यक रतशिव शंकर करत्रिशू लडमु रूधर विशधर शीशचं ऽद्रधर जटाऽगं ऽगधर ब्याघ्रचं ऽम्रधर अरधाँग नीसंग हरहर हरशं भोशं भोशं मो ऽऽशं भोशं भोशं भो ऽऽशं भोशं भोशं भो

(22)

फरमायसी चक्कर दार

धाऽ त्रकधेत् धिटधिट धगतिट कृधाकिट धगतिट गदगिन नगतिट कात्रकधि किटकात्र कधिकिट कताकता कात्रकधि

किटकता कातिरकिटतक तागेतिट कतिटता किडनग तिरकिटतकता कतिटता कतिटता किडनग दिगतागे तिटकता कतिटत गिनधगि नधिकिट धगतिट कृधकधि किटधग कृतधिकि टधाऽन धा तिटतिट कतिटत गिनधग नधिकिट धगतिट कृधकधि किटधग कृताधिकि टधाऽन धा तिटतिट कतिटत गिनधग नधिकिट धगतिट कृधकधि किटधग कृतधिकि टधाऽन धा दिंता

(एक मात्रा का दम देकर, दो बार और)

(23)

तातातता ताकिटकिटतक ताकिटकिटतकि टतकाकिटतक दीदीदीदी दीकिटकिटतक दीकिटकिटतकि टतकाकिटतक थूथूथूथू थूेकिटकिटतक थूकिटकिटताकि टतकाकिटतक नानानाना नाकिटकिटतक नाकिटकिटतकि टतकाकिटतक ताकिटतकतकि टतकाकिटतक दीकिटतकताकि टतकाकिटतक थूकिटतकतकि टतकाकिटतक नाकिटतकतकि टतकाकिटतक ताकिटकिटतक दीकिटकिटतक थूकिटकिटतक नाकिटकिटतक ताकिटतकदी किटतकथूकिट तकनाकिटतक ताकिटकिटतक धदगिनधाति धाऽ धातिधा ऽधाति धाता ताकिटकिटतक धदगिनधाति धाऽ धातिधा ऽधाति धाता ताकिटकिटतक धदगिनधाति धाऽ धातिधा ऽधाति धा

(24)

गदगिननगतिट गदगिनधा धाधाधा धितिटक ऽत्गदगिन नगधेता ऽधादी ऽक धागदगिन नगधेता ऽधादी ऽकऽत्त धागदगिन नगधेता ऽधादी ऽकऽत्र धा

(25)

बढैया परन नौमी मात्रा से

तगन्न धा तान धा ताधा तडधा गदगिन धा गदगिन नगतिट गदगिन धा ता ऽ तगन्न धाता ऽनधा ताधा तडधा गदगिन तगन्न धाता ऽनधा ताधा तडधा गदगिन धा तगन्न धाता ऽनधा ताधा तडधा गदगिन धा तगन्न धाता ऽनधा ताधा तडधा गदगिन धा

(26)

धाधाधा गदगिनधा गदगिननगतिट गदगिनधा धातीधाक ऽतिऽट धा गदगिननगतिट गदगिनधा धातीधाक ऽतिऽट धा गदगिननगतिट गदगिनधा धातीधाक ऽतिऽट धा

(27)

धात क्काथुं गाध गदि गता धादिं ताधे ताकिड धात क्काथु गातकिट टतका किटतक धदगिन किटधा नधान धा धाधा धा किटतक धदगिन किटधा नधान धा धाधा धा किटतक धदगिन किटधा नधान धा धाधा धा

(28)

नौ मात्रा से चक्करदार

धाकिटतकधुम किटतकधेत् तगिन्न ताधा क्ध्धा कृधाऽन कृधाकिट कृधाकिट तिरकिटतकता किटतकदीगड ताधाऽता धातिरकिट तकताकिटतक दीगडताधा ऽताधा तिरकिटतकता किटतकदीगड ताधाऽता धा धाकिटतकधुम

(दो बार और)

॥ श्रीगोवर्धनो जयति॥

वादन विधि के पश्चात् अब हम मृदंग वादन में ताल परिचय के लिये कुछ तालों की जानकारी करते हैं। मृदंग और तबला वादन में तालों का विस्तार विद्वानगुणीजनों के लेखन से जाना जाता है। उनमें से कुछ ही तालों को प्रयोग में लाने का प्रयास है।

आडा चौताल मात्रा - 14

धा गे धा गे दिं ता किट धा दिं ता
\+ 2 3
किट तक धद गन
4

जलद सूर फागता मात्रा - 5

धा किट तक धद गन
\+ 2 3

जलद सूर फागता का दूसरा प्रकार

धा दिंदिं ता किटतक धदगिन
\+ 2 3

सूर फागता मात्रा - 10

किट तक किट धुम किट धा किट तक धद गन
\+ 2 3

ब्रह्मताल मात्रा - 14

धा किट तक धद गन धुम किट तक
\+ 2 3 4 5 6
धे त्ता किट तक धद गन
7 8 9 10

झूमरा ताल मात्रा - 14

धा किट तक धुम किट धे ता
\+ 2
तक धे ता किट तक धद गन
3

बड़ी सवारी मात्रा - 15

धा धदी गन धा तक धदी गन धा
\+ 2 3
तक धदी गन धा तक धदी गन
4

मत्तमाल मात्रा - 9

धा किट धे ता ऽ किट तक धद गन
\+ 2 3 4 5 6

रासताल मात्रा - 13

धा किट धुम किट तक धे ता
\+ 2 3 4 5
धे ता किट तक धद गन
6 7 8

रूपक ताल मात्रा - 6

धा ऽ किट तक धद गन
\+ 2

तेवरा ताल मात्रा - 7

धा दिं ता किट तक धद गन
\+ 2 3

चौहरा ताल मात्रा - 10

धा ऽ कि ट त क ध द ग न
\+ 2 3 4

ठाँ चौताला मात्रा - 24

धा ऽ धि ट धि ट धा ऽ ता ऽ धि ट
\+ 2
धि ट धा ऽ कि ट त क ध द ग न
3 4

जलद चौताला मात्रा - 6

धा किट तक धद गन धा
\+ 2 3 4

गणेश ताल मात्रा - 18

धा ऽ धा ऽ कि ट त क धु
\+ 2 3
म कि ट त क ध द ग न
4 5

मणिताल मात्रा - 11

धा किट तक धुम किट धे
\+ 2 3
ता किट तक धद गन
4

बसंत ताल मात्रा - 9

धा दिंत ता धे ता किट तक धद गन
\+ 2 3 4 5 6

हनुमान ताल मात्रा - 22

धा ऽ कि ट त क धु म कि ट
\+ 2 3
त क धे ऽ ता ऽ त क धे ऽ ता
4 5 6 7 8

छोटी सवारी मात्रा - 15

धा ऽ ध दि ग न धु म
\+ 2
कि ट त क धि न ता
3 4

धुरपद की बड़ी सवारी मात्रा - 16

धा ऽ कि ट धु म कि ट
\+ 2
त कि ट त का ऽ कि ट
3 4 5

फिरोदस्त मात्रा - 7

धा किट तक धे ता धद गन
\+ 2 3 4 5

अष्टमंगल (अष्टमुखी) ताल मात्रा - 22

धा ऽ कि ट त क धु म कि ट त
\+ 2 3 4
क धे ऽ ता ऽ त क ध द ग न
5 6 7 8

खटताल मात्रा - 9

धा किट धे ता ऽ किट तक धद गन

\+ **2 3 4 5 6**

तालों में विद्वानों के मत से ताल के बोलों में कुछ अन्तर पाया जाता है किन्तु ताली में कोई अन्तर नहीं है ताली के विषय में सबका मत एक है।

मृदंग सागर ग्रन्थ में तालों का विस्तार रूप दो मतों में कहा है - प्रथम 'सारंगदेव' मत जिसमें 191 तालों के रूप चिन्ह हैं। दूसरे 'कलिंग' मत में 27 तालों के रूप है। दोनों मतों को मिलाकर 218 तालों का परिचय इस ग्रन्थ से प्राप्त होता है। उपयोग में आने वाली तालों का प्रचार 'सारंगदेव' मत की तालों का ही जाना जाता है।

कवित्त छन्द

गायौ गुनी ता दी थुं ना किट तक धदगन धा,
तेरह पाटाक्षर मृदंग के बखानिये।
परन समूह सौ नाद नद गूझ उठै,
थाप के अलाप जाप जुगत सौ बजानिये।।
शुक कवि आलिप्त अडडित गौमुखा वितेस्त,
भरत बखान्यौ चार बाज विध प्रमानिये।
देव वाद्य बार-बार वंदन अभिनंदन करूँ,
गुरुन बतायौ सोई छन्द माहि जानिये।।

(मृदंग सागर ग्रन्थकार के मत से तेरह पाटाक्षर का उल्लेख है)

❐❐❐